

अथ कथा प्रारंभः

लाला भगवानदास मेरठ में रहते थे। ढाई गाँव उनके पास थे। उन्होंने अपनी चतुराई से उनका काम अपने हाथ में कर रक्खा था। इसलिए उन गाँवों से उनको दो ढाई सौ रुपए महीना मिल रहता था। सदा अपना खर्च देख भाल कर किया करते थे - निकम्मे कामों में कभी एक कौड़ी खर्च न करते - अपनी आमदनी में से दस रुपए सैकड़ा सदा अलग निकाल रखते और उन रूपै को दान पुन्य में लगाते और कभी सौ पचास रूपै शफ़ा खाने के लिए भेज देते कभी सौ पचास रुपये मुहताज खाने को दे देते और वैसे भी जो कोई अपाहज माँगता नाँह न करते बहुत से हाकिमों से उनकी जान पहचान थी और सब हाकिम उनके चाल चलन से राज़ी थे - शहर में भी सब लोग उनको अच्छा समझते थे। उनके दो लड़के थे। बड़े का नाम जमुनादास और छोटे का नाम मथुरादास - जमुनादास ढीठ औहठीला और मथुरादास बहुत सीधा और आज्ञाकारी लड़का था - लाला भगवान दास ने उन दोनों को फारसी पढ़ाने बिठाया। मथुरादास तो परिश्रम करके थोड़े ही दिनों में होशियार हो गया और जमुनादास अपने आलस्य और नटखटी से अधकचरा ही रह गया। भगवानदास ने सोचा कि मथुरादास फारसी में होशियार हो ही गया है जो अब सरकारी मदरसे में आगे पढ़ने को भेज दिया जाय तो थोड़े ही दिनों में अंगरेज़ी का जमाना आएगा और जमुनादास ने फारसी में क्या पत्थर डाले जो अंगरेज़ी में डालेगा कहावत है कि पूत के पाँव पालने में ही पहचाने जाते हैं इसलिए मथुरादास को तो मदरसे भरती करवा दिया और जमुनादास से कहा कि जो अंगरेज़ी पढ़ना चाहो तो तुमको भी मदरसे में भरती करवा देंगे। जमुनादास ने कहा कि अंगरेज़ी पढ़कर क्या होगा? अंगरेज़ी नहीं पढ़े हैं क्या वह भूखे मरते हैं - उनको तो भी ऐसी-ऐसी नौकरी मिल जाती है कि अंगरेज़ी पढ़े हुआँ को नहीं मिलती। लाला जी ने कहा कि भाई यह तो सच है पर गुणवान होना बहुत अच्छा होता है। इससे धीरज बंधी रहती है। निदान लाला जी ने जमुनादास को बहुत समझाया पर उसने न माना। अंत को हार मानकर उसे मियाँजी के ही रहने दिया - इन दोनों लड़कों का ब्याह तो जैसे हिन्दुओं के यहाँ होता है छुटपन में हो ही चुका था। अब गौना हो गया एक वर्ष पीछे। जमुनादास और मथुरादास दोनों के एक एक लड़की जन्मी। लाला जी को तो पोते होने की आस लग रही थी पर तो भी संतोष से कहा कि जैसे लड़के और वैसी ही लड़कियाँ क्या लड़कियाँ कहीं और से आती हैं फिर हमारा मनोर्थ ईश्वर पूरा करेगा - हँसी, खुशी उन दोनों की छटी और दशूठन अपने ढंग से किया नेगियों के नाम पर लाल जी की घर वाली ने रेवड़ी मुनक्के दिये लिये जब यह लड़कियाँ दो ढाई वर्ष की हो गईं तब लाला जी के एक पोती और हुई। लड़का पैदा होने की आस जी की जी में ही रही। मन पर कुछ उदासी तो हुई पर जी में कहा कि यह परमात्मा की देन है। इसमें किसी का वश नहीं है। पर जमुनादास और मथुरादास की माँ बहुत उदास-सी हुई। उसने सब कार्य छटी और दशूठन किये तो सही पर जिस उमंग से पहिले किये थे उस उमंग से न किये। थोड़े दिन पीछे जमुनादास की माँ को तप आ गया। बहुत सी दौड़ धूप हुई। पर कुछ असर न हुआ और रोग ने घर कर लिया। जब उसने अपनी दोनों बहुओं को यों समझाया कि अब मेरा अंत समय आन पहुँचा है। मेरे पीछे दोनों मिलजुल कर प्यार प्रीत से रहना। कभी आपस में लड़ना झगड़ना नहीं। जिस घर में लड़ाई झगड़ा रहता है वह घर बिगड़ जाता है - संपत् जाती रहती है और दरिद्र आ जाता है। अब तक मैं यहाँ पर सँभाले रही अब तुम दोनों घर को सँभालना और जैसा मौका है वैसा ही वर्तना। यह सुनकर दोनों बहुएँ रोने लगीं। सास ने कहा रोती क्यों हो? हम तो पके पान हैं तुम सुख भोगो और बूढ़ सहागिन होओ और तुम्हारे जीते जागते लाल हों। इतने

में और बहुत सी औरतें अगड़ पड़ोस की देखने के लिए आ गईं। उनसे बातें हुईं। आधी रात को जी बहुत घबराया, नाड़ी छूट गई। घर आँगन गोबर से लिपवा कर खाट से नीचे उतारने के कुछ समय बाद जीव निकल गया सब रौने पीटने लगे। सवेरे ही नाई बिरादरी में घर घर पुकार आया कि लाला भगवानदास की बहू काल कर गई। यह सुनते ही ही बिरादरी की औरतें और मर्द आने लगे। जो आता उसके मुँह से यही निकलता कि भगवानदास की बहू बड़ी भागवान् थी। अपने पुरुष के जीते जी चल बसी। सब रीति भाँति जो सुहागन के लिए होती हैं की गई और लोथ को अर्थी पर रखकर राम-नाम सत्य है कहते हुए मरघट को ले गये। वहाँ बड़े लड़के ने आग दी फिर सब न्हाधोकर घर को चले आये - जब सब क्रिया कर्म हो चुका तब भगवानदास ने सोचा कि अब मैं बहुत बुढ़ा हुआ - मौत के दिन पास आते जाते हैं अब गाँव का काम काज मुझसे न हो सकेगा किसी लड़के को सौंप दूँगा। पहले तो यह जी में आया कि गाँव का काम धंधा जमुनादास को सौंप दूँ पर फिर सोचा कि जो जमुनादास गाँव के धंधे में फँस गया तो मेरे पीछे इसको नौकरी चाकरी मिलनी कठिन है। इससे तो अच्छा है कि मथुरादास को गाँव के काम में डालूँ क्योंकि मथुरादास अंगरेज़ी में होशियार हो गया है जब चाहेगा नौकरी कर लेगा और अब जमुनादास की नौकरी का अवसर भी आ गया है। मेरी सब हाकिमों से जान पहचान है जो इस्कलिये किसी भी हाकिम से नौकरी के लिए कहूँगा कोई न कोई इसको धंधे से लगा देगा फिर दोनों को बुला कर जी की बात कही - दोनों ने कहा लालाजी जो आप कहेंगे वह हमारे सिर माथे हमको आपके कहने में क्या नाँह है जो आप हमारे लिये अच्छा जानें सो करें और जो क्या हो कि दोनों आप ही गाँव और घर का काम काज अपने ही हाथ में रखें तो क्या बुराई है। भगवानदास ने कहा कि भाई तुम समझते नहीं हो। मैं तो बहुत निर्बल हो गया हूँ - बात बात को भूल जाता हूँ - आज की बात कल याद नहीं रहती - आँखों से धुंधला दिखाई देने लगा और रात को बहुत कम दिखाई देता है - हाथ पाँव भी धोका देने लगे हैं। दोदसडग चलता हूँ तो साँस चढ़ जाता है मैं यह चाहता हूँ कि मथुरादास तो मेरे सामने गाँव का काम सँभाल ले और तू जमुनादास कहीं पंधरह बीस रूपै का नौकर चाकर हो जाय और हम संसार के धंधों को छोड़कर कुछ ईश्वर का भजन करें। यहाँ का काम तो बहुत किया अब वहाँ का सोच लग रहा है। न जाने कब वहाँ से बुलावा आ जाय और यहाँ से जाना पड़े यह सुनकर दोनों भाइयों की छाती भर आई और आँखों से आँसू टपकने लगे। भगवानदास ने दोनों को छाती से लगा लिया और कहा रोओ मत संसार में सदा रहने को कोई नहीं आता है सब को एक न एक दिन वहीं जाना पड़ेगा - जा मथुरादास बसता उठा ला और हिसाब की बहियाँ भी उठा ला जब बसता और बहियाँ आ गईं भगवानदास ने सब हिसाब किताब गाँव का मथुरादास को समझा दिया और लेन देन का कागज़ भी उसको दे दिया और कहा कि गाँव की आसामियों से ऐसा बर्ताव रक्खो जिससे सब तुमसे प्रसन्न रहें - पटवारी को बहुत भेद न देना आगे तुम जानो तुम्हारा काम जाने जब इस काम से निश्चंत हो चुके जमुनादास से कहा कि जा कपड़ों की गठरी ले आ और तू भी कपड़े बदल ले। चल तुझको पहले साहिब कलक्टर के पास ले चलूँ। साइस से कह दे कि घोड़ा कस ले और कहारों से कहो कि पालकी निकालें - जब सवारियाँ तय्यार हो गईं लाला साहिब अपने लड़के जमुनादास को साथ लेकर साहिब कलक्टर के बँगले पर गये। खबर कराई। साहिब ने बुलवा लिया और कुरसी बैठने को दी और कहने लगे वेल भगवानदास तुम अच्छा है शहर की क्या खबर है लाला साहिब ने इधर उधर का सब हाल कहा और यह भी कहा कि यह मेरा लड़का है इसको नौकरी की चाट लगी है जो हुजूर की परवरिश से अध सेर आटे से लग जाय तो सदा हुजूर के गुण गाता रहेगा साहिब ने कहा कि यह कुछ अंगरेज़ी भी जानता है भगवानदास ने कहा कि हुजूर अंगरेज़ी

तो बिलकूल नहीं जानता पर फारसी में बहुत होशियार है और कुछ कचहरी का काम भी जानता है क्योंकि यह बहुत कर्के अपने ससुरे के साथ कचहरी जाया आया करता है और उनके साथ इसने काम भी बहुत किया है - हजूरकी मेहरबानी से सब काम कर सक्ता है साहिब ने उसकी परीक्षा ली और एक कागज़ जो मेज़ पर रक्खा था पढ़वाया और कई परवाने लिखवाये और हिसाब के सवाल भी पूछे जमुनादास ने कागज़ बहुत अच्छी तरह बेरोक पढ़ दिया और परवाने भी बहुत अच्छे लिख दिये पर साहिब के सवालों के उत्तर अच्छे न दिये - साहिब ने कहा कि आप के लड़के का लिखना पढ़ना बहुत ठीक है पर हिसाब कुछ कच्चा है पछतावा है कि इसको अंगरेज़ी नहीं आती, नहीं तो मैं अवध में मुनसरिम पेशकारी के लिये लिख देता आज ही एक चिट्ठी खैराबाद के डिप्टी कमिश्नर की आई है वह एक आदमी अंगरेज़ी पढ़ा हुआ चाहते हैं उस उहदे की तनख्वाह सौ रूपै है अंगरेज़ी आने के बिना वह नहीं मिल सकती क्योंकि वहाँ के बड़े हाकिम का हुक्म है कि चालीस रूपै से बढ़कर नौकरी अंगरेज़ी वाले के सिवा और किसी को न मिले और इसके सिवा उस नौकरी में कभी कभी अंगरेज़ी का भी काम पड़ता है भगवानदास ने कहा कि मेरा छोटा बेटा मथुरादास तो अंगरेज़ी में बहुत होशियार है - उसने सर्कारी मदरसे में अंगरेज़ी पढ़ी है पर मैंने उसको अपने गाँव का काम सौंप दिया है गाँव के काम काज से उसको कुछ भी समय नहीं बचता इसके सिवा मैं बूढ़ा भी हो गया हूँ मैं उसको अपने जीते जी अपने पास से अलग करना भी नहीं चाहता जब कोई अवसर जमुनादास के लिये हो हुजूर उसका ध्यान रक्खें - साहिब ने कहा नहीं नहीं अब भी हमारी कचहरी में अहलमद्दी पच्चीस रूपै महीने की खाली है जो आप चाहें तो हम जमुनादास को उसपर नौकर कर दें पर तुम उसको समझा दो कि अपना हिसाब किताब ठीक कर ले और जो हो सके तो थोड़ा बहुत अंगरेज़ी भी सीख ले जो आगे को काम आवे भगवानदास ने कहा कि हुजूर पच्चीस रूपै तो बहुत होते हैं मैं तो दस पंधरह रुपये की नौकरी इसके लिये बहुत जानता हूँ जो हुजूर का ध्यान और इसका काम अच्छा होगा तो फिर तनख्वाह बढ़ जायगी कहावत है कि पाँच से पचास होते हैं हिसाब किताब यह अपने छोटे भाई से सीख लेगा साहिब ने कहा कि अच्छा जमुनादास कल दस बजे कचहरी में आओ लाला भगवानदास और जमुनादास दोनों सलाम कर्के घर को आये दूसरे दिन जमुना दास दस बजे कचहरी में गया साहिब कलक्टर को झुक कर सलाम किया साहिब ने उस को पहिचान कर सरिश्तेदार को बुलाया और कहा कि अहलमद्दी का उहदह जो खाली है उसपर जमुनादास को हमने किया परवाना इसके नाम लिख दो और अहलमद्दी का काम इसको सौंप कर अच्छी तरह समझा दो और यह जो तुमसे पूछे बतलाते रहो जमुनादास और मथुरादास दोनों भाइयों में बड़ा प्यार रहता था साथ बैठकर खाना खाया करते थे और जो काम होता एक दूसरे से पूछ कर करता और इसी तरह इनकी बहुओं में अर्थात् दुरानी जिठानी में मिलाप था जब तक इन दोनों की सास जीती रही तब तक सब गृहस्थी का कामकाज वह आप करती रहती थी दोनों बहुओं को कुछ काम न था जो कुछ उनकी सास उनसे कहती कर देती थी पर इतना अंतर था कि बड़ी बहू तो नाक भौं सकोड़ कर के करती थी और कभी टाले वाले भी बना देती वा कोई मित्र भर सोती पर छोटी बहू सब काम हँसी खुसी करती न कभी मित्र भरती और न कभी नाक भौं सकोड़ती छोटी बहू सब तरह का सीना पिरोती और टोपियाँ और दुपट्टे काढ़ा करती और गोटा किनारी टाँकना और गोखरू मोड़ना जानती थी चारों लड़कियों के वास्ते सुत्थन सदा अपने हाथ से सीकर पहनाया करती और तरह तरह की टोपियाँ बनाकर इनको पहनाया करती - अपने और अपनी सास और जिठानी के सब कपड़े बैठी-बैठी सिया करती जब कोई काम न होता तो लड़कियों के लिये गुड़ियाँ बनाया करती निदान कभी खाली नहीं बैठती कुछ न कुछ काम सदा करती और यह सब काम उसको उसकी माँ ने

सिखाये थे और बड़ी बहू ऐसी फूहड़ थी कि गोटा टप्पा टांकना और कलाबत्तू काक बनाना तो बड़ी बात है सीधी खोप भरनी भी नहीं जानती थी सदा दुरानी और सास कहा करती कि हम तुमको यह सबका सब सिखा दें पर वह कुछ ध्यान न धरती कहने सुन्ने से पास आ जाती पर ध्यान नहीं देती निदान जैसी थी वैसी ही रही कभी कुछ न सीखा अब तक तो देन लेन का हिसाब और रूपै पैसे का खर्च यह सब काम लाला भगवानदास करते थे अब मथुरादास करने लगे और भगवानदास ने घर से इतना साही काम रक्खा कि साँझ सवेरे भोजन पा लेते और भजन किया करते थे और घर का सब काम धंधा दोनों देवरानी जिठानी के सिर पड़ा दोनों मिलकर कर लिया करतीं जिठानी से उल्हा काम न होता था जितना देवरानी करती थी पर देवरानी इस बात को कभी मुँह पर न लाती जो काम होता यह पहले आप करने लगती जो जिठानी ने हाथ लगाया तो लगाया और टाल गई तो उसका कुछ उलहना नहीं बहुत दिनों तक घर का काम धंधा यों ही टुलकता चला गया जब जमुनादास की माँ की वरसी, चौचंरसी हो गई तब एक दिन भगवानदास को तप और दस्त आने लगे भगवानदास जान गये कि अब बचना बहुत कठिन है इस्लिये उन्होंने गली के चार पाँच लोगों को जो भले मानस थे और दो तीन अपने नातेदारों को भी बुलवाकर उन सबके सामने अपने बेटों से यह कहा कि मैं खूब जानता हूँ कि तुम दोनों भाइयों में बहुत प्यार और स्नेह है और मुझको निश्चय है कि इससे अधिक प्यार मेरे पीछे भी सदा रक्खोगे मुझको भगवान ने सब कुछ दे रक्खा है और कोई दुख मुझको न था - पर मेरी एक तो यह उमंग जी की जी में ही रही कि एक पोता मेरे सामने हो जाता और दूसरी यह थी कि किसी पोती का विवाह अपने जीते जी कर लेता सो अच्छा भगवान की इच्छा में किसी का बस नहीं अब मुझको अपने बचने की आस नहीं रही इस्लिये मैं तुमको समझाता हूँ कि जो मेरे पीछे तुम दोनों में न बने तो जायदाद को यों बाँट लेना कि कमालपुर और जमालपुर दोनों गाँवों की आमदनी बराबर है मैं से कमालपुर गाँव तो मथुरादास तुम लेना और जमालपुर जमुनादास तुम अपने पास रखना और रहे दस बिघे सुंदरपुर के सो प्रथम तो उनकी सर्कारी जमा और बैठ दोनों कम हैं केवल सौ सवा सौ रुपये साल की बचत है वह जमुनादास तुम्हीं अपने पास रखना। मथुरादास को उनसे कुछ लेना नहीं और यह आधा गाँव जमुनादास तुमको इस्लिये दिया जाता है कि तुम बड़े हो अलग होने के पीछे मेरा कनागत और अपनी माँ का कनागत तुम्हीं किया करना और जो कोई नातेदार घर पर आवें उनकी आवभगत और खर्च भी तुम्हारे ही सिर है और रहा और सब माल घर का जो कुछ है आपस में बराबर बाँट लेना और कभी आपस में लड़ना झगड़ना नहीं और तुम दोनों भाई मेरा-सा चाल चलन रखना तब लाला भगवानदास अपने बेटों से जो कुछ कहना था, कह चुके तो और लोगों की तर्फ़ मुँह कर्के बोले कि मथुरादास जो बड़ा बुद्धिमान लड़का है घर और गाँव का काम काज ठीक तरह चला लेगा पर जमुनादास बड़ा उड़ाऊ है - जिस दिन से नौकर हुआ है तनख्वाह में से एक कौड़ी भी घर में नहीं देता। जाने अपनी तनख्वाह किस खर्च में उठा देता है और पचास साठ रुपये मुझसे ले चुका है जो ये ही अपना स्वभाव रक्खेगा और रुपये पैसे का कुछ ध्यान नहीं रक्खेगा तो छोटे भाई से अलग होने पर बिगड़ बैठेगा - ऐसी बातें करने से जमुनादास और मथुरादास तो धार-धार आँसूओं रोने लगे पर लोगों ने कहा लाला भगवानदास तुम कैसी बातें करते हो। अभी तुम्हारी ऐसी क्या अवस्था हो गई है तुमको रोग ही क्या है दवा दारू करो आराम हो जायेगा और रहा यह कि जो तुमने अपने बेटों के कान खोल दिये हैं इसका कुछ डर नहीं तुम्हारे जी की बात खुल गई इसके पीछे इधर तो सब लोग अपने अपने घर गये और उधर भगवानदास का जी बिगड़ा जीभ बंद हो गई - सीत आ गया साँस गिन्ने लगी। तब दोनों भाइयों ने देखा कि अब लालाजी घड़ी दो घड़ी के पाहुने रहे तब उनको हवेली से ले गये और

गौ और सीधे उनके हात से दान पुन्य करा दिये - गौ तो अपने पुरोहित विद्या राम को और सीधे गली के ब्राह्मणों को बाँट दिये और थोड़ा सा सोना लाला जी के मुँह में डाल दिया और गंगा जल पिलाने लगे। जब देखा कि नाड़ी छूट गई, आँखें बैठ गई और दाँत कीले पड़ गये धरती लिपवाकर और थोड़ी कुशा रख कर नीचे ले लिया नीचे लेने की देर थी कि लाला जी चल बसे दोनों बेटे हाय लाला जी हाय लाला जी कह कर रोने और पीटने लगे और दोनों बहुएँ भी यों ही पुकार-पुकार कर रोने और पीटने लगीं और माओं को रोता देख चारों लड़कियाँ भी रोने लगीं दोनों भाई थोड़ी देर के पीछे बाहर ड्योढ़ी पर आ बैठे और नाई को बुलवाकर कहा कि अब बिरादरी और नातेदारों के यहाँ खबर कर आ नाई घर घर पुकार आया कि लाला भगवानदास काल कर गये यह सुन कर जब बिरादरी के लोग आने लगे तो चार पाँच मनुष्य सौदा लेने गये और उधर जमुनादास और मथुरादास ने भद्र कराया - इतने में सौदा आ गया और झट पट अरथी को लाकर और उस्पर लोथ को रखकर राम नाम सत्य है कहते हुए मरघट को ले गये। जमुनादास ने दाह क्रिया की फिर सब लोग न्हाये धोए और जमुनादास के घर तक साथ गये और जमुनादास ने सब को राम राम करके विदा किया तेरह दिन में दोनों भाई सब क्रिया कर्म से निबट गये - एक दिन दोनों भाई आपस में गृहस्थ की बातचीत कर रहे थे। मथुरादास ने जमुनादास से कहा कि भाई साहिब गाँव का काम काज और रुपये का हिसाब किताब तो मैं करता हूँ परन्तु घर का प्रबंध भाभी को सौंपना चाहिये। जमुनादास ने कहा कि अरे भाई घर के प्रबंध की सुरत तेरी भाभी को कहाँ है घर को चलाने के लिए बड़ी सुरत चाहिये उसको तो धरने उठाने की भी सुरत नहीं है और न खर्च करना जानती है वह बड़ी उड़ाऊ है उसको आगा पीछा कुछ नहीं सूझता उसका पागलपन क्या तुम नहीं जानते हो मेरे विचार में घर का प्रबंध तुम्हारी बहू के हाथ रहना चाहिये बड़ी चतुर और सुरत वाली है - मथुरा दास ने कहा कि यह तो सच है पर भाभी बड़ी है और घर में इनके सिवा और कोई बूढ़ा नहीं है यह काम उन्हीं को शोभा देता है अब तो उन्हीं को सौंप देना चाहिये। फिर जब जैसा होगा देखा जायेगा। निदान घर का प्रबंध बड़ी बहू को सौंपा गया और बाहर का प्रबंध मथुरादास करते ही थे और जमुनादास अपनी नौकरी के काम में लगे - थोड़े दिन भी न बीते थे कि घर तित्तर बित्तर होने लगा - जो कुछ अनाज गाँव से आता व बाज़ार से लिया जाता उसका कुछ ठीक ठिकाना नहीं था अंधा धुंध उठने लगा घर के असबाब की यह दशा हुई कि घास फूस की तरह जहाँ पड़ा है वहाँ पड़ा है - रुपये पैसे के उठने का कुछ ठीक ठिकाना न रहा जो नौकर ने रुपये में बारह आने का सौदा ला दिया तो कुछ ध्यान नहीं और जो चौदह आने का ला दिया तो कुछ नहीं उनकी माके साम्हने पचास रुपये महीने में घर चलता था अब सौ रुपये में भी हाय हाय रहने लगी तब तो जमुनादास ने मथुरादास से कहा कि लो भाई मैं जो तुमसे कहता था कि तुम्हारी भाभी से घर नहीं चलने का सा वही हुआ अब अपनी बहू को सौंप दो नहीं तो पछताओगे - बेबस होकर प्रबंध बड़ी बहू से छुटा कर छोटी बहू को सौंपा फिर तो क्या था सब बातों की ठीक ठिकाना होता चला और नाज पात में बढ़ोत्तरी होने लगी सब चीज़ अपने ठिकाने से रहने लगीं पर यह यह बात बड़ी बहू को बुरी लगी और वह घर में लड़ाई रखने लगी और उसने जी में सोचा कि प्रथम तो मेरा मालिक पच्चीस रुपये का नौकर दूसरे आधा गाँव मेरे बाँटे में अधिक आया है जो मैं देवरानी से अलग रहूँगी तो उस्में मेरा बड़ा लाभ है इस्लिये अलग होने की बात खुला खुली तो न कहती पर सब बातों में तकरार करती और देवरानी के प्रबंध को बुरा बतलाया करती और उसे घड़ीभर भी न चैन लेने देती तब मथुरादास की बहू ने एक दिन बड़ा दुख मान कर मथुरादास से कहा कि मैं तुम्हारे घर चलाने से धाई जिठानी हर घड़ी मुँह फुलाए रहती हूँ और बात बात पर लड़ने लगती हूँ मैं चुपकी हो जाती हूँ मेरा स्वभाव लड़ने का नहीं है मैं

लड़ाई से कोसों भागती हूँ जो मैं बोलूँ तो सारे दिन सिर फूटा करें - मेरी जिठानी की मर्जी अलग होने की है तुम या तो अपनी भाभी को समझा दो कि तकरार न किया करें वा भाई से पूछ कर अलग हो जाओ नहीं तो घर का प्रबंध उन्हीं को सौंप दो। मैंने उससे हाथ धोए कहावत है कि जल जाय वह सोना जिस्से टूटे कान मथुरादास यह सुनकर चुपके हो गये और अपने जी में कहने लगे कि घर में तकरार रहनी अच्छी नहीं है इसमें बदनामी और लोग हँसाई है बाहर आकर जमुनादास से कहा कि भाई साहिब अब उचित यह है कि हम और तुम दोनों अलग अलग रहें क्योंकि भाभी की मर्जी अलग हो जाने की पाई जाती है जमुनादास ने कहा कि भाभी की मर्जी से क्या होता है मर्जी तो अलग होने की नहीं है मथुरादास ने कहा यह सच है पर फिर और तकरार बढ़ेगी और अंत को हार कर अलग होना पड़ेगा अभी तक तो कुछ बिगाड़ नहीं हुआ है आज अलग हो जाने से सदा को प्यार बना रहेगा - लड़कर अलग होना और अपनों में भेद आ जाना अच्छा नहीं लगता और इसमें कुछ डर भी नहीं है भाई भाई सदा से अलग होते आए हैं काम वही अच्छा है जिस्से साँप मरे न लाठी टूटे हाँ, माँ-बाप से अलग होने में बदनामी नहीं है वर्ना जग-हँसाई होती है। जमुनादास ने कहा कि अच्छा कल कुछ विचारेंगे - रात को जमुनादास ने अपनी बहू से कहा कि क्या तुम्हारी मर्जी मथुरादास से अलग रहने की है सच सच कहो - उसने कहा नहीं कुछ मेरी मर्जी तो अलग होने की नहीं है पर अलग होने में हमारा बड़ा लाभ है - तुमतो पच्चीस रुपये महीने के नौकर हो और लालाजी मरने के समय आधा गाँव तुमको बढ़ती दे गये हैं यह सब अलग होने पर बच रहा करेगा खर्च दोनों का बराबर है और अब तो जो कुछ तुम लाते हो और जो गाँव से लाभ होता है वह दोनों की बराबर पूँजी है इसके सिवा मथुरादास एक गाँव का काम करते हैं और सब हिसाब किताब अपने हाथ से लिखते हैं वह जो चाहें सो स्याह सुफेद करें पहले तो घर का प्रबंध मेरे हाथ था सो वह भी छोटी बहू को सौंप दिया। अब कुछ खबर नहीं कि क्या आता और क्या खर्च होता है और क्या बचता है मेरी पूछ घर में कुछ भी नहीं रही अब मैं किस खेत की मूली रही इस घर में न बड़े का बड़प्पन न छोटे का छोटप्पन सो मुझको यह बात अच्छी नहीं लगती जमुना दास ने कहा कि यह सब तुम्हारी मूर्खता है मथुरादास बड़ा सच्चा है कभी कौड़ी का भी छिपाव मुझसे नहीं रखता है। सब मुझको बतला देता है और जो बचता है उसको मेरे नाम से साहूकार की कोठी में जमा कर देता है - महीने महीने का हिसाब किताब मुझको दिखला देता है और उसकी बहू भी घर के काम काज में बड़ी चतुर है जब से उसने घर को संभाला है बहुत बचत रहती है एक कोड़ी भी बे ठिकाने नहीं उठने पाती सब चीज़ों में बर्कत दिखाई देती है सब चीज़ें ठीक ठिकाने रखी हैं घर दियूँ दियूँ कर रहा है तुम्हारे हाथ जब घर था किसी चीज़ का ठीक ठिकाना नहीं था और न कुछ खर्च का ठिकाना था - तुम्हारे हाथों से सौ-सौ रुपये एक महीने में उठ जाते थे अब पचास रुपये महीना उठता है - तुम्हारे समय में घर काट खाने को दौड़ता था एक बड़ा सोच तो मुझको यही है कि अलग होने पर घर तुमसे क्यों कर चलेगा तुम्हारे आलकसने सबको बिगाड़ रक्खा है - सब काम-काज नौकरों के भरोसे पर छोड़ दिया जाएगा जो वह चाहेंगे सो करेंगे तुमको इतनी समझ कहाँ है कि उनसे हिसाब किताब समझोगी वा उनकी चोरी पकड़ोगी और मुझको इतनी छूट कहाँ कि घर की देखभाल लिया करूँ नौकरी के सिवा गाँव का काम सिर पर आ पड़ेगा फिर मुझको या तो नौकरी छोड़नी पड़ेगी या कोई कारिंदह गाँव के काम के लिए रखना पड़ेगा और जो तुमने अधिक बचत के लिए कहा सो उसका हाल यह है कि प्रथम तो उसकी आमदनी बहुत थोड़ी है दूसरे उसकी आमदनी में से लाला जी की वरसी और चौवरसी को भी करना पड़ेगा और आए गये का खर्च भी मेरे ही सिर है जो मेरा कहा मानो तो अलग होने का नाम भी न लो इसमें तुम दुःख पाओगी और मैं विपत् में पड़ जाऊँगा अब तक हमको

और तुमको कुछ सोच नहीं है अपनी नींद सोते हैं और अपनी उठते हैं जमुनादास की बहू ने कहा कि साझे रहने में बड़ा निरादर है मैं यह निरादर नहीं सह सकती वरसी के दो महीने रह गये हैं सौ वरसी पीछे अलग होने में कुछ डर नहीं है और चौवरसी में इतना खर्च नहीं है कि आधे गाँव की आमदनी उसमें उठ जाय और आया गया सदा लगा रहता है कारिंदह दस रुपये महीने में रह सक्ता है जो मुझको कहना था मैंने कह दिया। साझे में तो लड़ाई होगी ही आगे तुम जानो तुम्हारा काम जाने मैं कह चुकी - जब जमुनादास ने बहू की मर्जी साथ रहने की नहीं देखी और लड़ाई भिड़ाई बढ़ती देखी तो दूसरे दिन अपने भाई से कहा कि अच्छा जैसी तुम्हारी मर्जी है वैसा ही करो पर लाला जी की बरसी के दो महीने और रह गये हैं बरसी पीछे अलग हो जायेंगे - निदान दो महीने के पीछे उन्होंने अपने लाला जी की बरसी की और फिर दोनों हँसी खुशी से अलग हो गये और गाँव की बाँट जैसे उनके बाप कर गये थे कर ली और दो हवेलियाँ जो उनके बाप ने पास पास बनवाई थीं एक-एक में रहने लगे और बैठक का मकान एक ही रक्खा और सब असबाब और रुपया पैसा जो उस समय था आधा आधा बाँट लिया - मथुरादास ने जमालपुर गाँव और सुंदरपुर के दस बीघे के सब कागज़ जमुनादास को सौंप दिये और सब हिसाब किताब समझा दिया अब दोनों ने एक ब्राह्मणी और एक एक कहारी भीतर के लिये और एक एक कहार बाहर के लिये नौकर रख लिया - जमुनादास को नौकरी के काम से इतना छुटकारा नहीं था कि गाँव का काम आप कर सक्ता इसलिये उसने अपने मामा के बेटे रामसरूप को दस रुपये महीने पर गाँव का कारिंदह कर दिया - अब जमुनादास की आमदनी तो बहुत अच्छी हो गई पर उनकी बहू का प्रबंध ऐसा बुरा और निकम्मा था कि किसी चीज़ में बर्कत नहीं होती थी उसको तो आलकस ने घर रक्खा था कोई काम अपने हाथ से न करती और नौकरों से भी काम लेना नहीं जानती थी - दिन भर पान चाबने और बातें बनाने के सिवा कुछ काम न था जो नौकरों के जी में आता सो करते जो चाहते सो खाते इसलिये जमुनादास का मथुरादास से बहुत खर्च उठता था कुछ भी नहीं बचता था और मथुरादास की बहू घर के काम में पैरी हुई थी उसके यहाँ फूटा बादाम भी बेजगह नहीं उठता था इसलिये घर में बर्कत और चमत्कार दिखायी देता था और एक ही गाँव में जमुनादास से अधिक बचत रहती थी - जमुनादास की लड़कियाँ जब देखो मैली कुचैली दिखाई देती थीं कहीं कपड़े फटे हैं कहीं बाल बिखरे हैं और मथुरादास की लड़कियाँ सदा उजली और सुथरी दिखाई देती थीं। मथुरादास की बहू का यह स्वभाव था कि जहाँ कपड़ा इधर उधर से फटा तुरंत सी दिया। जरा घर से छुटकारा पाया लड़कियों को पास बिठलाकर सीना पिरोना सिखलाने लगी - मिट्टी और राख से लड़कियों को कभी खेलने नहीं देती - गली की चंचल लड़कियों को कभी अपने घर में न आने देती और कभी कभी जो कोई चंचल लड़की अपनी माँ और दादी के साथ आ भी जाती तो कभी अपनी लड़कियों को उससे बोलने न देती अलग बिठला देती और कोई ऐसा काम दे देती कि उनको उससे छुटकारा न होता जो लड़कियाँ कोई काम बिगाड़तीं तो उनको बहुत घुड़कती वा कोठरी में बंद कर देती और जमुनादास की लड़कियाँ बड़ी खिलार थीं। गली की लड़कियाँ रोज़ इकट्ठी हो जातीं और दंगा किया करतीं - पच गिटड़े खेलतीं। उनकी माँ मारे लाड़ प्यार के उनसे कुछ न कहती ढीठ ऐसी थी कि जो मुँह से निकालतीं रो-धोकर करके छोड़तीं। उनकी माँ बेबस होकर जो वह कहती कर देती - मथुरादास की बड़ी लड़की का नाम गंगा था जिसकी अवस्था नौ बरस की थी और छोटी लड़की का नाम किशोरी था और वह छै बरस की थी और जमुनादास की बड़ी लड़की का नाम राधा था जिसकी अवस्था आठ बरस की थी और छोटी लड़की का नाम पार्वती था और वह पाँच बरस की थी।।

एक दिन मथुरादास ने जमुनादास से कहा कि अब लड़कियाँ पढ़ने योग्य हो गई हैं। उनके पढ़ाने लिखाने का कुछ विचार नहीं करते उनका पढ़ाना लिखाना बहुत अच्छा है तीनों की अवस्था तो पढ़ने लिखने जोग है और पार्वती भी अगले बरस से पढ़ने लगेगी - जमुनादास ने कहा कि मैलड़कियों को पढ़वाना नहीं चाहता -

- मथुरादास - तुम क्यों नहीं लड़कियों को पढ़वाना चाहते।।
- जमुनादास - जो लड़को को पढ़ाओ तो एक बात है वह कचहरी दरबार में जाकर नौकरी करेंगे। खत पत्र और अर्ज़ियाँ लिखना सीखेंगे और लड़कियाँ तो बड़ी होकर घर में बैठेंगी। वह लिख पढ़कर कहाँ नौकरी करने जाएँगी।।
- मथुरादास - आपका यह कहना कच्चा है। पढ़ना-लिखना नौकरी के लिए नहीं है। मनुष्य बनाने के लिए है - कुपढ़ मनुष्य पशु के समान होता है। वह कोई काम गृहस्थ का जेसा चाहिये अच्छी तरह नहीं कर सकता और न हर बात को समझ सकता है फिर लड़कियों को पशु रखना कौन-सा धर्म है।।
- जमुनादास - यह सब ठीक पर लड़कियों के पढ़ाने लिखाने से बड़ी बड़ी बुराइयाँ निकलेंगी।
- मथुरादास - उन बुराइयों का नाम तो लीजिये।
- जमुनादास - जो लड़कियाँ पढ़ लिख जाएँगी और बड़ी होकर अपने सासरे जाएँगी तो वहाँ जाकर किसी के बस में नहीं रहेंगी - निडर और निर्लज्ज होकर जिस्को चाहेंगी चोरी छिपे चिट्ठी पत्री लिख भेजा करेंगी।
- मथुरादास - यह आपका विचार ठीक नहीं है। क्योंकि पढ़ने लिखने से मनुष्य सज्जन होता है - जी की बुराइयाँ सब निकल जाती हैं - अच्छे-अच्छे विचार जी में आते हैं बुरे और निकम्मे विचार दूर हो जाते हैं। फिर क्यों कर लड़कियाँ लिख पढ़कर अपने सासरेवालों के बस में नहीं रहेंगी निश्चय वह तन मन से अपने पुरुष की टहल करेंगी और आज्ञा में रहेंगी और उनको सब रीति से प्रसन्न और मगन रखेंगी और जो शिक्षा उनके पुरुष बालकों के पालन और चाल चलन के सँवारने में करेंगी उनको जी से सुनेंगी और पल्ले गाँठ बाँधेंगी और जो उनका पुरुष कोई अनुचित बात भी कहेगा तो उसको उसकी बुराई समझा सकेंगी। अब तो स्त्रियाँ डर भय से अधीन हैं और पढ़ लिख कर जी से अधीन रहेंगी और जब कुपढ़ स्त्रियाँ बिगड़ती हैं तो फिर उनका सँभालना और सीधे रस्ते पर डालना बहुत कठिन है क्योंकि वह भले और बुरे को नहीं चीनती और घर को क्षण भर में बिगाड़ देती हैं और कुल को बट्टा लगाती हैं और जब पढ़ लिख जायेंगी तो अपनी बुराई भलाई आप समझने लगेगी - लाज को अच्छी तरह समझेंगी और जो आप यह कहते हैं कि जिस्को चाहेंगी चिट्ठी पत्री लिख भेजेंगी सो जो बाप भाई और जेठ देवर और नातेदारों को अपनी कुशल क्षेम और घर के समाचार लिख भेजें तो उस्में कुछ बुरी बात नहीं है - हाँ बुराई और खुटाई इसमें है जब औरों को चिट्ठी पत्री लिखें सो उनको क्या प्रयोजन है कि जो औरों को चिट्ठी पत्री लिखेंगी वह पढ़ लिख कर बहुत समझदार हो जाएँगी - उनको ऐसी पुस्तकें नहीं पढ़ाई जाएँगी जिस्में बुरी-बुरी कहानियाँ हों

जो मन को बिगाड़ें, उनके लिए तो सरकार ने अच्छी अच्छी पुस्तकें बनवाई हैं इसके सिवा लड़कियों के पढ़ाने लिखाने से यह कितना बड़ा लाभ है कि जब वह बड़ी होगी और उनके लड़के बाले होंगे तो अपने बालकों को समझ आते ही अच्छी बातें सिखाया करेंगी और उनको पढ़ाया लिखाया करेंगी और यह बात भी है कि पढ़ी हुई स्त्री की संतान भी जीवटवाली और बुद्धिमान् होती है। देखो अंगरेजों के यहाँ सब पढ़ते हैं। इसीलिए सब बुद्धिमान और शूर वीर होते हैं।।

जमुनादास - सरकार को पुस्तकों के बनवाने से क्या प्रयोजन है और क्यों अपना रुपया यों ही उठाती है।।

मथुरादास - सरकार अंगरेज़ी यह नहीं चाहती कि जो रुपया धनी के कर और टैक्स से आवे उससे ख़जानह भरे - वह तुमसे रुपया लेती है और तुम्हारी ही भलाई में उठा देती है। देखो जैसे सरकार ने सब शहरों और कस्बों में शफ़ाख़ाने बनवाए हैं जिनसे सैकड़ों हज़ारों कंगाल रोगी लाभ उठाते हैं और मुसाफ़िरों के लिये सड़कें और पुल बना दिये हैं - पड़ाव, सराय बनवाई हैं ऐसे ही सरकार की यह इच्छा है कि लड़कियाँ भी मनुष्य के चोले में आ जाएँ पशु न रहें विद्या और गुण सीखकर मनुष्य बन जायँ और समझदारी की बातें किया करें - जड़ता पुरुष और स्त्री दोनों से जाती रहे जैसे अंगरेज़ों की स्त्रियाँ पढ़ी लिखी हैं और घर बाहर के मामलों में अपने पुरुषों की सहायता करती हैं यहाँ की भी लड़कियाँ वैसी ही हो जावें और झगड़ा और लड़ाई न करें - हिन्दुस्तान में सब तरह का हाथ का काम होने लगे और इसकी बड़ी वृद्धि हो यह सब सरकार की नीयत का फल है।।

जमुनादास - सरकार ने लड़कियों के पढ़ाने के लिए अच्छी अच्छी पुस्तकें बनवाई हैं, पर जब लड़कियाँ पढ़ लिख जायँगी तो क्या वह आप बुरी-बुरी कहानियों की पुस्तकें छिपा मँगवा नहीं सकती हैं और चोरी छिपे उनको पढ़ नहीं सकती। हर वक्त उनकी चौकसी कौन करता रहेगा - इस तरह मैं उनका मन बिगाड़ेगा

मथुरादास - भाई साहिब जब स्त्रियों को भले बुरे और सच झूठ की पहचान हो जायगी तो आप उनका जी बुरी बातों से कोसों दूर भागेगा वह आप बुरी पुस्तकों को देख और उनको बुरा समझ कर फेंक देंगी कभी उनको बर्ताव में न लावेंगी और जो हज़ार में एक आदि का मन बिगाड़ भी गया तो उससे यह न होना चाहिए कि एक के डर से औरों को भी विद्या और गुण न सिखाये जावें अनपढ़ स्त्रियों का बुरा चाल चलन नहीं होता है धन इकट्ठा करने में सदा डर रहता है कि चोर न ले जावे वा आग में जल जावे पर इस डर से कह नहीं सकते कि धन इकट्ठा करना छोड़ दें - हाँ यह चाहिये कि बुरी पुस्तकों से जहाँ तक हो सके बचाना चाहिए जैसे खोटे प्रसंग का फल खोटा होता है वैसे ही बुरी पुस्तकें भी कुछ न कुछ बिगाड़ करती हैं - बुरी पुस्तकों का बर्ताव खो देना हमारे ही वस में है।।

- जमुनादास - यह तुमने बड़े अचंभे की बात कही यह मेरी समझ में नहीं आई कि बुरी पुस्तकों का बर्ताव खो देना हमारे हाथ में क्यों कर है।।
- मथुरादास - जो सब लोग आपस में एका कर लें और बुरी पुस्तकें लेनी छोड़ दें तो फिर उनको कौन छपवायगा। इस दशा में थोड़े दिनों में उनका बर्ताव जाता रहेगा और सरकार की भी यही इच्छा है - सरकार ने भी बहुत से उपाय किये हैं निश्चय है अब बुरी पुस्तकों का छपवाना दूर हो जायगा और पहले से तो अब भी कम छपती हैं।।
- जमुनादास - जो तुम यह कहते हो कि स्त्रियाँ पढ़ लिख कर घर को सँभालेंगी और रुपये का हिसाब किताब रखेंगी सो अब क्या वह अपना काम नहीं निकाल लेती है और घर का प्रबंध नहीं कर लेती हैं।।
- मथुरादास - अब क्या खाक काम निकालती हैं सौ तक गिन्ती तो उनको आती भी नहीं जो सौ रुपये गिनेंगी तो बीस-बीस करके पाँच जगह रखेंगी - जितने कपड़े धोने को देंगी उतनी ही लकीरें भीत पर खेंच देंगी सोचिये तो कहीं यों हिसाब किताब रखा जाता है और घर का प्रबंध जैसा वह करती हैं वह सब आप और मैं दोनों जानते हैं कल ही की बात है कि आप भाभी का झींकना सुन रहे थे और कहते थे कि इतनी आमदनी होती है और न जाने कहाँ चली जाती है ऐसी बेपरवाई से खर्च उठाता है कि कुछ बचत नहीं रहती और न कुछ वर्कत होती है - घर का असबाब घास पात की तरह पड़ा रहता है - सेरों रोटी पूरी कौवे कुत्ते और मनो नाज घूँस, चूहे खा जाते हैं - कपड़ा इतना आता है लेकिन परिमाण नहीं जाने कहाँ छिप जाता है फिर भाई साहब जवाब तो दीजिये कि भाभी जो कुछ भी लिखी पढ़ी होती यह हाल क्यों होता।।
- जमुनादास - लड़कियों के पढ़ाने लिखाने की चाल तो नहीं है जो हम लड़कियों को पढ़वायँ, लिखवायँ तो लोग नाम धरेंगे और ताने देंगे। लोगों से नीची आँखें करनी पड़ेंगी।।
- मथुरादास - लड़कियों को पढ़ाने लिखाने की चाल क्यों नहीं पहले समय में सब लड़कियाँ सीखती थीं - राजा भोज के समय तक तो लड़कियों के पढ़ाने लिखाने का बहुत चर्चा था - भोज-प्रबंध देखने से यह बात जान लोगे - जो सब मशहूर पढ़ी लिखी स्त्रियों के नाम बताऊँ तो बड़ा समय चाहिए पर दस ग्यारह स्त्रियों का आप को बताता हूँ।।
1. रुक्मणी यह कुंदरपुरके राजा की लड़की थी। उन्होंने अपनी हाथ से एक चिट्ठी कृष्ण चंद्र को जो उनके पुरुष थे लिखी, वह सब भागवत् में लिखा है।।
 2. मंडन मिश्र की स्त्री यह ऐसी पढ़ी लिखी थी कि एक बार उसने शास्त्रार्थ में शंकराचार्य को परास्त कर दिया।।
 3. रेणुका - एक पुस्तक में लिखा है कि यह स्त्री नीच जाति की थी वह पढ़ लिख कर ऐसी पंडित हो गई कि पंडित लोग उसकी पढ़ाई की

प्रशंसा करते थे और जो बात उनके समझ में न आती उससे पूछ आते थे।।

4. मीराबाई - यह स्त्री कविता अच्छी जानती थी और उसने कवित्त बनाए अब उनको बहुत गवय्ये गाते हैं।
5. एक स्त्री ऐसी हुयी है जिसके लिखे विष्णुपद मंदिरों और ठाकुरद्वारों में गाए जाते हैं।।
6. एक स्त्री राजा भोज की राणी थी और उसने राजा के यहाँ सैकड़ों पाठशाला लड़कियों की बिठाई और आप उन पाठशालाओं में जाकर परीक्षा लिया करती थी।।
7. विद्याधारी यह बड़े भारी पंडित की स्त्री थी और उज्जैन की बड़ी पाठशाला में जो लीलावतीने नियत की थी या करती थी।।
8. द्रौपदी - यह स्त्री वेद और पुरान में निपुण थी महाभारत में लिखा है कि जब द्रौपदी के लड़कों को सुकर्म्म नाम एक मनुष्य ने मार डाला तब पांडवों ने अपने लड़कों का बदला लेना चाहा। उस समय द्रौपदी ने सोचा और पांडवों को यों समझाया कि देखो यह संसार स्वप्न की सी माया है और मरना जीना कुछ नहीं है क्योंकि आत्मा कभी नहीं मरती है परिणाम में वह एक दिन इस जगत् को अवश्य छोड़ जाते फिर बदला लेने से क्या लाभ
9. तारा - यह बालि की स्त्री थी। उसका वर्णन तुलसी कृत रामायण में है। जब बालि को राम चंद्र जी ने मारा तब तारा अपने पति के शोक में रोने पीटने लगी। जब राम चंद्र जी ने उसको उपदेश किया और ज्ञान की बातें उसको समझाई तो तुरंत समझ गई जो लिखी पढ़ी न होती तो ऐसी गूढ़ बातें झटपट क्यों कर समझ जाती?
10. मंदोदरी - यह राजा रावण की स्त्री थी। उसको पढ़ना लिखना अच्छा आता था उसने वेद और शास्त्र की बातें समझा कर रावण को लड़ाई से बहुत रोका था।।
11. मायावती - यह स्त्री बड़ी पंडित थी उसने अपने पति प्रद्युम्न को विद्या पढ़ाई - एक समय पार्वती जी ने महादेव जी को प्रसन्न पाकर उनसे पूछा कि हे महाराज स्त्रियों से प्रतिदिन बहुत से पाप होते हैं उनके दूर होने का कोई सहज सा उपाय बतलाइये कि जिस्से उनके पाप निवृत्त हो जाया करें और दोनों लोक में जश पायँ - महादेव जी ने कहा कि जो स्त्रियाँ निर्दोष होना चाहें तो पढ़ा लिखा करें क्योंकि पढ़ने से ज्ञान होता है और ज्ञान से सब पाप दूर हो जाते हैं - मानव धर्म शास्त्र के नवें अध्याय में लिखा है कि स्त्रियों को अवश्य लिखना पढ़ना चाहिये क्योंकि रुपये का धरना, उठाना और दान, पुन्य और भोजन बनाना और घर के असबाब को देखना भालना और उसको

वर्तना यह सब काम स्त्रियों के हैं - इसके सिवा अब भी सैकड़ों स्त्रियाँ पढ़ी लिखी काशी, मथुरा और और शहरों में पाई जाती हैं - और उन पाठशालाओं को छोड़ कर जो रईसों और अमीरों ने लड़कियों के पढ़ाने लिखाने के लिए अपने अपने घरों और गली कूचों में विठलाई हैं कई सौ पाठशाला सरकार की तरफ से पश्चिमोत्तर देश में हैं और उनमें कई हजार लड़कियाँ पढ़ती हैं और पंजाब और अवध और मध्याहद - और बंगालह और बंबई और मदरास में भी सैकड़ों लड़कियों की पाठशालाएँ सरकार और प्रजा की तरफ से हैं जिनमें हजारों लड़कियाँ पढ़ती हैं फिर लड़कियों के पढ़ाने लिखाने की चर्चा हुई वा नहीं और इसी शहर में लड़कियों की कई पाठशाला हैं - फिर भाई साहिब आपको लड़कियों के पढ़ाने-लिखाने में क्या संदेह रह गया - मेरी समझ में तो लड़कियों के लड़कपन का समय यों ही गँवा देना कुछ बुद्धिमानी की बात नहीं है।।

जमुनादास - मैंने माना कि लड़कियों का पढ़ना लिखना बहुत अच्छा है और पढ़ाने की चर्चा हो गई है पर जो मैं लड़कियों को पढ़ाऊँ लिखाऊँ तो मुझको क्या लाभ होगा - लड़कियाँ पराए घर का धन हैं विवाह हुए पीछे अपने अपने घरों को चली जायँगी। फिर मैं अपना रुपया उनके पढ़ाने लिखाने में क्यों खर्च करूँ और झगड़े में पड़ूँ।।

मथुरादास - यह आपकी इच्छा रही मैं आपसे और कुछ नहीं कह सकता मैं अपनी तो लड़कियों को पढ़ाऊँ लिखाऊँगा और अपने जी में सोचा कि भाई साहिब को लड़कियों से कुछ स्नेह नहीं है फिर उनसे दबाकर कहना निरर्थक है।।

निदान मथुरादास ने एक ब्राह्मणी को जिसका नाम ज्ञानो था और पंधरवें बीसवें दिन उनके यहाँ आया करती थी बुलवाया - उस ब्राह्मणी की अवस्था चालीस वर्ष की थी उसने किसी सरकारी पाठशाला में तो नहीं पढ़ाया पर नागरी अच्छी तरह जानती थी और कुछ एक संस्कृत का भी बोध था। उसने अपने पिता से, जो बड़ा पंडित और गुणी था, नागरी और संस्कृत पढ़ी थी और कई पुस्तकें पाठ पूजन की जैसे विष्णु सहस्र नामं, गीता और रामायण देखी थीं और अपने भाई से जो तहसीली मदरसे में पढ़ता था बहुत सी पुस्तकें सरिश्ते तालीम की भी पढ़ती थी और हिसाब किताब भी सीख लिया था, क्योंकि छुटपन से विधवा हो गयी थी इसलिए कुछ घर का बोझ भार तो उस्पर पड़ा ही न था केवल पढ़ने लिखने और पूजा पाठ में उसका ध्यान रहा था उसका यह नियम था जो पढ़ा वह समझ कर पढ़ा इसलिये यह स्त्री बहुत बुद्धिमान् और चतुर हो गई थी - सासरे वाले उसकी कुछ भी सुध नहीं रखते थे जब तक बाप जीता रहा खाने पीने की सुध लेता रहा। उसके बाप के मरने के पीछे उसका भाई समर्थ था पर उसकी भावज ने उसको अलग कर दिया था। इसलिये वह अपने पेट भरने के लिए पढ़ाने लिखाने लगी और यद्यपि डिप्टी इनिस्पेक्टर सरकारी नौकरी दस-दस बारह-बारह रुपये महीने की उसको देते रहे पर उसने सरकारी नौकरी इस ध्यान से नहीं की कि प्रथम तो उसका मन ईश्वर भजन में लगा हुआ था और सरकार की नौकरी बंधन की है - दूसरे वह घर से बाहर अकेला रहना नहीं चाहती थी भलेमानसों की लड़कियों को पढ़ाया करती

थी और उसीसे उसका निर्वाह होता था - और भले घर की थी और शहर के भले मानसों के यहाँ जाया आया करती थी इसलिये यह ज्ञानो बड़ी पंडितानी प्रसिद्ध हो गई थी और जैसी स्त्री लड़कियों के पढ़ाने लिखाने को चाहिये वैसी ही थी - सीधी सादी, सुशील और चाल चलन की ऐसी अच्छी थी कि उसके पास लड़कियाँ और स्त्रियाँ बैठकर अच्छे चलन की हो जावें - रईसों और अमीरों और बड़े बड़े घरों में उसके आने से स्त्रियाँ बड़ी मग्न होती थीं। हाँ बचपन से विधवा हो गई थी पर अपनी विद्या और शील से अपनी अवस्था सुख से बिताती थी और कभी खोटे विचार उसके चित्त में न आते थे।।

मथुरादास ने ज्ञानो से कहा कि तुम सवेरे से नौ बजे तक और तीन बजे से छै बजे तक किशोरी को पढ़ा जाया करो मैं तुमको छै रुपये महीना दिया करूँगा और जो एक बजे से तीन बजे तक दो घंटे लड़कियों को सीना पिरोना भी सिखाया करो तो तुम को दो रुपये और मिलेंगे और जो दो चार लड़कियाँ गली मुहल्ले के भले मानसों की लिखना पढ़ना सीखने आया करेंगी उनसे भी तुमको कुछ न कुछ मिल जाया करेगा - ज्ञानो ने कहा लाला जी सीना पिराना तो मुझको आप नहीं आता मैं अपने कपड़े तो तुम लोगों की बहू बेटियों से सिलवाया करती हूँ मुझको तो बचपन से पढ़ने और पढ़ाने की रुचि रही इसलिए मैंने सीना पिरोना नहीं सीखा मथुरादास की बहू बोली कि सीने पिरोने के लिए तुम ज्ञानो से क्यों कहते हो - सीना पिरोना तो मैं बहुतेरा सिखा लूँगी मुझको कौन-सा सीना पिरोना नहीं आता है नित नये कपड़े जो घर में बन्ते हैं कौन सीता है जो मेरी लड़कियों को ही सीना पिरोना न आयगा तो और किस्को आयगा पंडितानी जी रामरक्खे मेरी गंगा तो अब भी थोड़ा बहुत सी लेती है देखो यह गुड़ियाँ जो सामने आले में रक्खी हैं इसीने अपने हाथ से बनाई हैं - पंडितानी जी ज़रा अपने लाला जी से यह तो पूछो कि गंगा और किशोरी के लिये कै पैसे की गुड़ियाँ बाज़ार से मोल लाये हैं - पिटारी भर जो गुड़ियाँ गंगा के पास हैं उनमें से इसी ने बहुत सी बनाई हैं और दो चार मैंने भी बना दी हैं - हाँ किशोरी को अभी कुछ समझ नहीं है इस्को अभी कोई कपड़ा सीना नहीं आता है - हाँ, टोपियों पर बेल बूटे तो वह भी बुरे भले काढ़ लेती है-

तुम्हारे लाला जी की भतीजी राधा, किशोरी से दो वर्ष बड़ी है। उसको तो सुई पकड़नी भी नहीं आती और बिचारी पार्वती तो किशोरी से भी छोटी है। उसकी कुछ बात नहीं। वह अभी बालक है। तब ज्ञानो ने मथुरादास की बहू से कहा कि अरी बहू यह क्या बात है कि किशोरी तो कशीदे काढ़ती है और गंगा सीने पिरोने में चतुर हो जाती है और राधा जो गंगा की दाई की है उसे सुई पकड़नी भी नहीं आती और एक ही घर की तीनों लड़कियाँ मथुरादास की बहू बोली पंडितानी जी तुम तो हमारी माँ के जीते जी कभी कभी आया करती थीं तुम हमारी जिठानी के स्वभाव को जानती हो कि उन्हें बड़ा आलकस है उन्हें आप तो सीना पिरोना आता ही नहीं है उनके कपड़े तो मैं सी दिया करती थी फिर लड़कियों को कौन सिखावे - उन्होंने अपनी लड़कियों को प्यार में बिगाड़ दिया है - सारे दिन उनके घर में गली की लड़कियाँ खेला करती हैं - लड़कियाँ ऐसी हठीली हो गई हैं जो मुँह से निकालती हैं वह करके छोड़ती हैं - जब तक मैं साझे रही तब तक लड़कियाँ कुछ मेरा डर मानती थीं सो अब वह भी नहीं रहा। तब भी जब मैं उनको घुरकती थी तो जिठानी मुँह बना लेती थी और जी ही जी में घुटती और बुरा मानती थी। तब से मैंने भी कहना सुत्रा छोड़ दिया क्यों पंडितानी जी मैं तो भले के लिये कहती थी कोई भला करते बुरा माने तो मुझे किसीके कहने सुत्रे से क्या प्रयोजन है - यह जो गंगा को कुछ सीना पिरोना आ गया है, सो तो जानती नहीं कि क्योंकर आया है - एक दिन इस्के ताऊ बाजार से दो गुड़ियाँ मोल लाये थे उनमें से एक तो गंगा ने ले ली औरी एक राधा ने फिर गंगा ने मुझसे कहा कि मुझको बाजार से और गुड़ियाँ मंगा दे मैंने कहा बाज़ार से लेकर क्यों दाम बिगाड़े आओ मैं तुम दोनों को दो-दो तीन-तीन गुड़ियाँ उनसे

अच्छी बना दूँ और जो तुम थोड़ा-सा सीना पिराना सीख लो तो तुम अपने आप गुड़ियाँ बना लिया करोगी सो मैंने उसको कई गुड़ियाँ बना दीं और गंगा ने उसी चाव में सीना पिराना सीखा और फिर मैंने उसको गुड़ियाँ बनाना भी सिखा दिया और अब यही धुन किशोरी को है दिन भर बहन से गुड़ियाँ बनाना सीखा करती है और राधा ने इधर कुछ भी ध्यान नहीं दिया जब हठ करती है उसके मा बाप बाज़ार से गुड़ियाँ मोल मंगवा देते हैं आज तक उनके यहाँ राधा के लिये कम से कम पाँच छै रुपये की गुड़ियाँ आ गई होंगी - ज्ञानो बोली ठीक बात है माँ का स्वभाव होता है वैसा ही स्वभाव उसके लड़के बालों का हो जाता है लड़कों को बड़े होने पर उनके बाप सँभाल लेते हैं पर लड़कियाँ नहीं संभलती - फिर ज्ञानो ने पूछा कि गंगा को तुमने रोटी बनानी भी सिखाई मथुरादास की बहू ने कहा ओह रोटी सीखना कोई बड़ी बात नहीं बड़े होने पर दस पाँच दिन में रोटी करनी कुछ सीख जावेंगी हाँ तर्कारियों का बनाना कुछ कठिन है सो हमारी मिश्रानी रोटी भी बहुत अच्छी करती है और तर्कारियाँ भी मिश्रानी बहुत सी खुद बनाती है यह लड़कियाँ उनके पास बैठी रहती हैं और मिश्रानी के ढंग रोज़ देखा करती है और मिश्रानी बतलाती भी रहती है सो गंगा तर्कारियाँ तो अब बनाने लगी है और उसको कुछ कुछ अटकल नून मंशाले की भी आ गई है पंडितानी जी सबसे कठिन काम तो पढ़ना लिखना है सो जो तुम्हारी कृपा से उन लड़कियों को आ जाय तो फिर सब काम अच्छा आ जायगा, क्योंकि पढ़ने से बुद्धि बढ़ जाती है और सब काम बुद्धि से होते हैं और मैं तो बहुत पछताती हूँ कि मेरे माँ बाप ने मुझे क्यों नहीं पढ़ाया लिखाया। मेरा जी तो अब भी पढ़ने लिखने को चाहता है। पर एक तो इस उजड़े घर के काम से छुटकारा नहीं होता दूसरे अब उमर भी पढ़ने लिखने की नहीं रही ज्ञानो ने कहा हाँ बहू सच है और न पढ़ने लिखने पर पछताना ठीक है पर यह कहना कि घर के काम धंधे से छुटकारा नहीं झूठ है अरी बहू दिन और रात की चौंसठ घड़ियाँ होती हैं जो तू पढ़ना चाहे तो दो चार घड़ी किसी तरह इस काम के लिये बचा सकती है और ऊपर के कामों के लिये टहलनी नौकर हैं और फिर और काज घर का सीने पिराने के सिवा क्या रह गया जिन स्त्रियों का मन पढ़ने लिखने में है वह छुटकारे का बहाना नहीं करतीं - देख तेरे ही मुहल्ले में लाला श्यामलाल नक्रलनवीस की बहू का पढ़ने लिखने में ऐसा मन है कि जो मैं उसको किसी न किसी समय पढ़ा आती हूँ वह उसको अच्छी तरह याद कर रखती है - उस बिचारी को दोनों वक्त की रोटी भी आप करनी पड़ती है और चौका बर्तन भी आप ही करती है और जितना धंधा गृहस्थ का है सब उसीके सिर पर है तू तो बहुत सा समय पढ़ने लिखने के लिए निकाल सकती है अब वह इतना पढ़ गई है कि अपने घर का हिसाब किताब लिख लेती है और सीधी सीधी पोथी पुस्तक अपने आप बाँच लेती है और उनका आशय समझ लेती है मुझसे रामायण पढ़ा करती है जो मनुष्य दो-दो चार-चार अक्षर भी रोज़ सीखे तो थोड़े दिनों में बहुत कुछ सीख जावे देख बहू जब तू रोटी के लिये आटा निकालती है तो एक चुटकी आटा एक घड़े में डालती जाती है महीने भर में उसी एक चुटकी आटे से घड़ा भर जाता है। यही दशा पढ़ने लिखने की समझ ले थोड़ा-थोड़ा करके बहुत हो जाता है - मैंने एक पोथी में पढ़ा है कि एक मेम थी उसको घर के हिसाब किताब और चिट्ठी लिखने से दिन भर अवकाश नहीं मिलता था और वह यह चाहती थी कि मैं कोई अच्छी पुस्तक बनाऊँ तो उसने यह नियम किया कि जब हाज़िरी तय्यार हो तब हाज़िरी खाने जाया करे और उन्हीं बारह तेरह पलों में उस पुस्तक को लिखा करे यों ही बारह-तेरह पल देर कर्के करते करते कई वर्ष में उन्होंने एक बहुत बड़ी पुस्तक बना ली और फिर वह कई हजार छपवाई और सब हाथों हाथ बिक गई मथुरादास की बहू बोली - हाँ पंडितानी जी तुम सच कहती हो बूँद बूँद कर ताल भर जाता है जो थोड़ा थोड़ा भी पढ़ूँगी तो कुछ न कुछ आ ही जायगा ज्ञानो ने कहा देखो लड़कियों को तो मैं पढ़ाने

आया ही करूंगी जो तेरा जी चाहे तो कुछ छुटकारे के समय तू भी थोड़ा-थोड़ा पढ़ लिया कीजियो कुछ न हो तो इतना तो आ जायगा कि अपने घर का हिसाब किताब लिख लिया करेगी और जो तुम्हारी दीवारों और किवाड़ों पर पिसन हारी और तंबोलन और धोवने के हिसाब की चूने की बिंदियां लगी हैं और कोयले की लकिरें खिंची हैं वह तो न खिंचा करेगी।।

मथुरादास की बहू बोली कि पंडितानी जी जो मुझको इतना आ जाय तो मैं तुम्हारे पाँव धो धोकर पीऊँ मगर मुझ निगोड़ी को बीस से आगे गिन्ती भी नहीं आती इससे आगे गिन्ती तो गंगा ने अपने बाप से याद कर ली है कल ही की बात है कि मैंने छज्जू बनिये के लड़के से एक रुपये के पैसे भुनवाए थे जब वह लाया तो उसने कहा कि लो मेरे साम्हने गिन लो मैंने पूछा किस भाव से आए हैं उसने कहा सैंतीस टके मैंने कहा कि बीस टके और कै टके उसने मुझे भोला जान कर चार पैसे निकाल लिये और कहा कि बीस टके और पंधरा टके मैं ने बीस टके अलग गिन लिये और पंधरा अलग गंगा बोल उठी कि मैं तो गिनू, तो उसने जो गिनू तो बीस से आगे गिन्ती चली गई और कहने लगी कि यह तो पैंतीस टके हैं और उँगलियों पर गिनकर बताया कि सैंतीस टकों में चार पैसे कम हैं तब वह लड़का हँस पड़ा और कहने लगा कि पहले चार पैसे मैंने इस मारे निकाल लिये थे कि देखूँ तुमको गिन्ती भी आती है या नहीं - पंडितानी जी यह गंगा जो उस समय न होती तो वह लड़का मुझे धोका देकर चार पैसे मार ले जाता और क्या खबर नौकर चाकर भी यों ही हिसाब किताब में मुझे धोका देकर मार लिया करते हों अच्छी पंडितानी जी जो तुम मुझको इतना भी पढ़ा लिखा दो कि धोबन के कपड़े लिख लिया करूँ और तंबोलन और पिसनहारी का हिसाब टाँक लिया करूँ और जो रुपये उठां करें उनका हिसाब लिख लिया करूँ तो बहुत ही छीज़ से बचूँ - मैं रुपये के पैसे भुनाती हूँ और जब वह सब उठ जाते हैं तब मुझको बड़ा सोच इस बात का होता है कि कहाँ कहाँ खर्च हो गये और दस पंधरह दिन के पीछे गिन्ती रुपयों का खर्च भी याद नहीं रहता जब गंगा के लाला मुझसे पूछते हैं कि इतने रुपये कहाँ खर्च हुए तो नहीं बतला सकती वह मेरा स्वभाव अच्छी तरह जान गये हैं कुछ नहीं कहते और जानते हैं कि घर ही मैं उठे होंगे। इतना तो कहने लगते हैं कि तुम बड़ी मूर्ख और भोली हो जो कुछ लिखी पढ़ी होतीं यह दशा तुम्हारी क्यों होती पंडितानी जी मैं भी इस कहने का कुछ बुरा नहीं मान्ती उनका कहना कुछ झूठ नहीं है पर यह बड़ी अच्छी बात है कि वह अपने जी में यह भ्रम नहीं करते कि मैं झूठ बोलती हूँ और जो यह भ्रम उनको हो तो मैं उसको किसी भाँति दूर नहीं कर सकती हूँ परवश हूँ क्या करूँ पढ़ी लिखी नहीं - मैं तुम्हारा बड़ा गुण मानूँगी जो तुम मुझको थोड़ा-सा भी पढ़ा दोगी ज्ञानो ने कहा कि अच्छा बहू अब तो मैं जाती हूँ और मथुरादास से कहा कि लो लाला जी कल से मैं आऊँगी सवेरे तो मैं सूर्य निकले से बहुत पहले उठती हूँ। कभी देर नहीं होगी पर तीसरे पहर आने में कभी-कभी पूजा पाट करते देर हो जाया करेगी। पहले कह देना अच्छा होता है।।

मथुरादास ने कहा ओह उसकी कुछ बात नहीं तुम्हारा एक घंटे जी से पढ़ाना चार घंटे के बराबर होगा।।

दूसरे दिन छै बजे ज्ञानो आई और मथुरादास ने एक दालान जो अलग था उसके बैठने के लिये बता दिया और गंगा और किशोरी को उसको सौंप दिया और जो पुस्तकें नागरी की उनके पढ़ाने के लिये ज्ञानो ने बतलाई सो सब मँगवा दीं - निदान गंगा और किशोरी रोज़ सवेरे से नौ बजे तक और तीन बजे से पाँच बजे तक पढ़ना लिखना और गिन्ती और पहाड़े सीखा करती थीं और नौ बजे से दोपहर तक मिश्रानी के पास बैठकर तर्कारियाँ आदि बनाया करती थीं और बारह बजे से एक बजे तक खाली रहतीं

थीं या गुड़ियों से खेला करती थीं और एक बजे से तीन बजे तक अपनी माँ से सीना पिरोना और जाली काढ़ना और बेल बूटे बनाना सीखा करती थीं और पाँच बजे से सात बजे तक उनकी माँ अच्छी बातों के सिवा और कुछ न करने देती थी कि कहीं उनका जी उचट न जाय और रात को कभी कभी मिश्रानी जी के पास बैठकर पूरियाँ कचोरियाँ और और चीज़ें बनाती थीं और सोने से आधे घंटे पहले अपने बाप से उर्दू भी पढ़ती थीं - एक दिन रात के समय मथुरादास तो कहीं गये थे मथुरादास की बहू ने लड़कियों से कहा आओ मैं पहेलियाँ कहूँ और तुम बताओ-लड़कियों ने कहा अच्छा कहो उनकी माँ ने यह पहले कही पहेली - बेल पड़ी दरयाब में फूल लगन की जायँ मैं तो पूछोएँ सखी फूल बेल को खाय बताओ क्या है गंगा बोली कि सिंघाड़े की बेल है किशोरी ने कहा कि भला कैसे गंगा ने कहा क्या लाली तूने देखी नहीं है कि ताल में सिंघाड़े होते हैं तब उनकी माँ ने कहा कि तुम दोनों नहीं जानतीं सिंघाड़े की बेल ताल में होती है कहीं उसका फूल बेल को खाता है फिर गंगा ने कहा कि कुछ इसका अता पता बताओ तब उसने कहा कि रात को सब के घरों में होता है पहेली के पीछे गंगा बोल उठी कि दीवा है उनकी माँ ने कहा हाँ, किशोरी बोली दीवा कैसे हुआ मुझे तो समझाओ गंगा ने कहा अरी देख तेल जो दीवे में है वह दरयाब है और बत्ती बेल और लौ फूल देख लौ से बत्ती थोड़ी-थोड़ी करके सब जल जाती है किशोरी ने कहा ठीक है फिर गंगा और किशोरी ने अपनी माँ से कहा और पहेली कहो तब उसने यह पहेली पूँछी पहेली - एक तमाशा देखो चल। सूखी लकड़ी लागा फल। जो कोई उस फल को खाय खेत छोड़ बाहर नहीं जाय। लड़कियों ने सोचकर कहा कि यह तो हमसे बताई नहीं जाती तुम्हीं बता दो उनकी माँ ने कहा कि बरछी है लड़कियों ने कहा कि समझा दो बरछी कैसे हुई। उनकी माँ ने कहा कि गंगा तूने बरछी देखी है उसने कहा वह तो नहीं जो पहले चौकीदारों के पास रहा करती थी। उसने कहा कि हाँ वही बरछी उसके सिर पर एक लोहे का नोकदार लट्टू लगा होता है उसको फल कहते हैं जब वह लड़ाई में आदमी के लगती है तो उसकी नोक और लट्टू पेट में घुस जाता है और आदमी मर जाता है और लड़ाई के मैदान को खेत कहते हैं। लड़कियाँ बोल उठीं कि हाँ अब तो हम समझ गई - यों ही पहेलियाँ सुन्ते सुन्ते वह सो गई।। जब लड़कियों के लिखने पढ़ने का अच्छा प्रबंध हो गया तो मथुरादास की बहू भी पढ़ने लगी और थोड़े ही दिनों में अक्षर पहचानने लगी और सौ तक गिन्ती भी सीख गई - एक दिन ज्ञानो लड़कियों को पढ़ा रही थी मथुरादास बाहर से घर में आए और लड़कियों का पढ़ना सुन्ने लगे। मथुरादास की बहू ने कहा कि तुम किस भूल में बैठे हो गंगा की उमर पूरी नौ वर्ष की हो गई। इसका वर नहीं ढूँढते आगे किशोरी भी ब्याहने जोग हुई, मथुरादास ने कहा कि क्या गंगा स्यानी हो गई है अभी तो दो तीन वर्ष विवाह नहीं करूंगा बारहवें वर्ष में गंगा का विवाह करने का विचार है मथुरादास की बहू बोली कि प्रथम तो आजकल हाथ चलता है कलका किसे पता है कि क्या हो जिस काम से निचंत हो जाय वही अच्छा है दूसरे छुटपन में विवाह करने का पुन्य बहुत होता है और बुराई किसी तरह नहीं - बड़ी उमर में विवाह किया और रुपया भी खर्च हुआ और पुन्य भी न हुआ - तीसरे स्यानी होने पर लड़का भी स्याना ढूँढना पड़ेगा और अच्छे घरों के लड़के स्याने कब होने पाते हैं उनका विवाह तो छुटपन में ही हो जाता है फिर परवश किसी कंगाल घर ब्याह करना पड़ेगा। देखो राधा तो गंगा से एक वर्ष छोटी है उसके लिए तो टेवे बहुत दिनों से आते हैं - मुहल्ले की सब औरतें मेरे कान खा जाती हैं कि तुम गंगा के लिए टेवे नहीं मँगवाती क्या लड़की को जवान कर्के विवाह करोगी पुन्य तो छोटी लड़की के विवाह का है इन बातों को जो मैंने कहीं सोच लो आगे तुम्हारी इच्छा है। मथुरादास ने कहा कि मैं तुमसे क्या कहूँ। जैसी सब स्त्रियाँ की मति होती है वैसे ही तुम्हारी मति है और स्त्रियों की ही क्यों है कुपड़ मर्दों की भी ऐसी ही बुद्धि होती है - आजकल

विवाह करने से जो लाभ तुम बतलाती हो मेरे विचार में वही हानि है जो तुम कुछ पढ़ी होतीं वा मैं तुमको इस जोग समझता कि तुम मेरी बात को जी से सुनोगी और समझोगी तो उत्तर देता। दूसरे सब मूर्ख स्त्रियों की रीति है कि पढ़े हुए मर्द की बात पर कुछ भी विश्वास नहीं करती और न उसकी बात को मानती हैं उलट मर्दों को मूर्ख समझती हैं और कुपढ़ स्त्रियों की बात मान लेती हैं और उसी पर चलने लगती हैं। यहाँ तक कि पिसन्-हारी वा चूहड़ी चमारी आकर कोई बात कह जा दे तो मर्दों की बात काटने और अपनी बात जमाने के लिए दृष्टांत देती हैं कल ही रात की बात है कि तुमने मुझसे यह कहा था कि मुहल्ले में साला करोडीमल सौ रुपये का नौकर है और ऊपर की पैदा अलग है तो भी पोत पूरा नहीं होता सदा हाय हाय पड़ी रहती है। मैंने कहा था कि तुमको उनके यहाँ का ब्यौरा नहीं है उनके यहाँ खर्च बड़ा बेठिकाने उठता है घर का प्रबंध अच्छा नहीं है जैसा हमारे भाई साहिब घर का प्रबंध है उससे बुरी उनके घर की दशा है। तुमने कहा कि यह बात नहीं है। अंगरेजों की नौकरी में वर्कत नहीं होती। मैंने कहा वर्कत न होने का क्या कारण है - तुमने उत्तर दिया कि अंगरेज जो तनख्वाह देते हैं रुपया थूक कर देते हैं इस्पर मैंने कहा कि यह क्या मूर्खता की बात तुमने कही लाखों रुपया हर महीने तनख्वाहों में बँटता है फिर इतने रुपयों पर कहाँ तक कोई थूकता फिरता होगा और जो यह भी मान लिया जाय कि रुपया थूक कर देते हैं तो क्या रुपया थूक देने से हलका हो जाता है। सोलह आने में नहीं चलता - क्या उसके छै धड़ी गेहूँ नहीं आते क्या उसका कपड़ा और रुपया से कम मिलता है - तुमने उत्तर दिया कि यह तो सच है कि रुपया हलका नहीं हो जाता पर मुझसे पिसन हारी कहती थी वह भी क्या झूठ कहती होगी वह तो पुरानी औरत है और यही बात नसीबन ने भी जो कपड़े सियाँ करती है कही थी - सोचो तो सही जब ऐसी मूर्ख पन की बात औरतें कहें तो उन से और क्या आस पूरी हो सकती है कि कोई बुद्धिमानी की बात कहेंगी परंतु यह कुछ उनका दोष नहीं है जो वह कुछ पढ़ी लिखी समझदार होतीं तो ऐसी मूर्खता की बात मुँह से कभी न निकालतीं -

मथुरादास की बहू ने कहा कि मैं तो यह बात कह कर बहुत लजाई। अब क्या तुमने मेरी चिड़ निकाली है जो बात मैंने कही थी बड़ी मूर्खता की बात थी पर अब तो इसकी कुछ चर्चा नहीं थी। मैंने तो यही कहा था कि गंगा के लिए विवाह का कुछ उपाय करना चाहिये। आजकल हाथ चलता है और कल का ब्यौरा नहीं कि क्या हो -

तब मथुरादास ने कहा कि हाँ यह तो सच है कि आजकल हाथ चलता है और यह भी ठीक है कि स्याने हो जाने पर बड़ा लड़का ढूँडना पड़ेगा और अमीर घरों के लड़के बड़े नहीं हो पाते। छोटी उमर में उनका विवाह हो जाता है। पर यह तो नहीं खुलता है कि वह पढ़ लिख जावेंगे वा कुपढ़ रहेंगे - चाल-चलन के अच्छे होंगे वा दुर्जन और बचपन में यह भी नहीं खुलता कि उनको कोई रोग तो नहीं है फिर धन संपत् को देख लेना और लड़के को न देखना और उसके दोषों से भेद न होना कैसी मूर्खता की बात है - ज्ञानो वहाँ गंगा और किशोरी को पढ़ा लिखा रही थी। मथुरादास ने उसकी तर्फ मुँह कर्के कहा कि क्यों ज्ञानो तुम तो पढ़ी लिखी हो। सच कहो यह बात मैंने झूठ बोली। ज्ञानो बोली - नहीं लालाजी। तुमने बड़ी बुद्धिमानी की बात कही और मथुरादास की बहू से कहा कि लाला जी सच कहते हैं तुम नहीं जानती हो कि छुटपन में विवाह के होने से क्या बुराइयाँ निकलती हैं। पाँच चार घर की बात तो मैं तुमको बताती हूँ देखो अपने ही मुहल्ले में बैजनाथ की लड़की का विवाह छुटपन में कैसे अमीर घर हुआ था पर उसका वनड़ा लड़कपन ही से जुवारियों की संगति में बैठकर जुवारी हो गया और बड़े होने पर सब अपनी हाट हवेली और धन संपत् जूए में हार दी यहाँ तक कि बहू का गहना पाता भी जो उसके बाप ने उसको

बनवा दिया था उतार कर ले गया। कुछ तो जूए में हार दिया कुछ बेच बच कर खा गया। और जब उसको बुलाता है तो जो गहना पाता वह अपने बाप के घर से पहन आती है सब जूए में हार देता है। अब हार कर वह बिचारी अपने बाप के ही रहती है कभी सासरे नहीं जाती। कहो बहू ऐसे वर से तो क्वारी ही भली है।।

फिर अपने मामा की बेटी मनसुखी ही को देखो कि तुम्हारे मामा ने कुछ थोड़ा रुपया उसके विवाह में लगाया था क्या उसको धन देख कर नहीं दिया - उसका वनड़ा कैसा भंगड़ा और चरसी निकला जब उसका बाप मर गया तो अपनी धन संपत् और गाँव गोट को चरस भँग में खा उड़ा बैठा और रहा हाथों उड़ाता जाता है। अब तेरी बहन कुछ कहती है तो उसको मरता है और गालियाँ देता है जो बचपन में विवाह न होता और स्थाने होने पर लड़के को देखभाल कर विवाह किया जाता तो आज उस बिचारी को यह दिन क्यों भुगतने पड़ते अरी बहू दूर क्यों जाती है। अपने पड़ोस में राम देई की माँ को देख कि उसका घरवाला पचास हजार रुपये का आदमी था और यही एक लड़की राम देई उसके थी। उसने राम देई का विवाह पच्चीस हजार रुपये लगा कर बचपन में बड़ी धूमधाम से किया। तब उसके दूल्हे की उमर केवल सात वर्ष की थी और ऐसे घर विवाह किया कि जिसके यहाँ लाख रुपये की संपत् थी। विवाह के थोड़े दिनों पीछे राम देई के ससरे ने रूई भरी। उसमें ऐसा टोटा आया कि निरे कंगाल हो बैठे यहाँ तक कि हवेली भी बिक गई। खाने पीने का भी साँसा हो गया - उसका ससरा पढ़ा लिखा तो था पर अब उसकी अवस्था ऐसी नहीं रही कि कहीं नौकरी कर सके। उसका लड़का जिसे राम देई ब्याही थी लाड़ प्यार से कुछ लिखा पढ़ा नहीं। कायथ का बेटा था कहावत है कि कायथ का बेटा पढ़ा भला वा मरा भला। अब बिचारा चौकीदारों में नौकरी करता है और बिचारी रामदेई को बड़े दुःख भुगतने पड़ते हैं। देखो जो रामदेई का दूल्हा पढ़ा लिखा होता तो आज के दिन चौकीदारों में चार पाँच रुपये की नौकरी क्यों करता वह बात हाथ आनी तो कठिन थी पर नौकरी तो प्रतिष्ठा की मिल जाती। बात यह है कि जो राम देई किसी कंगाल घर के पढ़े लिखे लड़के के साथ ब्याही जाती तो कभी न कभी उसके भाग जाग ही जाते। अब बिचारी का उबरना कठिन है - ज्ञानो की बातें सुन कर मथुरा दास की बहू बोली कि पंडितानी जी तुम सच कहती हो। अपनी बहन को देख कर तो मुझे भी बड़ा दुःख होता है और राम देई को भी मैं जानूँ हूँ जिनका ब्याह स्थानी उमर में होता है क्या उनको कभी दुःख नहीं भुगतना पड़ता है। ज्ञानो ने कहा बहू यह मैंने कब कहा कि स्थानी उमर में ब्याह जब करने से दुःख नहीं उठाना पड़ता। मैंने तो यह कहा है कि बड़े लोगों के साथ ब्याह करना चाहिये और जिस लड़के के साथ ब्याह करना हो उसको पढ़ा लिखा और चाल चलन का अच्छा और निरोगी देख ले तो आशा है कि लड़की सदा प्रसन्न रहेगी और जो स्थानी उमर में किसी छोटे वा जुआरी वा कुपड़ वा भंगड़ा जंगड़ा वा किसी रोगी लड़के के साथ ब्याह किया जायगा तो लड़की की वही दशा होगी जो बचपन में ब्याह करने से राम देई की हुई। भला बचपन के ब्याह में तो लड़के के बुरे निकल जाने का अनुमान भर होता है और स्थानेपन में बुरे लड़के के साथ ब्याह कर देना जान बूझ कर लड़की की गर्दन मार देना है - लेखराज कायथ ने अपनी लड़की का ब्याह स्थानी उमर में कंगाल होने के कारण ज्वाला चौकीदार के लड़के के साथ कर दिया था - पर इतना देख लिया था कि लड़का सरकारी मदर्स में अंगरेज़ी पढ़ता है और चाल चलन का अच्छा है और देखने में चतुर दिखाई देता है। कभी न कभी पढ़ लिख कर नौकर हो जायगा जिन दिनों ब्याह हुआ था उन दिनों ज्वाला के घर चूल्हे पर तवा भी न था। जैसे गुड्डे गुड़ियों का ब्याह होता है वैसा ही उनका ब्याह हुआ था - केवल ढाई तीन रुपये की नौगरी चढ़ावे में लड़की को चढ़ी थी। सो आज उस लड़की का वह भाग

जागा है कि भगवान सब का जागे। उसका वनड़ा सौ रुपये का नौकर हो गया है। अब वह लड़की चाँदी से धौली और सोने से पीली हो रही है। पर वह केवल पालकी में चलती है। बहुत इतराती है और एड़ियों के बल चलते चलते अपने बाप के आती है तो किसी को नहीं बदती। धन के अभिमान में किसी से अच्छी तरह नहीं बोलती और हर चीज़ के खाने पीने पर नाक भौं चढ़ाती है और यह नहीं समझती कि मैं क्या थी और अब भगवान की कृपा से क्या हो गई हूँ। इससे उसके मा बाप अप्रसन्न हैं और जो कोई उसका स्वभाव देखता है वह बुरा कहता है। उससे बात करना भी नहीं चाहता। मथुरादास की बहू ने कहा कि पंडितानी जी मैं भी उसे जानती हूँ। वह मेरे मुहल्ले की बेटा है। मेरे साथ वह बचपन में बहुत खेला करती थी - बालकपन में तो ऐसी नहीं थी अब तो वह किसी से मुँह से भी नहीं बोलती। ज्ञानो ने कहा कि बहू यही तो बहुत बुरी बात है आदमी को चाहिये कि जितना बढ़े उतना ही लोगों से निबके चले और आधीनता से बोले जो उसमें यह बात होती तो कोई उसको बुरा न कहता सब यही कहते कि धन पाकर भी बिचारी को कुछ अभिमान नहीं है। बहू मेरे मुहल्ले में एक बनिये की लड़की है उसका बाप भी कंगाल था। उसने उसका ब्याह सदर बाज़ार में एक बनिये लड़के से कर दिया। जब ब्याह हुआ था तब उसका समधी चने बेचा करता था और उसी में आने दो आने रोज़ कमाया करता था। उसी से अपने बाल बच्चों का पेट पालता था और उसका जँवाई ब्याह के समय पँधरा वर्ष का था। कुछ पढ़ा लिखा न था। चंचल और चतुर बहुत था - दिल्ली में शीशे काटना सीखा करता था। लड़की के बाप ने लड़के को चंचल और चतुर देखकर ब्याह कर दिया था। ब्याह के बाद लड़की का ससरा तो मर गया पर उसका वनड़ा जब शीशे का काम करना सीख गया तब मेरठ में साहिब लोगों के बंगलों और कोठियों में शीशे जड़ने लगा और एक-एक डेढ़-डेढ़ रुपया रोज़ कमाने लगा फिर वह रुपया इकट्ठा करके सौदागरी करने लगा। देखते देखते वह अब इतना बड़ा सौदागर हो गया है कि ईश्वर झूठ न बुलावे तो कम से कम उसकी प्राप्ति 500 रुपये महीने की होगी और वह लड़की भी ऐसी चतुर है कि सोने चाँदी में तोल दी हुई है पर उसे कुछ अभिमान नहीं है और सब काम धंधा घर का आप ही करती है और सबसे मीठा बोल बोलती है और जो उसके यहाँ जाती है उसका आदर मन रखती है। यहाँ तक कि मंगन पनिहारी आदि जो उससे बड़ी होती हैं उनसे भी पैरों पड़ूँ कहती है और राम राम करती है। उसकी उस मुहल्ले में बड़ी बड़ाई है और जब कभी अपने पीहर जाती है तो अपने माँ, बाप, बहन, भाईयों से वैसा ही प्यार रखती है जैसे पहले रखती थी और अपनी सखी सहेलियों और भनेलियों और सबसे अच्छी तरह बोलती है। जो देखता है उसकी बड़ाई करता है और जो उसकी बड़ाई सुन्ता है मग्न होता है और कहता है कि उसका राज सुहाग बना रहे - बहू पूत के पाँव पालने ही में पहचाने जाते हैं। इस लड़की का बचपन से ही यही स्वभाव था कि जो घर में बड़ा आता उसको राम राम करती थी। घर का सब काम करती - अपने छोटे बहन भाईयों को खिलाया करती और उनके हाथ मुँह धोया करती। सारा चौका बर्तन कर लेती थी। अपनी माँ को बहुत कम काम करने देती थी। यह बातें सुन कर जो गंगा पढ़ रही थी बोल उठी कि पंडितानी जी मैं भी तो राम राम कर लेती हूँ। किशोरी बोली क्या मैं सबको राम राम नहीं करती हूँ क्या। तुम ही अनोखी राम-राम करती हो ज्ञानो ने कहा बेटा तुम दोनों सबको राम-राम कर लेती हो यह बहुत अच्छी बात है। गंगा बोली जो मेरे कोई छोटा बहन भाई हो तो क्या मैं उसको न खिलाऊँगी वा उसका मुँह हाथ न धोऊँगी। मैं तो बालकों के खिलाने को तरसती हूँ - ज्ञानो ने कहा कि हाँ बेटा अच्छी लड़कियों के यही काम हैं। भगवान तुमको भाई भी देगा। गंगा बोली कि रोटी और चौका बर्तन करने को तो मैं रोज़ कहती हूँ, पर मा जी करने नहीं देतीं। तब ज्ञानो ने कहा कि बेटा भगवान की दया से तुम्हारे टहलवे और टहलवी करने

को हैं। तुम्हारी बला चौका बर्तन करे। रोटी करना कुछ कठिन नहीं है। वह बात की बात में तुमको आ जायगी। हाँ, पर तरकारियों का बनाना कुछ कठिन है। सो तो तुमने मिश्रानी के पास बैठकर उनका बनाना सीख लिया है - बेटी इनके सिवा घर के और बहुत काम हैं। माँ बाप और आए गए को पान बना देना - बाप भाई के चौके में आसन बिछाना - खाने के समय बाप भाईयों की पंखे से मक्खियाँ उड़ाना - बाप को पानी देना - जो कोई घर का बर्तन बिखरा पड़ा हो उसको संभाल कर रखना, घर की हर चीज़ वस्तु का ध्यान रखना। कोई बिगाड़े नहीं कोई उठा न ले जावे चूहे न खावें रुपया पैसा मा बाप के कहने से जिसको देना उसको चौकस करके गिन देना जिस्से घटे बढ़े नहीं - घर के कपड़ों को घास फूस की तरह न डाल देना उनको तह करके उनकी जगह रखना और जो काम करना समझ बूझ कर और जी लगा कर करना - किशोरी जो बहुत चंचल थी बोल उठी कि पंडितानी जी राधा बहन तो सारे दिन पच गिटड़े और गुड़ियों से खेला करती है। और घर का कुछ काम नहीं करती और पढ़ती लिखती भी नहीं तुम हमसे कहती हो उनसे तो कुछ भी नहीं कहतीं। ज्ञानो ने कहा बेटी उससे मुझे क्या काम है जो मैं राधा को हटकूँ और बरजूँ उन की मा बुरा मानती हैं। भला कोई राधा को अच्छा भी कहता है। तुमको जो देखता है अच्छा कहता है - बेटी तुमको पराए घर जाना है। यहाँ तो जो तुमसे कोई काम बिगड़ भी जाएगा तो तुम्हारी मा छिपा लेगी और एक दो बार कुछ भी न कहे पर सुसराल में तो तुमसे कोई काम बिगड़ेगा तो सास ननद तुमको नाम धरेंगी और तुमको बुरा कहेंगी। किशोरी चाहती थी कि कुछ और कहे इतने में मथुरादास ने लड़कियों से कहा कि बस चुप रहो। वह दोनों लड़कियाँ भीगी बिल्ली की तरह चुपके चुपके पढ़ने लगीं और मथुरादास ने ज्ञानो से कहा कि छुटपन में ब्याह करने से एक बड़ी भारी हानि और है और वह हानि सब लोग नहीं जानते न जाने तुम जानती हो वा नहीं। जो कोई अखबार पढ़ता रहता है वा हिसाब जानता है वह समझ सकता है बड़े बड़े बुद्धिमानों ने निश्चय किया है कि जवानों में बालक बहुत मरते हैं और जियो बड़े होते जाते हैं उतना ही मरने का डर कम होता जाता है - हिसाब लगाने से जाना गया है कि जितने बालक उत्पन्न होते हैं उन्में से चौथाई सात वर्ष की उमर तक और आधे सत्तरह वर्ष से पहले मर जाते हैं और सत्तरह वर्ष के पीछे बहुत कम मरते हैं। ज्ञानो ने कहा कि हाँ लाला जी मैंने भी यह हिसाब एक अखबार में जो मेरा भाई मदरसे से ले आया था देखा था। यह ठीक है पर मरना जीना भगवान के अधीन है। क्या स्याने नहीं मरते हैं - अब के वर्ष हैज़े में कैसे कैसे जवान मरे हैं जहाँ मैं रहती हूँ उस मुहल्ले में कल्लू बनिये का बेटा अठारा वर्ष का और छज्जू सुनार का बीस वर्ष का और लाला भागीरथ कायथ का बेटा तीस वर्ष का मरा।

मथुरादास ने कहा यह अकाल मौत है - यह कठिन रोग कभी कभी आता है। सदा नहीं रहता। यह मरना कुछ हिसाब में नहीं है पर तौ भी तुम देखो कि तुम्हारे मुहल्ले में एक वर्ष के भीतर सोलह वर्ष से कम उमर के कितने मरे और सोलह से अधिक कितने तो तुम जानोगी कि मैं सच कहता हूँ वा झूठ। और बुद्धिमानों ने जो हिसाब लगाया है वह ठीक है या नहीं। ज्ञानो ने अपने जी में सोच कर कहा कि हाँ लाला जी सच कहते हैं। इस वर्ष में तो मेरे मुहल्ले में कोई बीस बालक मरे होंगे और सत्तरह वर्ष से आगे तो यही तीन मनुष्य हैज़े से मरे हैं और बालक हैज़े से केवल तीन मरे शेष शीतला से कोई दस्तों से कोई साँस से कोई बुखार से मरा -

मथुरादास ने कहा लो इस मरी में भी बालक और जवान बराबर मरे और सत्तरह वर्ष की उमर से आगे जवानों से बालक सत्तरह अधिक मरे फिर देखो सत्तरह वर्ष से कम उमर लड़कों के साथ लड़की का ब्याह करने से यह भी संदेह है कि कदाचित् लड़की बचपन में विधवा हो जावे। तब मथुरादास की बहू

ने कहा यह कुछ बात नहीं अपने अपने भाग हैं क्या जवान विधवा नहीं हो जाती हैं ज्ञानो ने कहा कि तुम सच्ची हो पर जो लड़कियाँ बचपन में विधवा हो जाती हैं वह तो न होंगी और बचपन में ब्याह से कुछ लाभ भी तो न होगा। गौना तो उनका स्याने होने पर होता है स्याने होने पर ब्याह होवे और गौना जल्दी हो तो भी वही बात है और जो उसके भाग में विधवा ही होना है तो कुछ तो देखभाल लेगी और जो कोई लड़का उसके हो गया तो वही उसके जी बहलाने को हो जायेगा। यह बात छुटपन में विधवा होने से क्या हो सकती है मुझ अभागी की यह दशा हुई जब मैं विधवा हुई थी मेरी उमर केवल नौ वर्ष की थी मुझ में आपे की भी सुध नहीं थी। तुम आप जानती हो कि इस वर्ष में कैसी-कैसी छोटी लड़कियाँ विधवा हो गई हैं। कानूनगो मुहल्ले में हरीराम ब्राह्मण की पोती नौ वर्ष की विधवा हुई। उसका वनड़ा शीतला से चैत के महीने में मर गया - मेरे पड़ौस में जवाहिर बनिये की लड़की का अगले वर्ष ब्याह हुआ था उसका वनड़ा दस वर्ष का था। वह लड़कों में खेल रहा था। अचानक एक गाड़ी के पहिये के तले आकर मर गया। जत्ती वाड़े मुहल्ले में बहुत से लड़के आसौज के महीने में राम लीला का खेल खेल रहे थे। मल्हूमल क्षत्री के लड़के को रावण बना कर और लड़कों ने उसके कपड़ों में आग लगा दी। वह इतना जल गया कि इलाज करने से अच्छा न हुआ। उसका ब्याह बनारस में हुआ था। लाला के बाज़ार में एक लाला नारायनदास कायथ रहते हैं। उनके लड़के को जिसकी उमर ग्यारह की होगी उसके साथियों ने होली के दिनों में उसको इतनी भांग पिला दी कि उसकी घुमेर में मर गया। उसका ब्याह भी हो गया था कहो बहू ये चारों लड़के छुटपन और लड़कापन ही से हुवा वा नहीं - किसी बड़े लोग ने ऐसी मौत पाई है। जो उनका ब्याह न हुआ होता तो उन बिचारी लड़कियों के जो उनके पल्ले पड़ गयी थीं क्यों भाग फूटते - यह बातें सुन कर मथुरादास की बहू को सुध आई और कहने लगी कि मैं कभी अपनी गंगा और किशोरी का ब्याह छुटपन में नहीं करूँगी। पंडितानी जी तुम सच कहती हो - सच है पढ़े लिखे की चार आँखें और कुपढ़ मनुष्य निरा अंधा होता है। उसको अपनी भलाई बुराई कुछ नहीं सूझती - जब तुम्हारी और लाला जी की इच्छा हो तब ब्याह करें मैं कभी बीच में न बोलूँगी पंडितानी जी मैंने तो यों कहा था कि तुम ही सब कहती हो कि छोटी उमर में विवाह करने का पुन्य है - तब ज्ञानो ने कहा कि बहू मैंने तो यह कभी नहीं कहा। हाँ छुटपन का यह प्रयोजन है कि लड़की जवान न हो जाय और न ऐसी छोटी हो कि जिसको कुछ सुध न हो और जो मर्द वा औरत कहती हैं वह समझती नहीं हैं और न शास्त्र को जानती हैं। शास्त्र में लिखा है कि जब लड़का लड़की समझदार हो जावें तो ब्याह किया जावे - देखो फेरो के समय लड़के और लड़की में आपस में नियम और प्रतिज्ञा होती है जिन को सप्तपदी कहा जाता है - लड़का लड़की से कुछ प्रतिज्ञा करता है लड़की लड़के से प्रतिज्ञा करती है और इन प्रतिज्ञाओं के पीछे विवाह समझा जाता है और यह प्रतिज्ञा बचपन में ब्राह्मण के मुँह से भुगतते हैं और यथार्थ में लड़का लड़की के मुँह से होनी चाहिये और यह तब हो सक्ता है जब दोनों को सुध हो और शास्त्र में यह भी लिखा है कि वर लड़की से सवाया ड्येवढ़ा हो - जो लड़की बारह तेरह वर्ष की हो तो उसका विवाह सत्तरह वर्ष के लड़के से करना चाहिये और सतयुग में लड़की जिस लड़के को पसंद करती थी उसी के साथ उसका विवाह होता था - बड़े बड़े राजाओं में यह चाल थी कि स्वयंवर रचा जाता था और राजा लोग उसमें इकट्ठे होते थे। उस समय लड़की जिसके गले में फूलों की माला डालती थी उसीसे उसका विवाह होता था - तुमने कभी रामायण नहीं सुनी है कि सीता जी के विवाह के लिये उनके पिता राजा जनक ने स्वयंवर रचा था और राजा बाबू वहाँ इकट्ठे हुए थे - सीता जी ने राजा रामचंद्र को पसंद करके उनके गले में हार डाल दिया तब उनसे सीता जी का विवाह हुआ - मेरी बहू पुन्य इसी में है कि लड़की के लिये वर अच्छा देख ले

जिस्से लड़की उमर भर सुख पावे - यह बड़ा पाप है कि बेदेखे भाले लोग अपनी लड़कियों का विवाह छुटपन में आठ आठ नौ नौ वर्ष के लड़कों से कर देते हैं जो वह लड़के जवानी भरने पर अच्छे निकले तो लड़की को सुख है नहीं तो जन्मभर का दुःख और लड़की जितना दुःख पाती है उतना ही मा बाप को पाप हो जाता है -

मथुरादास ने कहा कि यह बात मैं आप कहने को था सो तुम्हीं ने कह दी। ज्ञानो ने कहा लालाजी क्या मैं शास्त्र नहीं जानती हूँ - आजकल सब मर्यादा शास्त्र की उठ गई है। देश का ऐसा चलन बिगड़ा है कि कुछ ठीक नहीं है - कोई पढ़ता लिखता नहीं जो वह अगले समय की दशा को जानकर आगे को सोच विचार से काम करें - मर्द कुछ पढ़ते हैं सो उन्में से संस्कृत कोई नहीं पढ़ता। कोई ब्राह्मण संस्कृत पढ़ता है सो उन्में से बहुधा विवाह कराना और पत्रा देखना सीख लेते हैं और छोटी मोटी कथा बाँच लेते हैं और उन्हें क्या आता है और ऐसे बहुत थोड़े हैं जो वेद और शास्त्र पढ़ते हैं और संसार में पाखंड इतना बढ़ा है कि जिस्का कुछ ठिकाना नहीं - शीतला चौराहा और मीराँ और ज़ाहिर पीर गूंगा को पूजते हैं और उनसे अपने मनोरथ माँगते हैं और सबको उत्पन्न करने वाला परमात्मा है उसको कुछ नहीं समझते। यह कितनी बड़ी हठधर्मी है और यहाँ के लोगों पर तो यह पत्थर पड़े हैं कि जब मीराँ की जात को अमरोहे जाते हैं तो गंगा में पैर भी नहीं देते भला बहू जो ऐसे लोग हैं उनका कब भला हो सक्ता है वह तो अपने आप विपता भरेंगे अब लाला जी तुम लड़के की ढूँड भाल रक्खो तीन वर्ष पीछे गंगा का विवाह करना तब तक गंगा पढ़ लिख कर समझदार हो जायगी - जब यह सब बातें हो चुकीं मथुरादास तो बाहर चले गये और मथुरादास की बहू ने ज्ञानो से कहा कि आज तुमको बातों में बहुत देर हो गई। अब कब घर जाओगी और कब आओगी आज यहीं न्हाधो कर पूजा कर लो। गंगा तुम्हारे लिये पूरियाँ कर देगी सो तुम खा ले। ज्ञानो ने कहा अच्छा बहू जो तुम्हारी इच्छा - मेरे जाये बिना कौन-सा काम अटक रहा है निदान उस दिन ज्ञानो दिन भर वहीं रही - दोपहर को खापीकर लेट रही और मथुरादास की बहू लड़कियों को लेकर सीने पिरोने बैठ गई। इतने में जमुनादास की बहू घर के रस्ते से देवरानी के पास आई गंगा और किशोरी ने देखते ही कहा ताई राम-राम फिर मथुरादास की बहू ने अपनी जिठानी के पाँव लगे और बड़े आदर से बिठलाया और गंगा से कहा जा ताई के लिये पान बना ला जमुनादास की बहू देवरानी को सीते हुए देख कर कहने लगी - कोई तुम्हारे पास क्या आवे तुम तो सदा काम ही में लगी रहती है। तुम को तो एक घड़ी चैन नहीं। जब मैं तुमको खिड़की में से झाँक कर देखती हूँ खाली हाथ नहीं पाती या तो घर के काम धंधे में देखती हूँ वा सीते हुए तुम उस जनम की कमेरन हो - भगवान जब नौकरचाकर दे तब भी सुख से न रहे तो कब रहे जो एक मिश्रानी और टहलनी तुम्हारे हैं सोही हमारे हैं - मैं तो चारपाई से उठकर पानी तक भी अपने हाथ से नहीं पीती। सब काम उन्हीं से लेती हूँ। तुम दिन भर पिली रहती हो जब ही तुम अपने वनड़े की प्यारी हो और जब ही तुम्हारे लिए झूमर बन कर आया है जो मैं भी तुम्हारी तरह घर में पिली रहती तो मैं भी तुम्हारे जेठ की प्यारी होती और मेरे लिये भी झूमर बन जाता सो सुन लो प्यारी चाहे झूमर बने वा न बने चाहे कोई प्यार करे वा न करे अब मुझसे तो पिला नहीं जाता - देवरानी ने तो जिठानी को बड़ा समझकर इन बातों का कुछ उत्तर न दिया मुसकरा करके चल दी इतना ही कहा - आया तो करो जब तुम आया करोगी मैं अपना सीना पिरोना रख दिया कस्तूरी पर ज्ञानो ने जो वहाँ लेटी थी - जमुनादास की बहू को बहुत झाड़ा और आड़े हाथों लिया। ज्ञानो ने कहा सुन तो बहू जो तू कुछ काम घर का नहीं करती और दिनभर पलंग पर बैठी रहती है। इस्से तुमको क्या मिलता है। तेरा मालिक तुझ से राजी नहीं रहता है। तू ने सब काम नौकरों पर छोड़ दिया है। इस्से तेरे

घर की बहुत छीज़ होती है। जमुनादास की बहू ने कहा कि पंडितानी जी आज मेरे कल दूसरा दिन जब मैं मरूंगी तो क्या मेरी छाती पर कोई रख देगा खा पहर लेना और सुख भोगना यही अपना है और सब संसार की दन्तकथा है ज्ञानो ने कहा मैं तो तुझ को कुछ मोटी और निरोगी भी नहीं देखती हूँ तुझसे तो छोटी बहू गंगा की मा निरोगी है जमुनादास की बहू ने कहा कि पंडितानी जी अपने अपने भाग हैं मुझे तो कोई न कोई रोग लगा रहता है कभी खाँसी कभी जुकाम मेरे हाथ-पाँव में सदा दर्द रहता है चार दिन को अच्छी रही तो फिर चार दिन की माँदी हो गई - खाना-पीना अच्छी तरह नहीं पचता नित नई दवा खाती रहती हूँ भला मोटी हूँ तो कहाँ से हूँ - जो कुछ घर का काम भी करना चाहती हूँ तो अपनी बीमारी के मारे मुझ से कुछ नहीं हो सक्ता और हमारी देवरानी कभी बीमार नहीं होती इनके शरीर में बल है वह पहाड़ सिर पर उठा फिरती हैं भला मुझसे यह कब हो सक्ता है। ज्ञानो ने कहा अरी बहू यह सब बनआए की बातें हैं - तेरी देवरानी जो बहुत-सा काम काज घर का करती है इसीलिये निरोगी रहती है और जो तुम पलंग से उठ कर पानी भी नहीं पीती इसीसे रोगी रहती हो - बहू काम करने से खाना पीना पचता है - भूख खुल कर लगती है - हाथ पाँव और सब बदन के जोड़ ठीक रहते हैं - शरीर में फुर्ती आती है और एक जगह बैठे रहने से खाना पीना नहीं पचता। पेट में अजीर्ण हो जाता है - हाथ पाँव और सिर में दर्द हो जाता है - अजीर्ण होने से नाना प्रकार के रोग उत्पन्न होने लगते हैं - जितने रोग हैं सब पेट के विकार से होते हैं - यह तो सब जानते हैं कि आँत भारी तो माथ भारी और बहू अभी तेरी क्या उमर है तुमको अभी बड़ा काल काटना पड़ा है आज भगवान ने दे रक्खा है कल की खबर नहीं कि क्या है - आदमी को चाहिये कि अपने स्वभाव को न बिगाड़े - आलकस बहुत बुरा होता है। इससे बड़ी बड़ी हानि होती है जो चार पैसे तेरे वा तेरे मालिक के पास बच रहेंगे तो वह बुढ़ापे में तुम्हारे ही काम आवेंगे - तुम्हारे आगे दो लड़कियाँ हैं उनका तुमको विवाह करना है। अभी से इतराना नहीं चाहिये। ऐसा क्या तुम्हारे घर में भरा है जो तुम इतना इतराती हो तुम्हारा-सा स्वभाव तुम्हारी लड़कियों का भी हुए जाता है वह कुछ भी नहीं दबती जब यह यहाँ न दबेंगी ससुरे में जाकर क्या दबेगी - बहू जो तू घर का काम धंधा किया करे और उठा बैठा करे तो तेरे सब रोग जाते रहें और भली-चंगी हो जावे और जो तेरे हाथ पाँव में दर्द रहता है वह भी जाता रहे। जमुनादास की बहू उदास होकर बोली ओह सेर मोतियों ब्याह सेर चावलों ब्याह किसी की लड़की कुवारी भी रहती है। सब ब्याही जाती हैं और जो लड़कियों से बहुत कुछ कहती रहती हूँ वह तो मेरा कहना एक नहीं मान्तीं। मेरा क्या करेंगी अपना सिर खाँयेंगी ज्ञानो ने कहा बहू यह बात नहीं है जब तू आप काम करे तो लड़कियाँ भी तेरी देखा देखी काम करने लगे बच्चे जो मा को करते देखते हैं वही काम आप करते हैं और लड़कियाँ तो सब मा के स्वभाव सीख जाती हैं। जब यह अपने अपने सासरे जावेंगी तो सास ननद तुम ही को दोष देंगी और कहेंगी कि कैसी मा थी जिसने कुछ भी नहीं सिखाया कोई काम बहू को करना नहीं आता न रोटी करनी जान्ती है और न सीना पिरोना आता है अरी इसकी मा बड़ी फूहड़ होगी और यह भी कहेंगी जो ऐसी ही सुकुमार थी तो कोई रोटी करने वाली सीने वाली भी अपनी लड़की के साथ कर दी होती। जमुनादास की बहू तो बहुत ही मूर्ख थी। ज्ञानो के समझाने को कुछ भी ध्यान में न लाई - उलटी नाक भौं चढ़ा कर उठ खड़ी हुई है और कहा कि ले दौरानी मैं जाती हूँ मेरे बैठने से तुम्हारा काम से जी उछटता होगा मैं तो आलकसन और निकम्मी हूँ तु कमेरी और तुम्हारी लड़कियाँ कमेरी चलो तुम्हीं सदा राज करो जियो मेरा और मेरी लड़कियों का भी भगवान है -

मथुरादास की बहू ने जिठानी का पल्ला पकड़ लिया और कहा कुछ तो और बैठो और ज्ञानो ने

कहा अरी बहू तूने तो मेरे कहने का बुरा माना मैंने तो जो बात कही वह तेरे भले की बात ही जो झूठ कही हो तो मेरे पल्ले बाँध दे। जमुनादास की बहू ने कहा पंडितानी जी बुरा मात्रे की क्या बात है तुम तो सच मेरे भले को कहती हो पर मैं क्या करूँ अपने स्वभाव से बस नहीं चलता मैं कहाँ से इतने पौरुष लाऊँ जो घर को सिर पर उठा लूँ। बहुत गई थोड़ी रही भगवान यह भी तेर कर देगा भले बुरे सब संसार में ही रहते हैं - रही लड़कियाँ सो पढ़ाने को तो उनके बाप ही नाँह करते हैं मैं उन निगोड़ियों से बहुतेरा कहती हूँ कि चाची के पास बैठ कर कुछ सीना पिरोना सीखा करो और मिश्रानी के पास बैठकर तरकारियाँ बनाना सीखो पर वह तो कमबख्त खेल की दिवानी हैं मेरा कहना एक नहीं मान्ती अब स्यानी होने पर अपने आप सँभल जायँगी नहीं तो जैसा उनके भाग में होगा वैसा ही भुगत लेंगी। जन्म के मा बाप साथी होते हैं कर्म का कोई साथी नहीं होता निदान थोड़ी देर पीछे जमुनादास की बहू अपने घर को चली गई।। धन्य मथुरादास की लड़कियाँ का कितनी देर जमुनादास की बहू और ज्ञानो में बात होती रही पर गंगा और किशोरी ने एक बात मुँह से नहीं निकाली। अपना सिर नीचे किये हुए सुन्ती रहीं जब किसी ने तमाकू माँगा तो तमाकू दे दिया और जो पान माँगा तो पान बना दिया और जो पानी माँगा तो जल्दी से पानी ला दिया नहीं तो आजकल की लड़कियाँ ऐसी होती हैं कि कोई बातें करें वह बीच में बोल उठती हैं और बात काटती हैं क्यों न हो कहावत है मा पर पूत पिता पर घोड़ा बहुत नहीं तो थोड़ा थोड़ा।। इन की मा कैसी समझदार थी कि जिठानी ने इससे इतनी बातें कह लीं पर उसने आधी बात मुँह से नहीं निकाली। दूसरे ज्ञानो पंडितानी का पढ़ाना लिखाना।।

एक दिन जमुनादास ने मथुरादास से कहा कि राधा की विधि आगरे में लाला हरीराम तहसीलदार के लड़के से मिलती हैं सब लोग उस घर को अच्छा बताते हैं। लाला हरीराम बड़े कुलीन हैं इनके कुटुंब में कोई दो सौ मनुष्य होंगे - कुछ जायदाद तो नहीं है नौकरी करते हैं पर दिल वाले हैं ब्याह बहुत धूमधाम से करेंगे तुम्हारा इस्में क्या विचार है। मथुरादास ने कहा भला मेरा क्या विचार है जो आपकी इच्छा होगी सो ही होगा। हाँ मैं भी उनको जान्ता हूँ। कुलीन लोग हैं। नौकरियाँ करते हैं सदा से अच्छी अच्छी नौकरियाँ पर रहे हैं। पर मेरी समझ में तो अभी ब्याह नहीं करना चाहिये। राधा की उमर आठ वर्ष की है अभी जल्दी क्या है दो तीन वर्ष पीछे ब्याह करना - जमुनादास ने कहा कि भाई जिस काम से निश्चित हो जायँ वही अच्छा है। मथुरादास ने पूछा भला लड़के की क्या उमर है जमुनादास ने कहा कि नौ वर्ष की है। मथुरादास ने कहा यह और भी बुरा है। छुटपन में वर दूना नहीं तो डवेढ़ा जरूर होना चाहिये और दयाराम की तर्फ मुँह करके कहा कि क्यों पुरोहित जी बोलते नहीं दयाराम ने कहा कि लाला जी आपका यह कहना तो बहुत सच है पर फिर ऐसा घर नहीं मिलेगा राधा के ग्रह बहुत उच्च के पड़े हैं चाहे जिस्से विधि मिलनी कठिन है दो वर्ष ढूँडते ढूँडते सो यह लड़का मिला है और विधि भी अच्छी मिल गई है। मथुरादास ने कहा अजी महाराज विधि की तो एक लकीर पीटनी है। हिन्दुओं में बहुत सों का ब्याह विधि मिलने पर ही होता है फिर कैसे-कैसे उपद्रव हो जाते हैं - कोई लड़की विधवा हो जाती है। धनवान से कंगाल किसी की पुरुष से नहीं चलता सदा आपस्में तकरार रहती है और जिनके यहाँ बिना विधि मिलाए ब्याह हो ते हैं उनके यहाँ कुछ नहीं होता - मुसलमानों और अंगरेजों के यहाँ क्या विधि मिलाई जाती है उनके यहाँ इतनी विधवा होने या सुत्रे में नहीं आती हैं जितनी हिन्दुओं में दूर क्यों जाते हो। सारस्वत ब्राह्मणों में भी विधि नहीं मिलाई जाती उनके यहाँ क्या होता है यह सब कहने की बात है। यों ही बाँधनू बाँधना है मेरे विचार में तो घर और लड़का अच्छा देखते जमुनादास ने कहा सो घर और लड़के दोनों अच्छे हैं लड़के की उमर तो कम है पर लड़की से एक वर्ष अब भी बड़ा है - देखने में सुंदर है और एक

यह बात भी है कि तुम अंगरेज़ी पढ़ने को बहुत अच्छा जानते हो सो वह लड़का मदरसे में अंगरेज़ी भी पढ़ता है मथुरादास ने कहा तो अच्छा है तुम्हारी जो यही इच्छा है तो कर दो मैं इसमें कुछ और नहीं कह सकता परन्तु भाई साहिब आपने कुछ इसका भी सोच विचार किया कि इस ब्याह में तुम्हारा भुर्ता निकल जायगा तुमको पार्वती का भी ब्याह करना है वह तहसीलदार हैं। बारात भी भारी लाएँगे और आप जानते हैं कि वह दिल वाले हैं यह ही एक उनके लड़का है अपने जी के सब अरमान निकाल लेंगे तुम उनकी बराबरी कब कर सकोगे तुम्हारे पास तो मैं इतना रुपया भी नहीं देखता। फिर तुमने क्या सोचा है जमुनादास ने कहा कि भाई हाँ मेरे पास इतना रुपया तो नहीं है कि मैं उनकी बराबरी कर सकूँ। पर मेरा विचार यह है कि यह पहला ब्याह लालाजी के मरने के पीछे है इसको मैं भी बड़ी धूमधाम से करूँगा पार्वती का देखा जायेगा। मैंने सोचा है कि चार हज़ार रुपये महाजन से बारह आने की मिति पर उधार लूँ और जमालपुर पूरे गाँवको आड़ कर दूँ सौ रुपये महीने की प्राप्ति गाँव से होती है वह सब महाजन को देता रहूँगा। उसमें से ब्याज चुकने के पीछे सत्तर रुपये महीना मूल में बढ़ता रहेगा यों ही चार पाँच वर्ष सब रुपया चुक जायेगा और घर का खर्च अपने दूसरे और गाँव और अपनी नौकरी से चलाऊँगा -

मथुरादास ने कहा कि क्या भाई साहिब आप जब से अलग हुए हैं तब से आपने अब तक कुछ रुपया इकट्ठा नहीं किया जमुनादास ने कहा मेरे पास तो कौड़ी तक भी इकट्ठी नहीं जो कुछ गाँव से आता है और जो तनख्वाह लाता हूँ सब खर्च जाती है और अभी अलग हुए कै दिन हुए हैं एक वर्ष के लगभग हुआ होगा। मथुरादास ने कहा यह ठीक है पर जब एक वर्ष ही में कुछ इकट्ठा नहीं हुआ तो फिर आगे क्या बचने की कस है - मेरा आपका खर्च सब बराबर है नौकर चाकर सब का खर्च जितना तुम्हारे यहाँ है उतना ही मेरे यहाँ है हाँ तुम्हारे यहाँ दस रुपये महीने का कारिंदा और है जिस खर्च के लिए वह गाँव लाला जी ने आपको दिया था वैसा खर्च आज तक तुम पर नहीं पड़ा - इसके सिवा 25 रुपये के तुम आप नौकर हो जो तनख्वाह ही बचाते तो आज तक तीन सौ रुपये बचते मैंने तो एक ही गाँव से दो सौ रुपए बचाए हैं - जितना मेरे यहाँ खर्च उठता है जो उतना ही उठाते तो एक ही रुपये तुम्हारे पास बचते मुझे तो बड़ा आश्चर्य है कि तुम्हारे पास कौड़ी नहीं इसका कुछ भेद नहीं पटता। जमुनादास ने कहा भाई की सौगंध मेरे पास कुछ नहीं है। यह तो सच है कि मेरा और तुम्हारा खर्च बराबर और मेरी आमदनी तुमसे बहुत है। मैं तो यह जानता था कि तुमने कुछ उधार सिर कर ली होगी। न जाने मेरी प्राप्ति कहाँ जाती है। मथुरादास ने कहा कि यह भाभी के ध्यान न देने के कारण है - आप के नौकर-चाकर खा पी जाते हैं और वह कुछ सुध नहीं लेती और न कुछ आप सुध लेते हैं - जब यही बात है तो गाँव छूट चुका वह महाजन का हो जायगा जो अब इतना खर्च उठता है फिर कम क्यों कर होगा - जब तुम्हारी यह दशा है तो तुम अभी ब्याह करने का विचार न करो और जो करो भी तो इतना रुपया कभी न लगाओ - पाँच छै सौ रुपया लगाकर ब्याह कर दो यह कहावत भी है कि पगड़ी रख और घी खा और मैं तो गंगा और किशोरी के विवाह में पाँच छै सौ रुपये से बढ़ती कभी खर्च न करूँगा। भाई लड़की का ब्याह करना वा घर का नीलाम और उसका उपाय यह है कि तीन सौ रुपये तो मैं आपको दूँगा गाँव की आमदनी में से थोड़ा-थोड़ा करके मुझको दे देना और सौ पचास रुपये निश्चय भाभी के पास भी होंगे और रहा जितना इस फसल का नाज गाँव से आवे। वह सब ब्याह के लिये रहने देना एक दाना भी उसमें से न बेचना। भाई उधार का नाम बुरा - उधार से मनुष्य की प्रतिष्ठा घटती है आदमी को चाहिये कि जितनी चादर देखे उतने ही पाँव फैलाये भाई साहिब आपको याद नहीं है कि सरकार की तर्फ से हुक्म हो चुका है कि कोई सरकारी नौकर उधार न ले फिर तुम्हारा उधार लेना क्या छिपा रहेगा कहीं ऐसा न हो कि नौकरी से भी

हाथ धो बैठो जमुनादास ने कहा कि भाई मथुरादास घर का नीलाम हो वा कुछ ही हो नाक तो बिरादरी में नहीं कटाई जाती भला पहला तो यह ब्याह है नाई, बारी, भाट, जितने कमीन हैं सब आस करते हैं जो इस ब्याह में भी यह लोग मग्न न होंगे तो फिर कब होंगे - सहज सी बात है कि दो तीन सौ रुपये तो बिरादरी की भाजी में खर्च हो जायेंगे - फिर रहा बहन भानजी नातेदारों का इकट्ठा होना। फिर उनको विदा करना दो तीन सौ रुपये तो उठ जायेंगे और इसी हिसाब से पाँच छै सौ रुपये तो घर के ऊपरी खर्च को चाहिये और दान, दहेज, ज़ियाफ़त अलग रही - मेरी समझ में तो नहीं आता कि तुम गंगा और किशोरी का ब्याह पाँच छै सौ रुपये में कैसे कर लोगे - पाँच छै सौ रुपये में तो ब्याह होना संभव नहीं। मथुरादास बोले कि आपने यह क्या कहा कि संभव नहीं। भला जिसके पास पाँच छै सौ रुपये नहीं तो उसकी लड़की कुवारी रहे - वह कैसे ब्याह होते हैं जो दस बीस वा चालीस, पचास रुपये में हो जाते हैं। भाई साहिब अपनी अपनी सामर्थ की बात है। इसमें नाक नहीं कटती कि आप गाँव गिरवी रखेंगे - लड़की के ब्याह में भाजी बाँटना कुछ आवश्यक नहीं है - सगी बहन भानजी को बुलाना तो पड़ेगी बहुत से रिश्तेदारों को इकट्ठा करना कुछ आवश्यक नहीं और दान, दहेज़, घर देखकर देना चाहिये और ज़ियाफ़त की यह बात है कि समधी से कहला भेजना कि बहुत बारात न लावें बहुत की हममें सामर्थ्य नहीं है और नाई बारी और और कमीनों को वाजिबी देना चाहिये - भाई साहिब जो शास्त्र के अनुसार ब्याह किया जावे तब तो दस, पाँच ही रुपये में ब्याह हो सक्ता है। शास्त्र में कैसी मर्यादा रखी है कि जिनसे धनवान् और कंगाल दोनों का निर्वाह हो। देखो ब्याह के समय लड़की को जो कपड़ा पहनाया जाता है वह छै सात से अधिक नहीं होता और गहना जो जो पहनाया जाता है वह अनबट बिछवे और आसी के सिवा और कुछ नहीं होता जो कुल करके तीन चार रुपये का धन होता होगा और सब बढ़ती बातें एक दूसरे की देखादेखी से बढ़ गई है और भाई बे ठिकाने खर्च से बड़ी बड़ी हानि होती है और हुई हैं खर्च करने और जश का कुछ ठिकाना नहीं है एक से एक संसार में बढ़ा है चार हज़ार रुपये खर्च करके ऐसी क्या बात करोगे जो और ने न की हो। तुमको याद नहीं कि लालाजी कहते थे कि वन्सीधर के बाप के पास लाख रुपये की जायदाद थी और खर्च भी उनका इतना था कि उनको कौड़ी नहीं बचती थी उन्होंने अपनी लड़की का ब्याह पचास हज़ार रुपये उधार लेकर बड़ी धूमधाम से किया। यहाँ तक कि बरातियों को शर्बत पिलवाने की जगह जनवासे के कुएँ में खाँड की बोरियाँ उलटवा दीं और दूकानें बना दी कि जिसका जो जी चाहे सो ले और कमीनों को शाल दुशाले और कड़े दिये सो उनकी यह दुर्दशा हुई कि उसी पचास हज़ार रुपये का इतना ब्याज देना पड़ा कि देते देते बावले हो गये - वह लाख रुपये की जायदाद उसी उधार के मत्थे गई। वह अपने जीती जी ही खाने को तर्सने लगे थे अब उनके लड़के वन्सीधर की यह दशा है कि दाने दाने को मारा फिरता है कोई उनकी बात नहीं पूछता जिन लोगों को उनके बाप ने शाल दुशाले और कड़े और तोड़े दिये थे उन्में से कोई सा भी उनके काम नहीं आता जिन लोगों ने ब्याह में खाया उड़ाया था अब वही उनको यह कहते हैं कि ऐसा खरचना भी किस काम का कि सारी संपत्ति एक ही ब्याह में उठा ली और लड़के के लिये एक पैसा न छोड़ा।।

भाई साहिब सैकड़ों चापलोसी की बातें बनाने को आ जाते हैं और जब कुछ पास नहीं रहता तो कोई भी पास को नहीं फटकता। जो लोग आज आप को भड़का कर ब्याह धूमधाम से करने को कहते हैं वही कल को बुरा कहेंगे कि ऐसा खर्च क्यों किया था जो संपत्ति को बिगाड़ बैठे जिन नाई बारियों को तुम शाल दुशाले दोगे वही कल को जो पार्वती के ब्याह में न दोगे यह कहेंगे कि एक ही ब्याह में लाला का दिवाला निकल गया - ऐसे लोगों के देने से क्या लाभ जो गुन न माने और कभी काम न आवें - भला

यह तो बताओ कि यह नाई, बारी, भाट ब्याह के सिवा फिर भी किसी काम आते हैं - ब्याह में बैठकाने खर्च करना दो दिन की खुशी है दो दिन की बहार हो जाती है फिर कोई नाम भी नहीं लेता कि कैसा ब्याह हुआ था क्योंकि एक से एक बढ़कर करता है ऐसा कोई नहीं है जो जगत् में सबसे बढ़ कर काम करे जब हमारी यह सामर्थ्य नहीं कि सबसे बढ़कर कर सकेंगे तब फिर क्यों यों ही अपना नाश करें - जो बारात में बहुत से मनुष्य आए तो क्या और थोड़े आए तो क्या जो ज़ियाफ़त में बीस तशतरियाँ हुईं क्या और जो दश हुई तो क्या? आपको अपने काम से काम है। खाने वाले कुछ गुन नहीं मानते - मैंने तो यह देखा है कि बहुत लोग ज़ियाफ़त और बारात में जाने को रगड़ा समझते हैं और नाक भौं चढ़ाते हैं और कहते हैं कि क्यों वृथा काल खोया बिरादरी के डर से जाते हैं - फिर ऐसे लोगों के खिलाने से क्या लाभ - अपने मित्रों और भाई बाँधवों और नातेदारों को खिलाना चाहिये - बारात में बहुत लोग ऐसे होते हैं कि जिनके नाम तक भी लड़के वाला नहीं जानता - ज़ियाफ़त में सैकड़ों चीज़ें रुपये खर्च करके बनाई जाती हैं। ऐसी कोई चीज़ नहीं होती जो यों ही आती हो पर खाने पीने वालों को यही कहते सुना कि इस चीज़ में नून बहुत है और वह चीज़ कच्ची रह गई - कचोरियाँ ठंडी हैं और पिट्ठी बहुत है क्या खावें फिर जिस काम में रुपया भी खर्च हुआ और नाम भी न हुआ और उलटी थू थू हुई तो उसके करने से क्या लाभ और जो नाम भी हुआ कै दिन का - मेरे भाई रुपया बड़ी चीज़ है जो तुम्हारे पास रुपया होगा तो सब काम आवेंगे और दो दिन की ब्याह की बहार तुम्हारे कुछ काम न आवेगी - राजनीति में लिखा है कि जिसके पास धन है उसके सब मित्र हैं और नातेदार हैं जिसके पास धन है वही शूर वीर वही बुद्धिमान और बड़ा समझा जाता है - बात यह है कि संसार में धनवान् की बड़ी बात और प्रतिष्ठा है। इस्से बड़े बड़े काम निकलते हैं इसलिये उचित है कि रुपये पैसे को बड़ी सावधानी और बुद्धिमानी से खर्च करे जिस्से आपे को और औरों को लाभ पहुँचे तो जो रुपया ब्याह में निकम्मा खर्च होता है राजनीति के विरुद्ध खर्च होता है।।

नौकरी का क्या भरोसा है कहावत है कि नौकरी की जड़ सब से ऊँची है - आज है और कल नहीं बैठे बिठाए अपनी संपत् जो जन्म भर की रोटियाँ हैं खो बैठना अच्छी बात नहीं है और आप यह अच्छी तरह याद रखिये कि उधार बुरा होता है फिर गाँव का छूटना कठिन पड़ जायगा और इसी उधार में जाता रहेगा - कल को दूसरी लड़की सिर पर बैठी है और अपनी उमर बितानी है - सैकड़ों बातें सिर आ पड़ती हैं। उनको करना ही पड़ता है - रोग भी प्रत्येक के साथ लगा पड़ा है - रोगी न नौकरी कर सक्ता है और न कुछ और बीमारी के इलाज़ के लिये बहुत खर्च चाहिए परोक्ष की बात कौन जाने जो भगवान कृपा करें और आपके जीता जागता बेटा होवे तो उसके पढ़ाने लिखाने में बहुत कुछ खर्च करना और जो ऐसा ही आपको अपना रुपया बिगाड़ना है तो किसी और काम में लगाओ - अपाहिजों को दो - कोई शफाखाना बनवाओ वा कोई कुआँ तालाब बनाओ जिस्से परिणाम सुधरे जमुनादास ने कहा कि भाई मथुरादास तुमने जो बातें कहीं सब सच कहीं और मैं भी उनको समझता हूँ और देखता भी हूँ कि मेरी और तुम्हारी क्या सामर्थ्य है बड़े बड़े लोग नामवरी के फुसलावे में बिगड़ गये हैं और यह भी सच है कि भड़कानेवालों का क्या बिगड़ता है और उन्हें मेरे लाभ हानि से क्या प्रयोजन है वह तो खाऊ मीत हैं खाया और पत्तल फाड़ी जो मेरा दर्द तुमको है वह किसी और को क्यों होने लगा है पर भाई साहिब जब लाला हरीराम के लड़के साथ राधा का ब्याह होगा तब तो सब बातें करनी पड़ेंगी क्योंकि जोड़ को तोड़ चाहिये। वह तहसीलदार हैं और पहला ब्याह उनके लड़के का होगा वह बहुत कुछ खर्च करेंगे इसलिये दान दहेज भी उन्हीं के खर्च के अनुसार देना पड़ेगा इस अवस्था में जो हाथ थाम कर भी खर्च करूँगा तो भला चार

हज़ार रुपये न उठेंगे तो साढ़े तीन हज़ार में कुछ धोका ही नहीं है -

मथुरादास ने कहा भाई साहिब ऐसी क्या बात आकर पड़ी है कि उन्हीं के लड़के से ब्याह हो और कहीं ढ़ंडो अभी कुछ राधा स्यानी भी तो नहीं हो गई है जमुनादास ने कहा भाई मुझे तो तुम्हारे कहने से नाँह नहीं क्योंकि तुम मेरे भले की कहते हो पर तुम्हारी भाभी के वह लड़का बहुत मन भाया है। चलो उन्हें समझाओ जो वह मान जावें तो इस्से उत्तम क्या बात है फिर मथुरादास अपने भाई के साथ हवेली के अंदर गये और अपनी भाभी से वह सब बातें कहीं जो बाहर भाई से कही थीं। जमुनादास ने भी कहा कि मथुरादास सच कहते हैं। वहाँ ब्याह करने से घर बिगड़ता है जमुनादास की बहू क्यों माने लगी थी कहावत भी तो है बालहट, राजहट, त्रियाहट - उसने कहा कि राधा का ब्याह तो मैं उसी लड़के से करूंगी चाहे घर जाए चाहे रहे आगे पार्वती के भाग हैं जैसा उसके भाग में होगा हो रहेगा। तुम्हारे आगे और क्या है यह दो लड़कियाँ हैं सो उनका व्यवहार कर लें फिर जो भगवान् आधी रोटी देगा आधी ही खाकर बैठ रहेंगे न बहुत से बोरिये घसीटे न सही - कल की किसे सुध है जो हम हीन हुए तो इस धन संपत् को कौन विलसेगा हार कर मथुरादास और जमुनादास बाहर चले आए और जमुनादास ने कहा कि भाई जो अब मैं राधा का ब्याह वहाँ नहीं करता तो रात दिन का क्लेश मेरे जी को रहेगा यह ब्याह हो जाने दो फिर जैसा होगा वैसा देखा जायगा।।

जमुनादास ने विद्याराम पुरोहित से कहा कि आगरे जाकर लाला हरी राम के लड़के के टीका कर आओ और यह भी कहते आना कि ब्याह वैसाख में होगा - विद्याराम नाई को साथ ले आगरे में लाला हरीराम तहसीलदार के घर पहुँचे - बातचीत टीके तो पहले हो चुकी थी - टीके का व्यवहार भुगतना रहा था सो अब फागुन वदी दूज को भुगत गया टीका के दिन लाला हरीराम के यहाँ बड़ा मंगलाचार हुआ और बहुत से रुपये पैसे नाई नेगियों को बाँटे और समझाने के पुरोहित और नाई को बड़ी आव भगत से जिमाया जब सब खा पी चुके तो लाला हरीराम ने विद्याराम से कान में पूछा कि कहो तुम्हारे लाला जी कैसा ब्याह करेंगे - यह लोग तो बढ़ावा देने वाले होते हैं - इन्हीं की बातों से ब्याहों में खर्च बढ़े हैं यह अपने टके के लालच से यजमान का एक रुपये का बिगाड़कर देते हैं। उन्होंने कहा कि लाला जी ऐसा ब्याह होगा कि आप देखेंगे हमारे लाला जी बहुत अच्छे हैं नाई बारियों के लिये शाल दुशाले लिये जाते हैं और सब सामान ब्याह का हो रहा है और लाला जी आप तो जानते हैं लाला भगवान दास के बेटे हैं। आजकल उनके यहाँ भगवान की कृपा है - दो गाँव उनके पास हैं और आप भी नौकर हैं और एक गाँव उनके छोटे भाई मथुरादास के पास है। हरीराम ने कहा कि भला मथुरादास तो उनसे अलग है हाँ समधी साहिब के दो गाँव होंगे - पुरोहित ने कहा नहीं लालाजी यह क्या बात तुमने कही कहने को तो अलग ही हैं पर दोनों भाई एक ही हैं - एक दूसरे की बात को पचते हैं आप देखेंगे कि बड़ी धूमधाम से ब्याह होगा - फिर लाला साहिब बोले कि भला बारात हम कितनी लावें पुरोहित ने कहा जितनी तुम्हारे जी में आवे हमारे लाला के यहाँ क्या कमी है और हम लोग तो तुम्हारी जय मना रहे हैं आपके यहाँ ब्याह होने से हम लोगों को बड़ी प्रसन्नता है यह हम लोगों के भाग जागे हैं जो आपके यहाँ ब्याह दूसरे दिन पुरोहित और नाई तो विदा हुए अब तो लाला हरीराम को पुरोहित की बातें सुनकर यह धुन लगी कि ब्याह बड़ी धूमधाम से करना चाहिये और बारात भी जहाँ तक हो सके बहुत हो।

जब पुरोहित घर आए तो जमुनादास से यह कहा कि लालाजी तुम्हारी लड़की बड़े अमीर घर गई - लाला हरीराम वैसे तो अमीर ही हैं पर जी के बड़े उदार हैं - टीके के दिन उन्होंने बहुत रुपया खर्च किया। मैंने वहाँ के लोगों से सुना है कि उन्होंने बड़े भारी शाल दुशाले नाई बारियों को देने के वास्ते लिये

हैं और तुम भी उनके नाई वारी को देने का सोच करो और बारात भी अच्छी आवेगी। जमुनादास ने पूछा पुरोहित जी कुछ तुम से बातें भी हुई थीं - पुरोहित ने कहा कि हाँ लाला जी मुझसे इतना ही पूछा था कि लाला कैसे ब्याह करेंगे और हम कैसी बरात लावें सो समय देख कर मैंने कह दिया कि धर्म मूर्ति हमारे पास क्या है। कुएँ का पानी और पाँच बरतन और आप जानते हैं कि गरीबों के पास देने को क्या है जमुनादास ने कहा कि हाँ पुरोहित जी तुम तो आप बड़े बुद्धिमान हो। यही बात कहनी चाहिये थी जो तुमने कही लड़की वाले को यही कहना चाहिये - पर जमुनादास को भी पुरोहित की बातें सुनकर बड़ा संदेह हुआ और जी में कहने लगे कि अपनी लाज भगवान के ही हाथ है - पुरोहित और नाई ने - जमुनादास को संदेह में डूबा हुआ देखकर कहा कि लाला सोच की क्या बात है। भगवान सब बेड़ा पार लगा देगा तुम्हारे यहाँ क्या कमी है। सब कुछ भगवान ने दे रक्खा है और ब्याह तो किसी के रुके नहीं रहते। लड़की के यज्ञ में भगवान आप आकर सहाय करते हैं - जमुनादास ने कहा पुरोहित जी सच है भगवान का तो भरोसा है पर मैं जानता हूँ कि इस ब्याह में मेरा बहुत खर्च पड़ेगा मैं बिगड़ जाऊँगा - मथुरादास सच कहता था पर मैं क्या करूँ स्त्रियों की मति बिगाड़ती है अच्छा जो कुछ हुआ सो अच्छा हुआ जब ऊखली में सिर दिया तो मूसले से क्या डर है। अब तो जैसा होगा किये ही बनेगा -

यह कहकर जमुनादास उठ खड़े हुए और कपड़े पहन कर नन्हेमल साहूकार के पास गये और उनसे चार हज़ार रुपये बारह आने की मिति से लेने ठहराए दूसरे दिन कागज़ लिखा गया उसमें गाँव आड़ कर दिया और रिजिस्ट्री करा के चार हज़ार रुपये साहूकार से ले आए और उसी दिन से ब्याह का सामान करने लगे - ज़ियाफ़त के लिये नाना प्रकार के पदार्थ बनवाए - जो किसी बात में मथुरादास के कहने से हाथ थाम कर भी खर्च करना चाहते थे अपनी घरवाली के कहने से जो बड़ी उड़ाऊ थी और अपने नाम पर मरती थी नहीं मान्ते थे इससे सब बातों में रुपया बहुत खर्च हुआ - दान दहेज़ भी बढ़िया लिया गया - नाई बारियों के लिये भी शाल दुशाले लिये गये जब दिन ब्याह के आये तो लाला हरीराम भी बड़ी धूमधाम से बरात लाये सौ के अनुमान के लोग बरात में थे। जमुनादास ने बरात का आगातागा जैसा चाहिये वैसा किया और तीन रोटी बड़ी धूमधाम से दीं सब कमीनों को जी खोलकर कड़े और शाल दुशाले पहराए बड़े पछतावे की बात है कि जमुनादास ने इतना कुछ रुपया खर्च किया तब भी ब्याह में आदि से अंत तक मग्नता नहीं रही। एक जरासी बात पर जमुनादास के समधी बुरा मान गये तीसरी रोटी बड़ी नाह नुक्कड़ से खाई तो क्या खाई गर्मी से सब चीज़ें बिगड़ गई थीं इसलिये जमुनादास अपने जी में बहुत दुःखी थे पर लोगों ने जमुनादास से कहा कि सुनो साहिब यह ब्याह है। किसी न किसी बात पर क्लेश हुए बिना नहीं रहता तुम आपे को देखो तुमने यह अब तक बहुत अच्छा किया - तुम्हारी वाह वाह हो रही है - अभी लड़की की विदा भी न हुई कि चारों हज़ार रुपये खर्च हो गये। अब तो जमुनादास की आँखें खुलीं और सोचा कि जितना रुपया ब्याह के लिये सोच रक्खा था वह सब खर्च हो गया और अभी ब्याह के बहुतेरे टेहले होने रहे हैं - लड़की की विदा होनी रही है और सौ पचास रुपये इधर उधर के देने हैं - बहन-भानजी को विदा करना है अपने जी में जो विचार तो जाना कि सब काम पाँच सौ रुपये होते हैं। फिर साहूकार के पास दौड़े गये और कहा कि पान सौ रुपये हम को और चाहिये। उसने कहा कि अब तो नहीं है। दशपाँच दिन में ले जाना क्या बात है अब तो जमुनादास को बड़ा सोच हुआ। इसी सोच में थे। इतने में उनका कारिंदा रामस्वरूप गाँव की आमदनी के साथ सात सौ रुपये सर्कारी किस्त देने को लाया। जमुनादास ने अपने जी में सोचा कि यह काम तो अब इस रुपये से निकल जायगा। फिर ब्याह के पीछे दस पाँच दिन में उसी महाजन से रुपया लेकर सर्कारी किस्त दे देंगे। निदान जमुनादास ने बरात को

विदा किया और जो कुछ दान दहेज़ देना था सब दे दिया।।

राधा जब अपने सासरे गई तब उसकी उमर नौ वर्ष की थी इसलिये ससुराल वालों की लाज करने की तो समझ ही नहीं थी। सबके सामने मुँह खोले फिरा करती और जैसा दंगा अपने बाप के घर किया करती थी वैसा ही करने लगी - हिंदुओं में चाल है कि बेटे वाला चाहे जितना दान दहेज दे पर बेटे वाले की तर्फ की औरतें कहा करती हैं कि क्या दिया है यों ही लाला हरीराम के घर की औरतें दान दहेज़ की जिस चीज़ को देखतीं नाक भौं चढ़ाती थीं और ओह क्या दिया पर राधा सबको उत्तर देने लगी - राधा की यह चाल देखकर सब औरतें कहतीं कि तू तो बड़ी चंचल है तू कैसे निर्वाह करेगी पर सास ननद सब से यह कहतीं कि अभी बालक है इसके कहने का क्या बुरा मात्रा बड़ी होकर आप संभल जायगी - आठ दिन राधा सासरे रही फिर विदा होकर बाप के आई और सब नातेदारों को जमुनादास ने विदा कर दिया।

अब जमुनादास को यह सोच हुआ कि पानसौ रुपये जो गाँव की आमदनी के खर्च हो गये हैं इनका उपाय कर्के क्रिस्त देनी चाहिये इसलिये साहूकार के पास कई बार गये। पर वह रोज़ टाल देता - जब सरकार की क्रिस्त का बहुत तक्राज़ा हुआ और तहसील का चपरासी दर्वाज़े पर आ बैठा तब जमुनादास ने लाचार होकर अपनी बहू का जितना गहना था सब पानसौ रुपये बदले गिरवी रख दिया और सरकार की क्रिस्त दे दी - तब तो जमुनादास की बहू की भी आँखें खुलीं अब तक तो जमुनादास की बहू को यही भ्रम था कि जमुनादास के पास बहुत रुपया है क्योंकि औरतों को कुछ हिसाब किताब तो आता ही नहीं और न वह यह जानती हैं कि क्या घर में रोज़ खर्च होता है और क्या आता है और वह अपने जी में यही सोचती थी कि मुझसे उधार का बहाना किया है और यह सब रुपया जमुनादास ने अपने पास ही से निकाला है इस ब्याह में बहुत-सी औरतें और लड़कियाँ नाते रिश्तेदारों की जमुनादास के घर इकट्ठी हुई थीं। उन्मेंसे जो गंगा और किशोरी को देखता था मग्न होता था। इन लड़कियों पर ज्ञानो की एक वर्ष की बातों ने ऐसा गुण किया कि सचमुच पढ़ने लिखने से मनुष्य की बुद्धि बढ़ती है। गंगा और किशोरी ने बहुत-सा ब्याह का काम वही चतुराई से किया कि बड़ी बड़ी औरतें क्या करतीं उनकी उमर की लड़कियाँ तो चिबल चिबल करती इधर उधर फिरती थीं और इन दोनों को अपने काम से काम था - सबको समय पर पान बना देना - सबकी खाने पीने की सुध रखना सब चीज़ों को चौकस कर्के रखना कि कहीं कोई कुछ चुरान ले जावे और यह काम उनका ब्याह भर रहा - बड़ी बात अचंभे की गंगा ने यह की जिस दिन बरात आई थी उस दिन पानसौ रुपये जमुनादास ने अपनी बहू को सौंप दिये थे जब रुपये का काम पड़ता तो औरतों के कारण घर में न जाने पर गंगा से रुपये मँगवा लेते थे पर गंगा ने यह चौकसाई की कि जब रुपये अपनी ताई से लेकर जमुनादास को देती तो पूछ लेती कि ताऊ यह रुपये तुमने किस काम के लिये मँगवाये हैं और जो वह कहते तुरंत से एक कागज़ पर लिख लेती कि इतने रुपये उस काम के लिये दिये जब तक बरात विदा हुई यों करती रही - जब बरात विदा हुई तो जमुनादास ने अपनी बहू से पूछा कि अब तुम्हारे पास कितने रुपये रहे हैं उसने कहा मेरे पास पंधरह रुपये रहे हैं - इस रुपये के उठने का हिसाब तो जमुनादास को याद न रहा कि कहाँ कहाँ उठे और न उनकी बहू को पर जमुनादास के जी में अपनी बहू की तर्फ से यह भ्रम हुआ कि उसके पास रुपये बहुत बचे होंगे पर यह बतलाती नहीं है अब तक तो कभी जमुनादास ने ऐसा ध्यान भी नहीं किया क्योंकि जितनी आमदनी होती थी सब उनकी बहू के हाथ से उठती थी और आमदनी बहुत होती थी। कभी ध्यान करने को काम नहीं पड़ा। अब रुपये का तोड़ा हो गया था इसलिये उन्होंने बार बार पूछा और यह भी कहा कि भला तुमको कुछ याद है

कि मैंने तुमसे कब कब रुपये लिये और किस किस काम के लिये उसने कहा कि मैं क्या जानूँ जब गंगा माँगने आई मैंने दे दिये गंगा ही से पूछो उसे याद होगा तब जमुनादास ने गंगा से कहा कि बेटी तुम को याद है कि तुम मुझे कै बर रुपये दे आई हो और कितने रुपये दिये हैं उसने कहा कि हाँ ताऊ मुझे ज़बानी तो याद नहीं पर मैं एक कागज़ पर लिखती गई हूँ कहो तो बता दूँ जमुनादास ने कहा अच्छा बता दे। वह दौड़कर अपना हिसाब का कागज़ ले आई और जमुनादास को दे दिया। जमुनादास ने कहा कि बेटी नागरी तो मैं पढ़ नहीं सकता। तुम बोलती जाओ मैं उर्दू में लिखता जाऊँ। जमुनादास को अब गंगा ने सब हिसाब लिखवा दिया और जमुनादास ने रुपयों को जोड़ा तो जाना कि पंधरह रुपये ही बचते हैं और अपनी घरवाली से कहा कि तुम सच कहती थीं गंगा के हिसाब में भी पंधरह रुपये ही बचते हैं जमुनादास की घर वाली ने गंगा को बहुत प्यार किया और कहा कि बेटी तू ने अच्छा किया जो लिखती गई नहीं तो यह भ्रम तेरे ताऊ के मन से कभी दूर न होता। गंगा ने कहा कि ताई मुझे तो अपना डर था कि कहीं तुम्हारा भ्रम मुझ पर होता कि गंगा ने दो चार रुपये बीच में मारे हों जितनी स्त्रियाँ वहाँ बैठी थीं सब ने दाँतों तले ऊँगली दी और कहने लगीं कि गंगा बड़ी सचेत और चतुर लड़की है और इसने थोड़े दिनों में इतना कुछ पढ़ लिया कि लेखा जोखा लिखने लगी और यह भी कहने लगीं कि धन्य है इसके सच्चेपन को कि जिसके हाथ से पान्सौ रुपये उठे पर उसने एक रुपये पर भी आँख न डाली जो एक आध रुपया ले लेती तो कौन पूछता -

मथुरादास की बहू बोली मेरी लड़कियाँ मेरे कहे बिना एक पैसा तक नहीं छूतीं और जिनका स्वभाव बचपन में ही नहीं सुधरेगा। स्याने होने पर क्या सँभलेगा जमुनादास की दुलहन बोली हाँ बहन अच्छे भाग वालों की ऐसी ही लड़कियाँ होती हैं। हमारे से गए भाग किसी के न होंगे - हमारी राधा गंगा से एक ही वर्ष छोटी है पर इस्को काम धंधा करना तो अलग रहा बात करनी तक भी नहीं आती। इनसे तो मारे दिन पचगिटड़े और खेल खिलवालो मुझको बड़ा डर यह है कि देखिये सासरे कैसे कैसे नाम धरवायेंगी - और स्त्रियों ने भी अपनी अपनी लड़कियों से कहा कि - देखो गंगा की सी चतुराई सीखो। हम भी अपनी अपनी लड़कियों को ज्ञानो के पास पढ़ने को भेजेंगे मथुरादास भी अपनी लड़की गंगा की चतुराई और सच्चाई सुनकर बहुत मग्न हुए और गंगा से कहा कि बेटी आज से अपने घर का लेखा जोखा तू ही लिख और तू ही अपने हाथ से रुपया पैसा उठाया कर -

एक संदूकची मथुरादास ने बाज़ार से रुपये, पैसे रखने के लिये ला दी उसी दिन से गंगा अपने घर का लेखा जोखा लिखने लगी - जैसे बतलाया जाता था वैसे ही वह रुपये पैसे को काम में लाती और लिख लेती -

जब गंगा की अवस्था तेरह वर्ष की हो गई और चौधवाँ वर्ष लगा तो मथुरादास ने विद्याराम पुरोहित से कह कर कि गंगा के लिये लड़का ढूँडना चाहिये। विद्याराम ने कहा कि लाला जी एक लड़का तो मैंने ढूँड रक्खा है अभी मुझको जमुनादास ने आगरे भेजा था तो मैं एक लड़के का टेवा वहाँ से लाया था उससे गंगा की विधि भी मिल गई है अब आगे तुम्हारी पसंद रही मथुरादास ने कहा कि उसका हाल तो सुनाओ कि लड़का कैसा है और क्या अवस्था है और किस घर का लड़का है विद्याराम ने कहा कि लालाजी घराना तो देखाभाला है वही कुटुंब है जिसमें राधा ब्याही गई है और लड़का भी बहुत अच्छा लिखा पढ़ा और चतुर है और दस रुपये महीने का तहसील में नौकर है और अवस्था उसकी अठारह वर्ष की है --

लाला तुलसीराम जिनका वह लड़का है राधा के सुसरे हरीराम के कुटुंबी भाई हैं - मथुरादास ने

कहा कि लड़का तो तुमने अच्छा बतलाया पर मुझको यह बड़ा अचंभा है कि ऐसे घराने का लड़का इतना बड़ा क्यों कर हो गया क्या वह दूहेजू है विद्याराम ने कहा कि लालाजी दूहेजू तो नहीं है उसके बड़े हो जाने का यह कारण है कि एक तो उसके कुछ रुपया पैसा नहीं है उसका बाप बहुत दिनों से दस रुपये महीने का फ़ीरोज़ाबाद की तहसील में नौकर है उसीमें अपना घर चलाता रहा और लोगों की यह चाल है कि रुपये वाले को ढुँढ़ते हैं दूसरे लड़के की माँ सौतेली है। इसलिये कोई उस लड़के को पसंद नहीं करता पर हाँ अब उस लड़के का विवाह कहीं झटपट हो जायेगा क्योंकि अब लड़का नौकर हो गया है। हाँ लालाजी वह लड़का तुम्हारे घर के योग्य नहीं है। ऐसी उनकी क्या जीविका है जो तुम्हारी रीस करेंगे और तुम्हारे नाईनेगियों के पल्ले क्या पड़ेगा - मथुरादास ने कहा कि मैं इन दोनों बातों को कुछ नहीं समझता - महाराज रुपया पैसा किसी की जाति नहीं है आज है और कल नहीं घराना अच्छा चाहिये सो घराना तो उनका सैकड़ों में एक है। दूसरे लड़का पढ़ा लिखा और चतुर हो सो तुम कहते ही हो कि लड़का दस रुपये महीने का नौकर है और जो सौतेली माँ है तो क्या डर है और महाराज मैं जानता हूँ कि यह विवाह थोड़े खर्च में हो जायगा बड़े घर विवाह करने में कष्ट हो जाता है। देखो हमारे भाई साहिब ने बड़े घर में विवाह किया तो क्या फल पाया। वह गाँव जिस्से जन्म भर रोटियाँ थीं एक ही विवाह में दे बैठे - विद्याराम ने कहा कि हाँ लाला जी यह तो बड़ी बात है तुम पाँच छै सौ रुपये में निफ़राम हो जाओगे जो तुम्हारी इच्छा हो तो मैं जाकर बातचीत कर आऊँ। मथुरादास ने कहा कि आज घर में भी पूछ लूँ कल तुमसे कह दूँगा। मथुरादास मग्न होते हुए घर में आए और जहाँ ज्ञानो पढ़ा रही थी वहाँ गंगा की मा को बुलाकर कहा कि सुनो गंगा का वर घर बैठे बिठाए मिल गया। कुछ भी ढूँढ़ना न पड़ा। जहाँ राधा विवाही है उसी घराने में एक लड़का है अठारह वर्ष की उसकी अवस्था है और वह दस रुपये महीने का नौकर है और उसका बाप भी दस रुपये महीने का नौकर है और उस लड़के की मा सौतेली है। जो तुम्हारी मर्जी हो तो पुरोहित को बातचीत करने को भेज दूँ। विधि जन्म पत्री की मिल गई है। मथुरादास की बहू ने कहा कि मैं उस लड़के के साथ गंगा का विवाह न करूँगी। मथुरादास ने कहा भला क्यों उसने कहा एक तो उसका बाप दस रुपये महीने का नौकर है। वह बिचारा ब्याह में क्या करेगा। चार पाँच गहना भी मेरी लड़की को चढ़ावे में नहीं लावेगा - दूसरे लड़के की मा सौतेली है। बाप कुछ अपनी उमंग से करता भी तो वह न करने देगी और सदा का जिंजाल है - लड़की को सौतेली सासू कैसे हिये से लगावेगी - ज़रा ज़रा सी बातों पर उँगलियों पर नचाया करेंगी। मथुरादास ने कहा कि चलो बैठो तुम्हारी समझ भी देख ली तुम ऐसा क्या भर दोगी जो अमीर घर ढूँढ़ती हो जो गंगा के भाग में अमीरी है तो एक दिन अमीर हो जावेगी - आज को वह लड़का दस रुपये का नौकर है। कल को पचास रुपये का हो जावेगा और यह बात तो तुमको ज्ञानो ने पहले ही समझा दी है कि अमीर गरीब हो जाते हैं और गरीब अमीर - लड़की के विवाह के लिये अमीर गरीब नहीं देखना चाहिये केवल लड़के को अच्छा देख ले सो लड़का सब रीति से अच्छा है मथुरादास की बहू ने कहा कि राधा का विवाह कैसे धनवान घर हुआ रुपया तो बहुत उठा पर लड़की तो अमीर घर गई पानसौ रुपये का गहना तो चढ़ाने में आया और मैं जानती हूँ कि तुम्हारी लड़की में भी रुपया उतना ही उठेगा पर मुझको यह आस नहीं कि जो सौ रुपये का भी गहना चढ़ावे में आवे - मथुरादास ने कहा कि मैं कभी इतना रुपया नहीं उठाऊँगा मुझको क्या भाई साहिब की तरह घर को नीलाम करना है अभी क्या है जब भाई साहिब पार्वती का विवाह कर लें तब देखना कि क्या होता है एक गाँव तो जा ही चुका है। रहा दूसरा आधा गाँव पार्वती ले लेगी खाने तक को तरसने लगेंगे - जो लोग उनको सराहते थे वही उनको बुरा कहते हैं। जिन कमीनों ने राधा के विवाह में सौ सौ रुपये के जोड़े पाए

हैं वह पास न फटकेंगे मुझे नामवरी से कुछ प्रयोजन नहीं है मुझे अपने काम से काम है और जो तुमने यह कहा कि गंगा के लिये चढ़ावे में गहना सौ रुपये से बढ़ती न आवेगा और राधा को पानसौ से बढ़ती आया सो ठीक है पर मैं तुमसे पूछता हूँ कि राधा को भाई साहिब ने कितना गहना दिया मथुरादास की बहू बोली दो तीन सौ रुपये का गहना यहाँ से भी बना होगा। मथुरादास ने कहा तो सब गहना राधा के पास सात सौ रुपये का हुआ। सो मैं विवाह में तो पाँच छे सौ रुपये से बढ़ती नहीं उठाऊँगा पर गंगा को सात सौ रुपये का गहना अपने पास से बनवा दूँगा - गंगा पर राधा से बहुत गहना हो जावेगा - नाई, भाट, भिखारी और सोनार में बहुत-सा रुपया उठाने से क्या लाभ है। मेरी समझ मानो तो सगाई भेज दो फिर ऐसा लड़का नहीं मिलेगा मथुरादास की बहू बोली यह सब सही पर सास तो सौतेली है। मथुरादास ने ज्ञानो से कहा कि तुम इन को नहीं समझाती सौतेली सासू है तो क्या डर है क्या उसका विवाह कहीं नहीं होगा। ज्ञानो ने कहा अरी बहू सास का घर में तो नाम ही बदनाम है यहाँ तो सगी सासू नहीं मैं देखती हूँ कि बहुत से घरों में सगी सास बहुओं में नित लड़ाई रहती है जो तेरी गंगा में गुन होगा तो सौतेली सगियों से अधिक चाहेगी - मैंने यह देखा कि बिचारी सौतेली सासू को तो नाम निकल जाता है पर देखो तो बहुओं का दोष पाया जाता है। वह आते ही यह सोचने लगती है कि यह हमारी सौतेली सासू है। न उसका आदर सत्कार करती हैं न लज्जा और न उसकी बात मान्ती हैं और न उसके कहने में चलती हैं और आये गये से उसका झूठा दुखड़ा रोती है और यह तेरी लड़की गंगा बड़ी चतुर है। तू देखेगी कि यह अपनी सौतेली सास से कैसा निर्वाह करेगी। इसकी सौतेली सासू तो इसके पाँव धो धो पीवेगी। ऐसी चतुर पढ़ी लिखी बहू कहाँ मिलती है? वह सात जन्म धारेगी तो भी ऐसी बहू न पावेगी। सो इस बात का संदेह अपनी जी में मत कर मग्न होकर विवाह कर -

मथुरादास की बहू ने कहा कि अच्छा जो तुम्हारे लाला जी की यही इच्छा है सो ही करो। मेरा जी तो पतियाता नहीं।।

दूसरे दिन मथुरादास ने विद्याराम पुरोहित को बुलवाकर कहा - लो महाराज पक्की ठहर गई तुम आगरे जाओ निश्चय कर आओ पर पहले यह तो देखो विवाह कब तक सूझता है।। विद्याराम ने कहा कि मैंने अपने बड़े भाई से कल ही दिखलाया था। वह कहते थे कि आश्विन वदी अष्टमी का साहा बहुत अच्छा सूझता है और तुम जानते हो कि उनके समान एक दो ही पंडित शहर में हैं मथुरादास ने कहा कि जब बड़े महाराज ने बताया तो कुछ संदेह की बात नहीं है - जो लाला तुलजाराम अपने लड़के का विवाह मान लें तो सगाई करते आना और यह भी कहते आना कि विवाह भी इसी आश्विन वदि अष्टमी को पड़ता है विद्याराम पुरोहित नाई को साथ लेकर आगरे में लाला तुलजाराम के मकान पर गये। उसी दिन संयोग से लाला साहिब भी किसी छुट्टी में फ़ीरोज़ाबाद से मकान पर आए थे पुरोहित ने लाला जी ने कहा कि आप के लड़के की विधि लाला मथुरादास की लड़की से मिल गई है इसलिये हमारे लाला जी ने मुझको आपके पास भेजा है कि आप दया कर्के इस संबंध को ग्रहण करें। लाला तुलजाराम बोले कि कौन से मथुरादास पुरोहित ने कहा आप नहीं जानते कि आपके भाई लाला हरीराम तहसीलदार के समधी उन्होंने कहा कि उनके समधी का नाम तो जमुनादास है। पुरोहित कहा कि मथुरादास जमुनादास के सगे छोटे भाई हैं तब तो लाला तुलजीराम अपने जी में कहने लगा कि अच्छे घर का विवाह आया घर बैठे लक्ष्मी आई हमारा लड़का भागवान् है और उसके साथ यह भी सोचा कि हम उनके जोड़ के नहीं हम इतना रुपया कहाँ से लावेंगे जो उनकी बराबरी करेंगे और हम क्यों कर भाई हरी राम की सी बरात ले जावेंगे - और यह बात नेगियों के साम्हने कहने की नहीं थी इसलिये यह तय किया कि हमको इतनी दूर

विवाह करना अंगीकार नहीं। यह सुनकर पुरोहित जी लाला हरीराम को बुला लाए और उनसे कहलवाया तब लाला तुलजाराम ने कहा कि अच्छा मैं अपने घर में तो पूछ लूँ और घर में जाकर यह सब हाल कहा। उनकी बहू ने कहा कि दान दहेज तो बहुतेरा आवेगा पर उस घर की लड़कियाँ चंचल हैं। तुलजाराम ने कहा कि भला तुम लड़कियों को क्या जानो तुम यहाँ वह आठ दिन के रस्ते पर उसने कहा कि मैंने हरीराम के बेटे की बहू को देखा था। वह बड़ी चंचल और खिलंदड़ी भी है उसकी आँखें चारों तरफ़ चलती हैं। यहाँ आठ दिन रही एक दिन को भी निचली न बैठी सो यह लड़की भी तो उसी की बहन है। तुलजाराम ने कहा कि प्रथम तो लाला हरीराम के बेटे की बहू की अवस्था नौ वर्ष की थी। अभी से बिचारी का हाल क्या जाने कैसी है। सब लड़कियाँ खेल की दिवानी होती हैं। अभी वह लज्जा करना क्या जाने। दूसरे लाला मथुरादास अपने भाई जमुनादास से अलग रहते हैं और मुझसे उनके पुरोहित यह भी कहते थे कि यह लड़की पढ़ती लिखती है। मुझे निश्चय यह है कि यह लड़की बहुत चतुर होगी - तुलजाराम की बहू बोली फिर और तो कोई बात बुराई की नहीं है। यह सुनकर लाला तुलजाराम बाहर आए और कहने लगे कि लो पुरोहित जी हम को भाई हरीराम के कहने से कुछ नाँह नहीं हमें यह संबंध अंगीकार है। तब पुरोहित ने कहा कि कल का मुहूर्त सगाई के लेने को अच्छा है दूसरे दिन पुरोहित ने लड़के के टीका कर दिया और खा पीकर विदा के समय लाला तुलजाराम से कह दिया कि लाला जी आश्विन वदि अष्टमी का विवाह होगा और मेरठ में आकर मथुरादास से वहाँ की सब बातें कहो। मथुरादास तो बड़े चतुर थे। उन्होंने सोचा कि लाला तुलजाराम के नाँह करने का कारण यह होगा कि उनको यह संदेह हुआ होगा कि मैं हरीराम का-सा विवाह क्यों कर सकूँगा इसलिये मथुरादास ने विवाह से दो महीने पहले एक चिट्ठी अपने समधी को लिखी।।

चिट्ठी

सिद्धश्री लाला तुलजाराम जोग लिखी मेरठ से मथुरादास और बाल गोपाल की राम राम वंचना। यहाँ कुशल है वहाँ की सदा भली चाहिये। आगे समाचार एक वंचना जी जो दया अपने मुझपर कर्क कृतार्थ किया उसका गुण कहाँ तक बखानूँ। जिस दिन से आपके यहाँ संबंध हुआ है उसी दिन से मेरा जी आपसे मिलने को बहुत चाहता है। परंतु क्या कीजिये हिन्दुओं की चालके विपरीत विवाह से पहले आप से मिल नहीं सक्ता जो अपने जी की बात आप से कहूँ यद्यपि बहुत से लोग विवाह से पहले चिट्ठी पत्री लिखने को भी बुरा जानते हैं परंतु मैं बहुत-सी मूर्खता की चाल पर चलना नहीं चाहता हूँ। इसलिये यह चिट्ठी आपको लिखता हूँ और अपने जी की बातें आप पर खोलता हूँ - मुझको इस बात से बड़ी मग्नता हुई कि मैंने और आपने सरकारी स्कूल में पढ़ा लिखा है इसलिये मेरे और आपके एक ही से विचार होंगे क्योंकि एक ही थैली के बट्टे हैं मैंने सुना है कि कोई कोई मूर्ख और हिये के फूटे लोग आपको यह भड़का रहे हैं कि जो तुम लाला हरीराम का सा विवाह न करोगे तो तुम्हारी नाक जड़ से कट जायगी - यह तो मुझे निश्चय है कि आप किसी के भड़काने में नहीं आवेंगे और सब काम अपनी समझ से करेंगे तो भी मैं अपने विचार आप तक पहुँचाना चाहता हूँ - मैं वित्त से बाहर खर्च करने को अच्छा नहीं जान्ता। मैं कभी इस विवाह में अपने भाई जमुनादास का सा खर्च न करूँगा और यों तो आजकल ईश्वर की कृपा है मुझको भाई जमुनादास से कम मक्रदूर नहीं है और न मैं यह चाहता हूँ कि आप अपने भाई लाला हरीराम की रीस कर्क क्रज्जदार हो जावें - भड़काने वालों का क्या बिगड़ता है जिसका बिगड़ता है उसीका बिगड़ता है उनके तो इन्हीं बातों में गहरे होते हैं - हमारे भाई जमुनादास के इस विवाह में साढ़े चार हज़ार रुपये खर्च हुये भला बतलाइये तो उसमें से कितना रुपया समधी साहिब के यहाँ पहुँचा मेरी

समझ में तो एक हजार रुपये का माल भी समधी साहिब के हाथ न लगा होगा - कुछ तो जौनार में उठा कुछ नाई, चारी, भाट भिखारियों में लुटा - लाला हरीराम साहिब का भी तीन चार हजार रुपये से क्या कम खर्च हुआ होगा। भला यह तो बतलावें कि इसमें से बहू को कितने का गहना बनवाया - उनका सब रुपया निकम्मी बातों में उठा - कुछ तो आतशवाज़ी में फुका कुछ बागवाड़ी में लूटा और कुछ रंड़ियाँ और भाँड ले गये - कुछ नाई वारियों के घर गया निदान दोनों दो दिन की वाह वाह के लिये लुट बैठे। आप ऐसा विचार कभी न कीजिये - बहुत सी बारात लाने से क्या होगा उसका रस्ते में आगा तागा लेना भारी पड़ जाता है और सब बराती झींकते हैं जो थोड़ी सी बरात होगी तो आप बरातियों की ले दे अच्छी तरह से कर सकेंगे - बागवाड़ी का बरात में कुछ काम नहीं जाने यह बुरी चाल किसने निकाली थी जब लुटती है तब सब यही अपशब्द मुँह से निकालते हैं कि उसकी बागवाड़ी लुट गई और इसके उपरांत लुटने के समय लड़ाई झगड़ा हो जाता है - मैं तो नाच तमाशे और आतशबाज़ी को भी निरर्थक जानता हूँ पर जो आप का जी चाहे तो बरातियों के जी लगने के लिये एक दो तायफा बहुत हैं - आतशबाज़ी थोड़ी होनी चाहिये। भंडेलों को कभी न लाना क्योंकि यह लोग समाज में मुँह से बकनी बातें निकाला करते हैं कि भले मनुष्य सुन कर घबराने लगते हैं लाला प्यारे लाल साहिब रईस गोपालपुर ज़िले शाहाबाद जो प्रत्येक जाति के विवाहों का अपरिमितव्यय का प्रबंध करते हैं यहाँ भी आए थे मुझको उनका प्रबंध बहुत अच्छा लगता है और वह आगरे में भी गये थे और वहाँ भी उन्होंने प्रबंध किया है। सो मैं उनके प्रबंध के अनुसार पान सौ रुपये से अधिक विवाह में न लगाऊँगा और मुझे भरोसा है कि आप भी उसी प्रबंध पर चलेंगे - यश बहुत रुपये खर्च करने से नहीं मिलता और विवाह में मग्नता कुछ बहुत रुपये खर्च करने से नहीं होती यह तो आपके मेल मिलाप से होती है। आपने अच्छी तरह देख लिया है कि इतना रुपया भाई जमुनादास और उनके समधी लाला हरीदास ने खर्च किया परंतु विवाह में कैसी मन चली रही वह क्या करें कुछ हिन्दुओं में ऐसा ही प्रचार हो गया है कि ब्याह में बेटे वाला चाहता है कि किसी तरह बेटी वाले की हँसी और बेटी वाला बेटे वाले की हँसी चाहता है और दोनों में ज़रा सी बात पर मन चली हो जाती है। यह नहीं सोचते कि जब हम दोनों में संबंध हुआ तो एक के अपयश से दूसरे का अपयश होता है और उचित यह है कि एक दूसरे की प्रतिष्ठा को और यश को बनावें और दोनों में प्रतिदिन स्नेह बढ़ता जावे - इस विवाह में मेरी बड़ी प्रार्थना यही है कि जैसे हो सके मेरे आपके बीच में मनचली न हो और कोई बात बिरादरी के पंचों के विपरीत भी न होने पावे जो आप मुझे इस चिट्ठी का उत्तर लिखेंगे तो मैं आपकी बड़ी दया समझूँगा।।

जब यह चिट्ठी लाला तुलजाराम के पास पहुँची तो लाला साहिब इस चिट्ठी को पढ़ कर बड़े ही मग्न हुए और अपने जी में कहने लगे कि जो मेरा विचार था सो भगवान ने पूरा किया और उसी समय चिट्ठी का उत्तर लिखा।।

उत्तर

सिद्धिश्री लाला मथुरादास जोग लिखि आगरे से तलजाराम और राम गोपाल की राम राम वंदना। आगे समाचार यह है कि यहाँ भगवान की कृपा से क्षेम कुशल है आपकी क्षेम कुशल सदा भली चाहिये। आगे चिट्ठी आपकी आई पढ़कर बड़ी मग्नता हुई। मेरी सम्मति आपके अनुकूल है मेरा विचार पहले से ही था कि अपने लड़के का विवाह लाला प्यारेलाल साहिब के प्रबंध के अनुसार करूँ और वित्त से बाहर पैर न धरूँ और जिस समय आपका पुरोहित सगाई लेकर आया था सो उससे केवल इसीलिये नाँह की थी कि कदाचित आपकी सम्मति मुझसे विरुद्ध हो मैं यह नहीं जानता था कि आपने भी सरकारी स्कूल में

पढ़ा है जो आपका पुरोहित आप के इस विचार को मुझे बता देता तो मैं पहले ही प्रसन्न होकर संबंध कर लेता और कुछ लाला हरीराम के कहने की आवश्यकता न पड़ती - सच ही लोग मुझे भड़का रहे थे कि यह विवाह प्रबंध के अनुसार मत करो लाला हरीराम का सा विवाह करो - मैं तो उन मूर्खों के कहने सुने से बह भी गया था पर अब मैं आपकी चिट्ठी आने से अपने विचार पर पक्का हो गया - नए प्रबंध के अनुसार विवाह करूंगा और वित्त समान खर्च करूंगा - आपने जो जो हानि विवाहों में बहुत रुपया उठाने से लिखी है वह सब ठीक है - लाला हरीराम जो बहुत सी बारात ले गये उसका उनको भी वह फल मिला जो अपने अपनी चिट्ठी में लिखा - उनसे बारात का आगा-तागा जैसे चाहिये थे न लिया गया इससे उनकी आगरे में बड़ी हँसी हो रही है - बारातियों में से कोई कहता है कि ईश्वर ऐसी बारात में कभी न ले जावे हम तो रस्ते में भूके मरे कोई कहता है कि लाला ने बारात में बड़ी ख़ाक उड़ाई बारातियों को रस्ते में पान तमाकू तक न मिला निदान जो जिसके जी में आता है कहता है कि इसके सिवा कई बैरियों ने साहिब कलक्टर से कह दिया कि हरीराम तहसीलदार खुला खुली रिश्वत लेते हैं जो रिश्वत न लेते इतना रुपया लड़के के विवाह में उठाने को कहाँ से लाते - यद्यपि लाला हरीराम कभी रिश्वत नहीं लेते और पाप की कौड़ी से दूर भागते हैं पर साहिब कलक्टर को उनकी तर्फ से भ्रम हो गया है और उनसे अप्रसन्न हो रहे हैं देखिये इसका क्या फल मिलता है - भगवान ने चाहा तो मैं कोई ऐसा काम न करूंगा जिसे हँसी हो और जब मेरी और आपकी सम्मति एक है तो परमेश्वर की कृपा से थोड़े ही खर्च में वह आनंद रहेगा जो औरों को हाथ नहीं लगता और न किसी प्रकार की आपसमें मन चली होने पावेगी - मैं तो अच्छी तरह जानता हूँ कि बहुत से मूर्ख जो आगा पीछा नहीं सोचते मुझे और आपको उँगलियों पर नचावेंगे परंतु इस बात को मैं कुछ नहीं गिनता - मैं तो इस बात से बड़ा मग्न हूँ कि हम तुम दोनों आगे को औरों के लिये सीधी डगर पर चलाने वाले और वृथा व्यय से रोकने के लिए दृष्टान्त बनेंगे और निश्चय है कि आगे को और लोग भी मेरी और आपकी देखा देखी अपने लड़के और लड़कियों का विवाह यों ही करेंगे मथुरादास इस चिट्ठी को पढ़कर बड़े मग्न हुए और अपने जी में कहने लगे कि अब यह विवाह बहुत थोड़े खर्च में यश और प्रसन्नता के साथ हो जावेगा। फिर घर में जाकर गंगा से पूछा कि बेटी ढाई तीन वर्ष तुम को खर्च उठाने और हिसाब किताब लिखते हुए बताओ तुमने अब तक कितना रुपया बचाया - गंगा ने कहा कि चाचाजी थोड़ा बचा हो वा बहुत कुछ इसमें मेरी चतुराई नहीं है क्योंकि मैं तो केवल हिसाब किताब लिखती रही हूँ वा जिस किसी को माँ ने बतलाया अपने हाथ से दे दिया वा जितने की जो वस्तु मँगाई वह मैंने मंगवा दी और रुपये पैसे के कम और बहुत उठाने का माँ के सामने मुझे क्या अधिकार था मथुरादास ने कहा कि अच्छा अपने हिसाब से यह तो बताओ कि घर में कितना रुपया इन तीन बरसों में बचा होगा गंगा अपना हिसाब का कागज़ उठा लाई और हिसाब देख कर कहने लगी कि पहले वर्ष में तुमने कई बार करके ग्यारह सौ पच्चीस रुपये घर में दिये। उसमें से उस वर्ष आठ सौ अठतीस रुपये उठे और दूसरे वर्ष बारह सौ सत्तावन रुपए आए। उनमें से एक हजार पंधरह रुपये खर्च हुए और इन नौ महीनों में सात सौ रुपये तुमने दिये हैं उनमें से अब तक पान सौ तेरह रुपये उठ चुके हैं। इस हिसाब से घर में बचे होंगे - 207, 242 279 सब सात सौ सोलह रुपये घर में बचे होंगे - मेरे हिसाब से तो इतने ही बचते हैं और जो कहीं और उठे होंगे वह माँ जानती होगी। मैं क्या जानूँ गंगा की माँ बोली कि नहीं री मैंने और कहीं एक रुपया भी नहीं उठाया है जहाँ कहीं उठा वह सब मैंने तुमको लिखवा दिया और यह कहकर उस संदूकची को जिसमें बचा हुआ रुपया था उठा लाई और जब मथुरादास ने वह रुपये गिने तो छै सौ छियानवे रुपये हुए। मथुरादास बोला इसमें तो हिसाब से बीस रुपये कम हैं। गंगा बोली कि कम

नहीं हैं वह बीस रुपये मेरी संदूकची में हैं। आज ही माँ ने मुझको रोज़ के खर्च के लिये दिये थे - मथुरादास ने अपने जी में बड़ा अचंभा किया कि तीन हजार रुपये का हिसाब गंगा ने तीन वर्ष में लिखा और एक रुपये की भूल भी न पड़ी क्योंकि त्यों जो हिसाब से निकले वही बचत में निकले मथुरादास ने गंगा से कहा कि दूसरे वर्ष में बहुत खर्च उठा बताओ तो किस बात में बहुत उठा - उसने कहा एक तो उस वर्ष अनाज बहुत महँगा रहा दूसरा सौ रुपये का गहना भी बना है - मथुरादास ने अपने घर में कहा कि सात सौ रुपये यह हैं और तीन सौ रुपये पहले के मेरे पास हैं ऐसा प्रबंध करो कि सब खर्च विवाह का इसी में हो जावे एक कौड़ी भी किसी से उधार नहीं लिया चाहता मथुरादास की बहू ने कहा कि तुम्हारे भाई ने तो चार हजार रुपये उठाए तुम एक हजार में ही विवाह करोगे इसी पर तुम कहते थे कि सात सौ रुपये का गहना गंगा के लिये बनवा दूँगा। मुझे इस्से क्या जैसा तुम्हारे जी में आवे वैसा करो। मुझे सौ रुपये अलग निकाल दो औरतों के जितने टेहले और नेग होते हैं वह सब सौ रुपये में करूँगी और बिरादरी में भाजी बाँटने को तो बहुत रुपया चाहिये हाँ नाते रिश्तेदारों में भी बाँट दूँगी। मथुरादास ने कहा कि हजार रुपये से सात सौ रुपये गहना बनाने को सुनार को दिये देता हूँ और तीन सौ रुपये में ज़ियाफ़त और दान दहेज सब हो जावेंगे और अनाज पात गाँव से आ जावेगा। तुम देखोगी कि कैसी हँसी खुशी विवाह होता है। अब तुम यह बताओ कि क्या गहना बनेगा वह सुनार से कह दिया जाय - मथुरादास की बहू ने कहा कि पाँव के गहनों में पायज़ेब - छड़े, झाँवर - कंठी, पायल - बिछवे - अनवट - जँजीर - अँगूठड़े - गपान और हाथों और बाहों के गहनों में नौगरी - करधनी - छन - पछेली - वाजूवन्द - जोशन - नौनगे - आसी - छल्ले - पोरवे - और गले के गहनों में - पचलड़ा - सतलड़ा - चंपाकली - चंदनहार - मोहनमाला - और कानों और सिर और नाक के गहनों में वालियाँ - वाले - पत्ते - झूमके - करनफूल - नथ - भोगली - झूमर - वन्दीवेना - बनवाने चाहिये -

मथुरादास ने सात सौ रुपये अपनी गली के सुनार को गहना बनाने के लिए दिये और रहे सहे रुपये विवाह की सामग्री को रखे और अपनी बहू से कहा कि बरात में सौ आदमियों से अधिक न आवेंगे और सौ आदमी और हो जावेंगे इसलिये इसी अनुमान से सब सामग्री इकट्ठी करनी चाहिये और जो जो सौदा बाज़ार से आवे उसका हिसाब अलग लिखवाती जाना मथुरादास की बहू ने कहा कि गंगा तो अब हिसाब नहीं लिखेगी वह बड़ी लज्जावती लड़की है भला अपने विवाह का हिसाब किताब आप कैसे लिखेगी तुम नहीं जानते हिन्दुओं में ऐसी ऐसी बातों में लड़कियाँ बड़ी शर्म करती हैं - कोई लड़का और लड़की अपने विवाह का काम नहीं करता और गंगा सी शर्मीली लड़की तो भला क्यों करने लगी है - मथुरादास ने कहा कुछ डर नहीं अब तो तुमको भी हिसाब लिखना आ गया है न। तुमही लिख लिया करना उसने कहा कि मुझे विवाह के कामों में इतनी छूट कहाँ होगी कि जो हिसाब भी लिखती जाऊँगी। मथुरादास ने कहा कि किशोरी भी तो हिसाब किताब लिखना सीख गई है उससे लिखवाना और अब मेरी समझ में सब हिसाब किशोरी लिखा करे क्योंकि अब गंगा सासरे जायेगी। देखिये कब आवे और फिर भी आना जाना लगा ही रहेगा उसी समय मथुरादास ने किशोरी से कहा कि बेटी आज से घर का हिसाब तुम लिखा करो। किशोरी बोली कि गंगा बहन तो अब उर्दू में लिखने लगी थीं मुझसे तो अभी उर्दू में नहीं लिखा जायेगा तो तुम कहो तो नागरी में लिख लिया करूँगी। मथुरादास ने कहा कि बहुत अच्छा। हम नागरी में ही देख लिया करेंगे निदान उसी दिन से घर का हिसाब किताब किशोरी को सौंपा गया और उसी दिन से विवाह का काम काज होने लगा - आश्विन वदि अष्टमी को बरात आई और उसी दिन के फेरे हुए विवाह और जौनार आदि में बड़ी मग्नता रही किसी प्रकार की आपस्म में मनचली नहीं हुई - विदा

के पहले जब गंगा का वनड़ा घर में आया तो छोटी-छोटी लड़कियों ने उसे घेर लिया इसलिये राधा, पार्वती और बिरादरी की लड़कियाँ जो वहाँ थीं सब दूल्हे के पास आई और हँसी ठट्ठा करने लगी पर किशोरी ऐसी शर्माती थी उसने अपने बहनोई से एक बात हँसी की नहीं कही अपनी ओढ़नी सँभाल सँमूल नीची निगाहों में बहनोई को देख गई फिर एक थाल में गर्म गर्म पूरियाँ, कचौरियाँ और कई तरह की तरकारियाँ, मिठाइयाँ और तरह तरह के अचार मुरब्बे और रायते बहनोई के आगे रखकर औ एक लोटा पानी और गिलास पास को सरका दिया और नीचा सिर किये हुए हौले से कहा कि लो जीजाजी प्रसाद पाओ - गंगा के वनड़े ने मारे शर्म के कुछ उत्तर न दिया तो उसकी सास ने कहा कि यह तो इस वक्त दस्तूर होता है - जो भूक न हो तो मुँह जुठला लो जब तक दूल्हे ने खाया तब तक किशोरी एक पान का बीड़ा बना लाई और नीची निगाहों से बहनोई को दे दिया - और अलग खड़ी हो गई - और लड़कियों से उनकी माँ कहती थीं कि अरी तुम क्या चिचल चिचल कर रही हो किशोरी को नहीं देखती कि अपना सिर नीचे किये हुए अलग खड़ी है - फिर थोड़ी देर के पीछे गंगा विदा हुई - उस समय गंगा बहुत रोई जितनी स्त्रियाँ वहाँ खड़ी थीं सब रोने लगीं और किशोरी भी बहुत रोई विदा के एक दिन पहले ज्ञानो ने गंगा को अलग बिठाकर यों समझाया था कि बेटी मैं तुम से बहुत प्रसन्न हूँ। तुम पर मेरे पढ़ाने लिखाने और समझाने का बहुत अच्छा गुण हुआ - जो मैंने कहा सो तू ने किया - जितना काम तू यहाँ करती थी वह सब चतुराई से करती थी जो तुमको देखती थी वह तुमको सराहती थी और मैं निश्चय जानती हूँ कि तेरे सासरे वाले भी तेरी प्रशंसा करेंगे पर ध्यान रखिये कि यहाँ और वहाँ के रहने में बड़ा अंतर है - सासरे में एक और ही तरह रहना सहना पड़ेगा। यहाँ तो कुछ समय तेरा बचपन और खेल कूद में कटा और कुछ पढ़ने लिखने में और कुछ घर के काम काज में जो लड़कियों के करने का होता है। पर बड़ा भारी जीवन तो तुमको वहाँ तेरे करना होगा यहाँ कोई तुम्हारा किसी बात में दोष नहीं निकालता या जो काम तुम करती थी वह सब को अच्छा लगता था - जो कभी कोई बात तुमसे मूर्खपन की भी निकल जाती वा कोई काम बिगड़ जाता था तो सब यही कहते थे कि अभी बालक है - सासरे में जितने लोग होंगे सब तुम्हारे दोष ढूँढेंगे - कोई तुम्हारी चाल को देखेगा कि बहू क्योंकि ऐसे चलती है - कोई तुम्हारे दुपट्टे को देखेगा कि बहू ने क्योंकि आँचल डाला - कितना घूँघट निकाला और उट्ठक, बैठक कैसी है - जब खाने का खाओगी तब सब तुम्हारे मुँह को ताकेंगी कि कितना मुँह खोला और कितना बड़ा गस्सा खाया सो इन बातों का ध्यान रखना - जहाँ बैठो नीची नज़र किये हुए बैठी रहना - अपने आप से खाने को न माँगना और जब कोई रोटी वा किसी और वस्तु के खाने को कहे तो उसके खाने में इतना हठ न करना जिस्से वह अप्रसन्न हो जावे - बेटी जब वहाँ जाओगी तो सारे मुहल्ले और भाईचारे की स्त्रियाँ तुम्हारे देखने को आवेंगी उन्में से कोई तुम्हारे मा को टट्टे से गाली देंगी कोई तुम्हारे यहाँ के दान दहेज़ को बुरा बतलावेंगी तुम कभी उलटकर उत्तर न देना जोई कोई हँसी की बात हो तो खिल खिलाकर न हँस देना। बेटी जैसे तुम यहाँ मेल मिलाप से रहती थी वैसी ही वहाँ भी मेल मिलाप से रहना, लड़ाई भिड़ाई, झगड़े, टंटे से मन दुखी होने के सिवा और कुछ हाथ नहीं लगता - सारा जीवन आपके झगड़े में जाता रहता है - बहुधा सास बहुओं में नहीं बना करती है सो तुम इस्का भली भाँति ध्यान रखना कि सदा बहू ही का दोष होता है - सासरे जाते ही आजकल की लड़कियाँ यह चाहने लगती हैं कि हम अपना अलग घर बसावें। देखो मावाप ने अपने बेटों को पाला है और यह आस कर रहे थे कि हमने बुढ़ापे में हमारी टहल करेंगे - तो यह बात उनको क्योंकि न बुरी लगेगी और क्योंकि न आपस्में लड़ाई झगड़ा होगा जो बहू कुनबे में मिलकर रहे और सास कभी यह न जाने कि बहू मेरे लड़के को मुझसे छुड़ाना चाहे

है तो कभी उन्हें मनचली न होगी और यह सब जानते हैं कि किसी के सासू ससरे सदा नहीं बैठे रहते हैं अंत को अकेले घर वाले ही के साथ निर्वाह करना होता है - बहुत सी लड़कियाँ सासरे की ज़रा ज़रा सी बात मा के कान में फूँका करती हैं और उनकी माँ भी खोद खोद कर सारी बातें पूँछा करती हैं पर इन बातों से आपसमें मन चली होने के सिवा और कुछ हाथ नहीं लगता - बहुत सी लड़कियाँ ऐसी होती हैं कि सासरे में उनके लिये कैसे ही अच्छे अच्छे पदार्थ बनाए जायँ पर वह अपनी अकड़ में उसको देख कर नाक भौं चढ़ा लेती हैं और कितना ही अच्छा कपड़ा उनके लिए बनाया जाय तो भी उसको ठोकरों से ठुकराया करती हैं इन बातों से सासरे वालों को बहुत दुःख होता है सो बेटी गंगा तुम इन बातों का बहुत ध्यान रखना - सदा प्रत्येक वस्तु को मग्न होकर खाइयो और जो कपड़ा बने उसको बड़ी उमंग से पहनियो यह तो तुम्हारा स्वभाव है कि तुम बहुत बक बक तो नहीं करती हो पर वहाँ जाकर इतनी चुप भी न साधना कि जो अभिमान समझा जाय किसी वस्तु को सास और सुसरे से तुम आप मत माँगना क्यों कि माँगने से हलकापन होता है उनको आप तुम्हारा ध्यान रहेगा - बेटी गंगा तेरा विवाह स्थानेपन में हुआ इस लिये गौने की रीति भाँति भी अभी भुगत जायगी इसमें मैं जानती हूँ कि तेरे सासरे वाले तुझे दो तीन महीने तक विदा नहीं करेंगे और तुमको पहले ही पहल बहुत दिनों वहाँ रहना होगा इसलिये और थोड़ी-सी बातें तुमको समझाती हूँ यह बातें ऐसी हैं कि मा बाप मारे लज्जा के अपनी लड़कियों को नहीं समझा सके जो उनकी सखी सहेलियाँ चतुर हों तो समझा दें सो पत्थर पड़ें आजकल सखी सहेलियों पर अच्छी बातों की जगह बुरी बातें सिखा दिया करती हैं और आप भी किया करती हैं - उन बिचारियों का भी कुछ दोष नहीं जैसी उनको कोई सीख देता है वैसे ही वह सीखती हैं - पढ़ी लिखी नहीं जो उन्हें समझ हो - बेटी तुमको सोचना चाहिये कि पुरुष और नारी में क्या संबंध है - पुरुषों का पद भगवान ने स्त्रियों से बड़ा रक्खा है - शास्त्र में लिखा है कि जहाँ तक हो सके स्त्रियाँ अपने पुरुषों की टहल करें और उनके आधीन रहें उन की सम्मति के विरुद्ध काम करना अपना जन्म भ्रष्ट करना है, देखो धर्म शास्त्र के 185 वें श्लोक का यह तात्पर्य है कि मदिरा पान करना - खोटों की संगति- पति से वियोग - इधर-उधर फिरना - कुसमय सोना - दूसरे के घर रहना यह छै बातें स्त्रियों के लिए बुरी हैं स्त्रियों का बड़ा धर्म वही है कि अपने पुरुष के कहने में चलें किसी बात में उनसे हठ न करें - यह भी लिखा है जहाँ तक हो सके अपने पुरुष की टहल करें यही स्त्रियों का पूजन और पाठ नित्य नियम है और धर्म है इससे स्त्रियों को बैकुंठ प्राप्त होता है अरी प्यारी गंगा तुम अपने पति से मेल मिलाप रखना जिस्से जीवन भर प्रसन्न रहेगी अब तुमको यह जानना चाहिये कि मेल मिलाप किन किन बातों से उत्पन्न होता है याद रखो कि स्नेह केवल इसी बात से नहीं होता कि स्त्री पुरुष से प्रेम करे क्योंकि ऐसी कौन सी है जो अपनी पति से प्रीति न करती हो और मुख्य कर हिन्दुओं की स्त्रियाँ कि वह बिचारी तो पुरुष से ही अपना राज सुहाग समझती हैं अपने जीवन को कुछ भी नहीं समझती - यहाँ तक कि जो कोई मरती हो तो और स्त्रियाँ कहती हैं कि ओह स्त्री मरी ही भली - मर्द के पैर की जूती है एक टूट गई दूसरी आ जायगी भगवान औरतें सब की मरें किसी का मर्द न मरें तो इससे बढ़ कर प्रीति और क्या होगी कि अपने प्राण तक पुरुषों पर हार देती हैं तिस्पर भी मैं बहुतेरे घरों में देखती हूँ कि स्त्री और पुरुषों में मिलाप नहीं होता नित नई लड़ाई रहती है पुरुष आपको खिंचता है और स्त्री आपको खिंचती है - मेल मिलाप रखने की लिये कुछ बातें बहुत आवश्यक हैं - पहले अपने पुरुष का आदर सन्मान रखना - दूसरे उसको सदा बड़ा समझना यह बड़ी अज्ञानता की बात है कि स्त्री अपने पुरुष को अपने समान जाने - तीसरे अपने पीहर की कोई ऐसी बात जिस्से अपना बड़प्पन जाना जाय पुरुष के सामने न कहे कि वह उसको सुनकर

अप्रसन्न हो - बहुत सी मूर्ख स्त्रियों का यही चलन है कि अपने पीहर का बड़प्पन कह कर अपने पुरुषों को उलहना देती हैं और उनको तुच्छ जानती हैं मुझको याद है कि लाला करोड़ीमल की बहू ने किसी बात पर अपने पति से कहा कि तुम्हारी क्या पीरी है तुम से तो मेरे बाप के यहाँ नौकर हैं उस समय करोड़ीमल के काटो तो बदन में लोहू नहीं रहा और उन्होंने उसी दिन से बोलना छोड़ दिया और जब वह पीहर चली गई तो बहुत दिनों तक नहीं बुलाया और जीते-जी जी की गाँठ न खुली-चौथे बहुत-सी स्त्रियाँ आपसमें बैठकर झूठी सच्ची बातें बनाया करती हैं कोई कहती है कि मेरा बनड़ा मुझको इतना प्यार करता है कि मेरा कहना जरा नहीं टालता और जो मैं कहती हूँ वही होता है कोई कहती है कि मेरा वनड़ा तो बड़ा सीधासादा है मैं कुछ करूँ मुझ से एक बात भी नहीं कहता और कोई कहती है कि मैं बड़ी हठीली हूँ जो मुँह से निकालती हूँ करके छोड़ती हूँ फिर चाहे घर जाय वा रहे घर फूँक तमाशा देखती हूँ - बहुत सी अज्ञान इस झूठ को सच जान जाती हैं क्योंकि इन्में गाँठ की समझ तो होती ही नहीं है जैसा सुन्ती हैं वैसा ही करने लगती हैं और यह नहीं समझती कि जैसे हमने झूठी सच्ची कही हैं दूसरियों ने भी वैसी झूठी कही हैं और बैठे बिठाए अपने पति से मन चली और लड़ाई कर बैठती हैं। बेटी गंगा तुम इन बातों का बहुत ध्यान रखना और कभी ऐसी बर्ताव न बर्तना जिस्से आपसमें मन चली हो तुम पढ़ी लिखी और बड़ी बुद्धिमान् लड़की हो जो बात कहियो बुराई भलाई पहले सोच ली जो और सदा ऐसा काम कीजियो जिस्से तुम्हारा वनड़ा तुम से प्रसन्न रहे - कभी झूठ न बोलियो - कभी कोई काम अपने पति से छिपाकर न कीजियो - कोई भेद उससे न छिपाना क्योंकि झूठ बोलने से और कोई काम छिपाकर करने से और भेद छिपाने से यह हानि है कि जब उन्में से कोई भेद खुल जाता है तो जी फट जाता है फिर जी मिलना दूबर पड़ जाता है - बेटी गंगा मैंने जो सीख दी हैं उनको कभी न भूलना जा तेरा राज सुहाग बना रहे - ज्ञानो की सब बातें गंगा ने जी लगाकर सुनीं और अपने पल्ले गाँठ बाँधी और लाज के मारे कुछ उत्तर न दिया पर रौने लगी किशोरी भी अपनी बहन के पास बैठी हुई यह सब बातें सुन्ती रही जब गंगा बिदा हुई तो उसके सुसराल वालों ने गौने की रीति भाँति वा पट्टा फेर भी करा लिया।।

जब गंगा अपने सासरे पहुँची तो सारे मुहल्ले और भाईचारे की स्त्रियाँ उसके देखने को आई जिस किसी ने गंगा को देखा उसके रंग-ढंग देख कर बड़ाई की और तुलजाराम की बहू से कहतीं कि आज दिन तो तुम्हारी बहू औरों की बहूओं से लाख दरजे अच्छी है कलकी भगवान जाने। अब हम गंगा का हाल कि उसने अपना समय क्यों कर बिताया फिर लिखेंगे।। गंगा के विवाह से तीन वर्ष के पीछे मथुरादास ने अपनी छोटी लड़की किशोरी का विवाह दिल्ली में लाला ललता प्रसाद के लड़के साथ कर दिया जितना रुपया गंगा के विवाह में लगाया था उतना ही रुपया किशोरी के विवाह में लगाया और जितना गहना गंगा को बनवा दिया था उतना ही किशोरी को बनवा दिया - किशोरी के विवाह में गंगा अपनी सुसराल से आ गई थी इसलिये किशोरी की माँ को कुछ काम विवाह का न करना पड़ा - जितना काम विवाह में पड़ता है वह सब अकेली गंगा ने कर लिया और सब बातों में उसकी वाह वाह रही।।

जमुनादास जब राधा के विवाह से निचंत हुए तब राधा की मा से कहा कि अब ऐसा प्रबंध करना चाहिये कि साहूकार को हर फ़सल पर क्रिस्त के छै सौ रुपये पहुँच जाय करें तीन वर्ष के पीछे पार्वती का विवाह करना होगा जो जब तक साहूकार की कौड़ी कौड़ी चुक जायगी तो पार्वती के विवाह में फिर उधार लेने को जगह हो जायगी राधा की माँ ने कहा कि मैं क्या जानूँ कि कितना देना है और किस्का देना है तुम चाहो सारी आमदनी साहूकारों को दे दिया करो मुझे तुम्हारे देने से कुछ प्रयोजन नहीं मेरा गहना जो तुमने उतार कर आड़ रख छोड़ा है पहले उसको छुटा दो और जो तुम यह कहते हो कि कहारी

और ब्राह्मणी को छुटावें और मैं चूल्हा फूँकू सो मुझसे तो चूल्हा फुकता नहीं जमुनादास ने कहा कि कहारी और ब्राह्मणी में ऐसा क्या खर्च पड़ता है जो छुटा देवें घर का चलाना और ही बात है क्या मथुरादास के यहाँ कहारी और ब्राह्मणी नहीं हैं क्या उनका खर्च तुम्हारे खर्च से कम है पर उनकी घर वाली का प्रबंध बहुत अच्छा है - उनके यहाँ सब चीज़ों में वर्कत होती है और हमारे यहाँ किसी चीज़ में नहीं होती जमुनादास की घर वाली ने कहा कि जो वर्कत नहीं होती तो क्या मैं सिर दे माँरू ऐसे पौरष कहाँ से लाऊँ जो छप्पर सिर पर धर लूँ मैं तो नित नई बीमार बनी रहती हूँ तुमको अपने घर के प्रबंध की पड़ रही है निदान जमुनादास ने बहुतेरा चाहा कि किस प्रकार साहूकार का रुपया चुक जाय पर दो वर्ष तक एक कौड़ी भी साहूकार के यहाँ नहीं पहुँची - तीसरे वर्ष राधा के सासरे वालों ने गौने को कहा के भेजा तब तो उनको एक और संदेह खड़ा हुआ - इधर उनकी घर वाली गहने के लिये नित घर में लड़ाई रखती थी - जमुनादास ने हार कर उसी साहूकार से कहा कि भाई एक हजार रुपये हमको और चाहिये लड़किका गौना होने को है - पिछले बरसों में ऐसे खर्च लगे रहे कि जिस्से तुम्हारे पास कुछ रुपया न पहुँच सका अगले महीने क्रिस्त पहुँचती रहेगी - साहूकार को भला रुपये देने में क्या था उसने तो सात हजार रुपये का गाँव समझ लिया था कहने लगा कि अच्छा लाला जमुनादास पहिला हिसाब कर लो और जो कुछ और आपको चाहिये लेकर सबका एक कागज़ लिख दो और इसमें उस्का यह भेद था कि आज का ब्याज भी मूल में लग जाय -

जब जमुनादास ने हिसाब किया तो सात सौ बीस दो वर्ष के ब्याज के हुए - साहूकार ने कहा कि लाला जी सात सौ बीस रुपये दो वर्ष के ब्याज के हुए दो सौ अस्सी और ले लीजिये और पूरे पाँच हजार का कागज़ लिख दीजिये तब जमुनादास ने कहा कि हमारा काम इतने में तो किसी तरह नहीं निकल सक्ता निदान बड़ी लल्लो चप्पो से 780 रुपये और लिये और साढ़े पाँच हजार का कागज़ लिख दिया। उन्में से छै सौ रुपये मूल और ब्याज के देकर गहना छुड़ाया और रहे आगे 280 रुपये सो राधा के गौने में लगा दिये जमुनादास की घरवाली ऐसी काहे को थी जो एक कौड़ी उधार में जाती। बातों ही बातों में दो वर्ष और बीत गये पार्वती का विवाह सिर पर आया देखा तो हाथ पल्ले क्या रक्खा था और साहूकार भी और रुपया काहे को दिवाल था - हार कर आधा दूसरा गाँव गिरवी रखना चाहा तो किसी साहूकार ने तीन सौ रुपये से बढ़ती नहीं आँका हार कर पान सौ रुपये को वह आधा गाँव दे डाला और पार्वती का विवाह जैसे बना पान सौ रुपये से मुजफ़्फ़र नगर में लाला बिहारी लाल के लड़के के साथ कर दिया - उस विवाह के पीछे सारे शहर में जमुनादास की बड़ी लोग हँसाई हुई (इस जगह यह कहावत क्या ठीक बैठती है कि अपना मरण जगत् की हाँसी) सब यही कहते थे कि पहले लाला ने बढ़ावे में आकर बड़ी लड़की के विवाह में चार पाँच हजार रुपये लगा दिये और यह नहीं सोचा कि आगे भी हमसे दूसरा विवाह ऐसा ही बनेगा वा नहीं - बिचारे मथुरा दास ने तो बहुत समझाया था कि ऐसे बढ़कर मन चलो पर लाला ने णेक न मानी - मनुष्य को चाहिये कि वह काम करे जो सदा को निभ जाय - यह बात तो मथुरादास ने भी कही कि क्यों भाई साहिब आप तो कहते थे कि पान सौ रुपये में विवाह हो ही नहीं सक्ता सो अब पार्वती का विवाह आपने पान सौ रुपये में क्योंकर किया। जमुना दास ने कहा कि भाई तू सच कहता था मेरी समझ में तो तेरा कहना आ गया था पर स्त्रियों की कुमति में आकर गाँवों के गाँव खोए और लोग हँसाई हुई सो अलग रही। देखो भगवान अब क्यों कर निर्वाह करेगा।।

जब साहूकार के ब्याज के हजार रुपये और हो गये तो उसने रुपये माँगे जमुनादास के पास देने को क्या रक्खा था हार कर साहूकार ने नालिश कर दी और डिगरी करा कर गाँव का नीलाम करा

लिया। उस गाँव के नीलाम में साहूकारी का पैसा भरा जमुनादास के पल्ले एक कौड़ी भी नहीं पड़ी - अब तक तो जमुनादास का निर्वाह उस गाँव से होता चला जाता था अब केवल पच्चीस रुपये महीने की प्राप्ति रह गई तब जमुनादास ने सवारी भी दूर कर दी तो भी खर्च का पोत पूरा न हुआ - आज तक जमुनादास ने अपनी नौकरी बड़ी सच्चाई से की एक कौड़ी भी कभी रिश्वत की नहीं ली परंतु अब केवल तनख्वाह ही थी और खर्च करने के स्वभाव बिगड़ गये थे तो जमुनादास की नियत रिश्वत की तर्फ़ डुली और लेने लगे पर सब जानते हैं कि रिश्वत अनीति से कब तक काम चल सकता है बुरे काम का फल तो बुरा ही होता है एक न एक दिन भेद खुल ही जाता है उनके रिश्वत खाने की ख़बर साहिब कलक्टर को पहुँची और उसी में जमुनादास को नौकरी से दूर कर दिया फिर तो उनकी यह दुर्दशा हुई कि ईश्वर किसी की न करे थोड़े दिनों तक तो अपने घर का गहना पाता बर्तन भाँडे आदि बेच बेच निर्वाह किया जब कुछ पास न रहा तो खाने तक को तर्सने लगे जिस किसी को उधार माँगते वह बहाना कर देता और जी में कहता कि मैं इनको देकर क्या लूँगा अब न कोई नौकर रहा न चाकर केवल जमुनादास और उनकी घरवाली और छोटी लड़की रह गई सो दोनों को रोटी मिलना भी कठिन हो गया जब मथुरादास ने देखा कि अब भाई साहिब रहने की हवेली भी बेचकर खा जावेंगे और इसमें मेरी भी बड़ी बदनामी होगी तब मथुरा दास ने दस रुपये महीना अपने भाई का कर दिया और कह दिया कि भाई जैसे हो सके इसीमें निर्वाह करो इस हवेली को कभी न बेचना नहीं तो मेरी और आपकी बड़ी हँसी होगी।।

अब हम गंगा का हाल फिर लिखते हैं कि इस पढ़ी हुई लड़की ने कैसे कैसे घर को चलाया और कैसे मेल मिलाप से इतने कुनबे के साथ निर्वाह किया।।

जिन दिनों गंगा का विवाह हुआ था उन दिनों कुछ लाला तुलजाराम के घर अमीरी तो थी ही नहीं बिचारे अपने चलन से रोटी कपड़े से खुश थे एक कहारी जिसका नाम भानो था चौका बर्तन के लिये नौकर थी और वही बाज़ार हाट का काम भी कर दिया करती थी और रोटी टुकड़े आदि का काम उनकी घरवाली कर लिया करती थी - जब गंगा सासरे गई उसके चार दिन पीछे गंगा का वनड़ा सीताराम दस रुपये से पंधरह रुपये का उसी तहसील में नौकर हो गया इसलिये गंगा की सास आए गये से यह कहती कि मेरी बहू ऐसे पैरों आई कि इसके आते ही मेरे लड़के की तनख्वाह बढ़ गई - गंगा का यह नियम था कि जब घर के लोग सब सो जाते तब सोती और सबसे पहले उठकर हाँथ मुँह धोकर सासू की खाट के पास जा बैठती और जब सास की आँख खुलती - उसके पैरों पड़ती और हाथ मुँह धोने को पानी देती और पान तमाखू खाने को लगा देती - उसका जीतो बहुत चलता था कि घर का काम काज रोटी पानी किया करूँ पर उसकी सासू नई नई आने के कारण कारण उसको किसी काम में हाथ नहीं लगाने देती थी - और यह कहती कि बहू अभी तुमको काम से क्या है हो जायगा जो तू काम काज करेगी लुगाइयाँ कहेंगी कि बहू के आते ही सास ने पीढ़ा सँभाला और बहू को काम में लगा दिया इसलिये गंगा अपना घूँघट काढ़े हुए सारे दिन दालान में बैठी रहती वा जब सासू घर के काम काज से निचंत होती तो सासू उसको अपने पास ले बैठती - जो कोई नई औरत घर में आती वह उसका घूँघट उठाकर मुँह देखती पर गंगा किसी की तर्फ़ आँख उठाकर नहीं देखती चाहो कितनी औरतें आकर तुलजाराम की बहू से बातें कहतीं पर गंगा कभी मुँह से बात न निकालती चुप बैठी रहती सासू के कहने से पान बना देती - कभी कोई औरत कह उठती कि बहू क्या तेरी मा ने तुझको गूँगे का माँ खिलाया है जो तू नहीं बोलती तो उसकी सास कहती कि इसका स्वभाव बहुत बोलने का नहीं है यह तो ऐसा शर्मीली है कि कभी कोई बात समझे भी तो नहीं कहती और फिर यह कहती कि चलो यह तो अच्छा है, बहुओं को बहुत बोलना नहीं

चाहिये अभी क्या है जब बोलने का समय आवेगा बोल लेगी - इसलिये सब औरतें अपने अपने घर उसकी बड़ी बड़ी बड़ाई करती और कहती कि तुलजाराम के बेटे की बहू बड़ी लजवन्ती है हमने उसका मुँह तो देखा पर उसने आँख भर नहीं देखा नहीं तो आजकल की बहूओं की यह रीति है कि जब उनका मुँह देखो तो वह देखने वाली का पहले देख लेती हैं हम पहर भर बैठी रहीं हमारे सामने उसने एक बात तक न कही।।

गंगा ऐसी ही लाजवन्ती लड़की थी कि लज्जा से कभी पानी पीने तक को नहीं माँगती थी जब तक सास रोटी न खा लेती तब तक आप रोटी न खाती जब कभी नाते वा गली मुहल्ले की लड़कियाँ उसके पास आतीं तो उनसे बहुत बातें न करती और कुछ बातें करती भी तो सीने पिरोने की करती और उनसे कहती कि तुम अपना सीना पिरोना तो मुझे दिखाओ देखूँ तुम कैसा सीती हो।

उसके एक सौतेली ननद पाँच वर्ष की थी जिसका नाम जयदेई था वह उसके पास बहुत बैठ रहा करती थी। जयदेई को दो तीन गुड़ियाँ बना दीं और उन गुड़ियों के ओढ़ने पर कई कई तरहके फूल काढ़ दिये - उन गुड़ियों को लेकर जयदेई अपनी मा के पास दौड़ी गई और कहने लगी कि देखतो मा भावी ने कैसी सुंदर गुड़ियाँ मुझको बना दी हैं गंगा की सास उन गुड़ियों को देखकर बहुत अपने मन में प्रसन्न हुई और जयदेई से पूछा कि गुड़ियों के ओढ़ने का कपड़ा तू कहाँ से लाई - उसने कहा कि उस दिन मैंने जाली का ज़रासा टुकड़ा तुझसे नहीं लिया था - उसकी मा ने कहा कि वह तो सादी जाली थी उसपर बेल बूटे तो भावी ने काढ़ दिये हैं उसकी मा ने कहा अरी चल ऐसी बेल बूटे काढ़ने कहीं सहज धरे हैं - सच बता तू यह कपड़ा कहाँ से लाई - किसीका चुरा तो नहीं लाई जिसका लाई हो उसका दे आ नहीं तो मारते मारते हड्डियाँ अलग कर दूँगी - जयदेई रौने लगी और कहा कि तेरी सौगंद मैंने किसीका कपड़ा नहीं चुराया है तुम चाहो भावी से पूछ लो उसकी मा ने बहू से पूछा कि यह क्या तूने काढ़ दिया है - बहू ने कहा कि हाँ यह बीबी जयदेई एक सादा जाली का टुकड़ा अपनी गुड़ियों के ओढ़ने के लिये लाई थीं उसपर मैंने बेल बूटे साधारण काढ़ दिये हैं तब उसकी सास को मन को निश्चय हुआ और जाना कि बहू सीने पिरोने और बेल बूटे काढ़ने में भी बड़ी चतुर है और कहा बहू जो तू दुपट्टा काढ़ ले तो सादी जाली बाज़ार से मंगवा देंगे। गंगा बोली अच्छी तो बात है मेरा ठाली बैठे जी भी नहीं लगता है निदान उसी दिन से गंगा सीने पिरोने में लगी - दिन भर जाली पर बेल बूटे काढ़ा करती थी और जब उससे जी उचट जाता तो अलग बैठ कर कोई अच्छी पुस्तक पढ़ने लगती।।

जयदेई अपनी गुड़ियों को लिये लिये गली में जहाँ जाकर खेला करती थी कह आई देखो यह कैसी सुंदर गुड़ियाँ हमारी भावी ने हमको बना दी हैं - जिसने वह गुड़ियाँ देखी उसने बहुत बड़ाई की यों ही कहते सुनते सारे मुहल्ले में इस बात की चर्चा फैल गई कि तुलजाराम के बेटे की बहू सीने पिरोने में भी बड़ी चतुर है - सीताराम के बराबर के लड़के उससे कहा करते कि हमारे घर में सब औरतें तुम्हारी बहू की यही बड़ाई करती हैं और कहती हैं कि बड़ी लाजवन्ती और चतुर है भाई तुम बड़े भाग्यवान हो जो तुमको ऐसी चतुर और पढ़ी लिखी स्त्री मिली है - सीताराम यह बातें सुनकर जी ही जी में मग्न होता और गंगा से दिनों दिन अधिक प्रीति करता।

वर्षभर तक गंगा यों ही रही सही फिर थोड़ा बहुत घर का काम भी करने लगी - कभी कभी सास के पास बैठकर रात को पूरियाँ बेल देती और कभी आप ही उतारने लगती कभी कोई तरकारी बना लेती - जिस दिन गंगा कोई तरकारी बनाती वह बड़ी स्वादु बनती सब उँगलियाँ चाटते रह जाते।।

विवाह के पीछे अब तक तुलजाराम घर नहीं आए थे अब बड़े दिन की छुट्टियों में फ़ीरोज़ा बाद

से घर आए और उन्होंने आते ही अपनी घरवाली से पूछा कि कहो बहू कैसी है। कुछ तुम्हारी भी टहल करती है वा नहीं सीताराम की माने कहा कि जैसी अच्छे घराने की बहुएँ होती हैं वैसी ही है - और सीने पिरोने में भी बड़ी चतुर है जो घर का काम करती है सब सुघड़ाई से करती है - मैंने आजतक उससे रोटी नहीं कराई वह तो नित रोटी करने को कहती है पर मैं कहती हूँ कि अभी से क्या उससे रोटी कराऊँ हाँ तर्कारी पूरियाँ तो उससे करा लेती हूँ सो ऐसी अच्छी और स्वादु बनाती है कि खाओगे तो जानोगे कि ऐसी तरकारी हुआ करती है वह बिचारी मेरी टहल तो ऐसी करती है कि क्या कोई बहू करेगी - एक दिन लाला तुलजाराम अपने और सीताराम के कपड़ों के लिए कपड़ा बाज़ार से लाए और सीताराम से कहा कि जाओ दर्जी को बुला लाओ कपड़े व्यौतवा दें पर किसी ऐसी दर्जी को लाना जो इसी छुट्टी में बना देवे मैं कपड़े अपने साथ ही ले जाऊँगा सीताराम की मा ने कहा कि तुम्हारी बहू तो ऐसी अच्छा सीती है कि क्या कोई दर्जी सीएगा और यह कहकर झट उसका सिला हुआ दुपट्टा उठा लाई और कहने लगी कि देखो कौन-सा दर्जी इससे अच्छा सी देगा। तुलजाराम ने कहा कि सच्चो ही यह दुपट्टा तो बहुत अच्छा सियाँ हुआ है पर मर्दाने पकड़ों का व्यौतना कठिन है सास ने बहू से पूछा कि बहू तुझको मर्दाने कपड़ों का भी व्यौतना आवे है उसने कहा कि हाँ आता तो है भाई जी से कहो कि पहले कोई कपड़ा सिलवा कर देख लें जो अच्छा सिले तो और कपड़े सिलवायें नहीं तो दर्जी से सिलवा लें और जो कपड़ा सिलवायें उसके साथ बना हुआ कपड़ा भी लेती आना कि मैं उसे देख कर ब्यौत लूँगी - तुलजाराम ने पहले अपना कुरता सीने को दिया और दोगज़ नैनू जो सदा दर्जी को दिया करते थे दिया और कहा कि बहू से कह देता कि जितना नीचा यह कुरता है इतना ही नीचा कुरता बनेगा। गंगा ने जो ब्यौत लगाया तो सास से कहा कि यह कपड़ा तो बहुत है इस्मेंसे तो आठ गिरह बचेगा तुम भाई जी से फिर तो पूछो कहीं इससे बड़ा कुरता बनवाना तो नहीं चाहते हैं तुलजाराम ने कहा कि नहीं नहीं इससे बड़ा नहीं बनवाना चाहते सदा जितना कपड़ा दर्जी लेता था उतना ही बाज़ार से लाया हूँ बहू ब्यौत में भूली होगी गंगा यह सुनकर चुपकी हो गई और तीन घंटे में वह कुरता सी दिया और आधगज़ कपड़ा बचा हुआ फेर दिया - उस कुरते को देखकर तुलजाराम बड़े मग्न हुए और सीताराम की माँ से कहने लगे कि हमसे सदा दर्जी एक कुरते में आधगज़ कपड़ा बढ़ती ले जाता था अच्छा बहू से वही हमारे यह दो अंगरक्खे और सिलवा दो हमको जल्दी जाना है और रहे सीताराम के कपड़े सोदर्जी से सिलवा दिये जायेंगे वह तो घर ही रहता है जब चाहेगा दर्जी से ले लेगा - सीताराम की माँ बोली कि क्या सीताराम के कपड़े बहू नहीं सीलेगी उस बिचारी का तो ठाली बैठे जी भी नहीं लगता मेरा तेरा काम करती रहती है - गली मुहल्ले की सब लुगाइयाँ इसे घेरे रहती हैं। कोई कहती है मुझको गोट कतरनी नहीं आती यह मेरी गोट कतर दे कोई अपने लड़के का अंगरक्खा कतर वाने आती है - और कोई छोटा कपड़ा किसी का कुछ सी देती है और किसी का कुछ - दो महीने में सादी जरी का दुपट्टा ऐसा काढ़ा है कि जो देखा भर चाहिये जा जयदेई अपनी भावी से जा वह दुपट्टा तो माँग ला जब जयदेई उस दुपट्टे को अपने बाप के पास ले आई तो वह उसको देखकर अचंभे में रह गये और कहा कि जो अपनी भावी को मेरी तर्फ़ से शाबाश कह दे और तू भी अपनी भाभी से सीना पिरोना और बेल बूटे काढ़ना सीखा कर।।

निदान जितना कपड़ा लाला तुलजाराम लाए थे वह सब गंगा को दे दिया और उसने बड़े दिन की छुट्टी में चार अंगरक्खे और चार पैजामें सी दिये और दो गज़ कपड़ा बचा लिया। तुलजाराम ने सीताराम की मा से कहा कि देखो गुण ऐसा होता है जो बहू को सीना पिरोना आता था तो दो रुपये सिलाई के बच रहे और डेढ़ रुपये का कपड़ा बच रहा बैठे बिठाए साढ़े तीन रुपये की बचत हो गई।।

ज्यों ज्यों सास और सुसरे गंगा की वड़ाई करते त्यों त्यों सीताराम मग्न होता - जब लाला तुलजाराम ने बहू के हाथ का ब्यालू खाया तब सीताराम की मा से कहा कि बहू तो बहुत अच्छा ब्यालू बनाती है पर यह तुम्हारे भागों में है हमारा क्या है छटे छमास् आए तो आ गये क्या करें इस बुढ़ापे में भी हमें नौकरी करनी पड़ी जो सीताराम की नौकरी चालीस पचास रुपये की भी हो जाय तो हम पिनशन लेकर घर बैठें - तुलजाराम तो आठ दिन रहकर फिरोज़ा वाद को चले गये पर उस दिन से गंगा ने सीताराम को बड़ा मग्न देखा एक दिन गंगा ने कहा कि भाई जी के आने के पीछे तुम बहुत मग्न दिखाई देते हो इसका क्या कारण है सीताराम कहा नहीं तो गंगा ने कहा तुम कहो वान कहो मैं तो जान गई - सीताराम ने कहा बताओ क्या जान गई गंगा ने कहा कि उस दिन भाई जी नहीं कहते थे कि कहीं हमारे लड़के की नौकरी चालीस वा पचास रुपये की लग जाय तो हम पिनशन लेकर घर बैठें सो मैं जानती हूँ कि वह तुम्हारी चालीस क्या पचास रुपये की नौकरी का उपाय कर गये हैं सीताराम ने कहा नहीं-नहीं तुम्हारी सौगंद यह बात नहीं है गंगा ने कहा कि जब तुमने यह कहा कि यह बात नहीं है तो इसमें यह जाना जाता है कि कोई और बात है अब तुम वही बात बताओ सीताराम ने कहा कि सच तो यह है कि जब मैं किसी के मुँह से तुम्हारी बड़ाई और उपमा सुन्ता हूँ तो मैं प्रसन्न होता हूँ और जब से लाला जी ने तुम्हारी प्रशंसा की है मैं बहुत ही मग्न हूँ और जब तक मेरे मा बाप तुमसे प्रसन्न रहेंगे मैं भी तुमसे प्रसन्न रहूँगा मैं जानता हूँ यह सब गुण तुम में पढ़ने लिखने का है पछतावा है कि तुमने नागरी पढ़ी उर्दू नहीं पढ़ी और मुझको नागरी नहीं आती नहीं तो कोई अच्छा अखबार वा पुस्तक रात को हम तुम दोनों पढ़ा करते गंगा ने कहा कि मैंने इतनी उर्दू तो अपने चाचा से पढ़ ली है कि अखबार पढ़ लूँ और कुछ हिसाब किताब भी उर्दू में लिख लूँ - मेरे चाचा तो घर का हिसाब किताब मुझ से ही लिखवाया करते थे हाँ जैसी नागरी आती है वैसी उर्दू नहीं आती जो तुम चाहोगे और आ जायगी तब तो सीताराम बहुत मग्न हुए और उसी दिन से नित अखबार लाते और दोनों रात को पढ़ा करते और जब सीताराम ने यह देखा कि गंगा से यह पूछा कि मैं दो वर्ष से इस तहसील में नौकर हूँ बड़ी कठिनाई से पाँच रुपये बढ़े हैं - नौकरी तो ऐसी है कि जो मैं रिश्वत लेना चाहूँ तो पचास रुपये महीना पड़े पर मुझसे लाला जी ने कह दिया है कि तुम कभी रिश्वत न लेना - भगवान् की दया से किसी तरह का खाने पीने में दुःख नहीं है पर मुझको इस बात से बड़ा संकोच होता है कि जो लोग मेरी बराबर तनख्वाह पाते हैं वह मुझसे अच्छा कपड़ा पहनते हैं और सवारी भी रखते हैं और मैं पैदल घिसटता जाता हूँ जो तुम्हारी मर्जी हो तो मैं भी रिश्वत लिया करूँ लाला जी से नहीं कहूँगा। गंगा ने कहा हैं तुम ऐसा विचार कभी न करना मेरे ताऊ पच्चीस रुपये महीने के नौकर थे जब तक उन्होंने रिश्वत नहीं ली अच्छे भले को नौकरी करते रहे जब वह खर्च की तर्फ से बढ़े इसी रिश्वत के लेने से उनकी नौकरी जाती रही और साहिब सुन कर बड़े अप्रसन्न हो गये सब दिन चोर के तो एक दिन साह का भी होता है जो कभी हाकिम तक यह चर्चा पहुँचा तो नौकरी बात की बात में जाती रहेगी और फिर कहीं नौकरी नहीं लगेगी हाँ तुमको यह नौकरी नहीं करनी है तो छोड़कर कहीं दूसरी जगह ढूँढ़ लो पर बैठे बिठाए लगी हुई जीविका को छोड़ना बहुत बुरी बात है छुटी हुई जीविका फिर लगनी चाहिए और जो तुम यह कहते हो कि लालाजी से नहीं कहूँगा सो यह भी समझ में नहीं आता कि जो लाला जी तक चर्चा न पहुँचे जो ऐसा करोगे तो लालाजी का मन बहुत दुःखी होगा भला मेरी समझ तो स्त्रियों की सी है पर लाला जी ने तो कुछ जी में सोच कर रिश्वत लेने को नाह की है इसके सिवा रिश्वत लेना शास्त्र के भी विरुद्ध है - भला यह तो बताओ कि तहसील में कोई और भी ऐसा है जो रिश्वत नहीं लेता है - सीताराम ने कहा कि तहसीलदार के सिवा और सब रिश्वत लेते हैं गंगा ने कहा

कि तो तुम्हारी तनख्वाह बहुत जल्दी बढ़ेगी यह नहीं हो सका कि तुम्हारी रिश्वत न लेने की चर्चा हाकिम तक न पहुँची हो और औरों के रिश्वत लेने के समाचार उन तक न पहुँचे जब कभी अवसर हाथ आवेगा तो तुम्हारी तनख्वाह बहुत बढ़ जायगी मैं तो यही कहूँगी कि संतोष करो ईश्वर का ध्यान मन में रखो वह चाहेगा तो सवारी भी हो जायगी जिनके पास सवारी नहीं होती तो वह क्या नहीं जीते - सुख से रोटी कपड़ा मिल जाय तो यह क्या थोड़ा है - गंगा की बातें सीताराम के जी में चुभ गई और सीताराम का जी तो डगमगाही गया था सो संभल गया - चार महीने भी न बीतने पाए थे कि जैसा गंगा ने कहा था वैसा हुआ तहसीलदार सीताराम की सच्चाई को भली भाँति जानते थे जब कभी साहिब कलक्टर के पास जाते तो उसकी योग्यता और सच्चाई की बड़ाई करते।।

एक बार वहाँ के पेशकार पर रिश्वत की नालिश हुई - पूछ गछ के पीछे उसकी रिश्वत लेनी खुल गई - तब साहिब कलक्टर ने पेशकार को दूर करके चार वर्ष को कैद में भेजा और उसकी जगह तहसीलदार के कहने से सीताराम को कर दिया - गंगा ने सीता राम से कहा कि क्यों मैं जो कहती थी देखो जब भगवान देता है तो छप्पर फाड़ कर देता है - उसी दिन सीताराम ने अपने बाप को इस बात की चिट्ठी लिखी और यह भी लिखा कि आपका मनोरथ पूरा हुआ अब आप पिनशन ले लेवें और घर चले आवें और अपनी मासे कहा कि कोई ब्राह्मणी रोटी करने के लिए नौकर रख लो अब क्यों रोटी करने का दुःख पाओ और अपने चढ़ने के लिए घोड़ा लिया और गंगा से कहा कि हम चाहते हैं कि एक कहार नौकर रख लें और भानो को छोड़ा दे वही कहार भीतर बाहर का सब काम कर लिया करेगा - गंगा ने कहा कि कहार रखने में यह बुराई है कि जब घर में आकर काम करेगा तो परदा करने का बड़ा बखेड़ा होगा और कहार का घर में आना भी अच्छा नहीं है मेरी सीख मानो तो कोई लड़का अपने हुक्के पानी के लिये नौकर रख लो और भानो को दूर न करो - घर में जितने मनुष्य होते हैं सबका भाग होता है क्या भानो का भाग नहीं है और बचपन से यहाँ रही है और सदा तुम्हारी बढ़ोत्तरी चाहती रहती है अब जब तुम्हारी तनख्वाह बढ़ी तो उसको दूर करते हो तब सीताराम ने एक लड़का अपनी टहल के लिये नौकर रख लिया और ब्राह्मणी भी रोटी करने के लिए रख ली - लाला तुलजाराम भी पिनशन लेकर अपने घर बैठे - एक दिन गंगा की सास ने गंगा से यह कहा कि बहू घर के खर्च का कुछ पता नहीं लगता इतना रुपया आता है न जाने कहाँ जाता है पचास रुपये सीताराम की नौकरी के आते हैं और पाँच रुपये तेरे सुसरे की पिनशन के आते हैं ऐसा कुछ लंबा चौड़ा गृहस्त नहीं और तू देखती है कि मैं कुछ उड़ाऊ भी नहीं हूँ अपने बहुतेरा हाथ खेंच कर खर्च करती हूँ - सीताराम के सिवा कोई बहुत अच्छा कपड़ा भी नहीं पहरता जैसा चलन का कपड़ा होता है सब को बन्ता है - तीज़, त्यौहार के सिवा और कोई एक ब्याह भी अभी तक इस आमदनी में नहीं हुआ - मेरा सोच मुझी को चरे जाता है जो कोई दूसरा आमदनी में से खर्च उठाता मैं यह कहती कि जाने बहू क्या बचाता होगा सब कहती, कुल रुपया मेरे ही हाथ से उठता है - कुछ घर में भी चार चीज़ इज्जत की नहीं बन सकीं - यह कभी नहीं होता कि तनख्वाह रख कर महीने भर उठावें जब तनख्वाह आती है रेवड़ी गट्टों की तरह बँट जाती है - दस पंधरह बनिये को गये चार, पाँच बज़ाज़ को दिये - चार इमके को और चार खिमके को चले गये फिर वही रोज़ की हाय हाय पड़ी रहती है न कुछ खैर है न वर्कत - गंगा ने कहा कि जो इस्का भेद है वह मैं अच्छी तरह जानती हूँ पर छोटी हूँ कुछ कह नहीं सकती यह सच है कि खर्च बहुत उठता है - ब्याह टेहले के सिवा पचास रुपये महीना तो मेरे बाप के यहाँ भी उठता था मेरा तो सब भेद जाना बूझा पड़ा है घर का हिसाब-किताब तो मैं ही अपने हाथ से लिखा करती थी और आदमी भी यहाँ वहाँ बराबर थे और नौकर भी इतने ही थे जितने

अब यहाँ हैं पर वहाँ आया गया बहुत लगा रहता था - गाँव की दो चार असामियों नित आती जाती रहती थीं - सब के खाने पीने को बन्ता था और हुक्के पानी में खर्च उठता था - वहाँ हर चीज़ में बर्कत दिखाई देती थी और यहाँ वैसा खर्च नहीं और पचास रुपये की जगह पचपन रुपये उठ जाते हैं - सास ने कहा कि अरी बहू इस्में डर क्या है जो बात बुराई की घर में देखे वह कह दे मैं उसका बंदोबस्त करूँगी इस्में बड़ी और छोटी क्या है घर में किसी को कोई बात सूझी किसी को न सूझी भला कोई और कहे तो बुरा भी माना जाय घर का आदमी तो जो कहेगा वह तो भले ही की कहेगा और जो घर का यही रंग रहेगा और कुछ न बचा तो बड़ी बुराई है क्योंकि थोड़े दिनों पीछे जब जयदेई ब्याहने के जोग हो जावेगी उसके ब्याह के लिये रुपया कहाँ से आवेगा - हमारे पास ऐसे क्या गाँव गौट रक्खे हैं जिस्पर कोई हमें उधार देगा - गंगा ने कहा कि घर का बंदोबस्त अच्छा नहीं है नौकर चाकर बड़ी बेपरवाही से चीज़ उठाते हैं भला अब तो आमदनी भी अच्छी है मेरी जान में तो भाई जी की पिनशन लेने से पहले भी जो खर्च का ठीक ठिकाना होता तो दो चार रुपये की बचत हर महीने रहती - एक तो तुम्हारे यहाँ बनिये की दुकान से उचापत उठती है, नाज के सिवा सब चीज़ें बनिये की दूकान से आती हैं इस्में बनिये का घर होता है बाज़ार की खरीद से एक आना रुपया तो वह अपने मुँह से कहकर लेता है तिस्पर भी कोई चीज़ इकट्ठी भाव से नहीं आती थोड़ी-थोड़ी आती है इस्में कुछ वह तोल में लेता है और कुछ मोल में एक घी ही को देखो कि दो आने का सवरे और दो आने का शाम को आता है इस्में कुछ बनिये ने कम दिया और कुछ कटोरे में लगा रह गया - कुछ छाछ निकल गई दो आने में एक ही आने का धन पल्ले पड़ा जो एक रुपये का मंडी से इकट्ठा आवे और ताय छान कर रक्खा जावे तो चार दिन की जगह छै सात दिन चले ऐसे ही और सब चीज़ों का हाल है - दूसरे नौकरों की बेपरवाई से घर में बहुत चीज़ बिगड़ती है - दीवे में बत्ती मोटी है तो मोटी ही है और जो दो बत्तियाँ मिल गईं तो कोई एक नहीं करता - रातों को दो-दो दीवें यों ही निकम्मे जलते रहते हैं - कभी कच्चे दीवे का तेल खिंडा जाते हैं - कभी चूहे तेल पी जाते हैं - जब दीवे में तेल डाला तो इतना भर दिया कि नीचे तक वहा - मसाले का यह हाल है कि कहीं दो गाँठ हलदी की पड़ी हैं - कहीं चार मिरचें बिखरी हैं - कहीं धनियाँ बिखरा पड़ा है - भानो गई एक मुट्ठी गर्ममसाला हाँड़ी में से निकाल लाई जितना चाहिए पीस लिया रहा सहा वहीं पड़ा रहा और बुहारी के साथ कूड़े में चला गया - साँभर की दो ककरियाँ कहीं पड़ी हैं और चार कहीं - रोटी का यह हाल है कि जो सेर भर का खर्च है तो डेढ़ सेर आटा गूँद लिया - रोटियाँ मारी मारी फिरती हैं - कभी नौकरों को उठा दीं और कभी भंगन को दे दीं - कुछ कुत्ते खा गये कुछ कव्वे ले गये - यही रंग दाल तरकारी का है कि सेर की जगह सवा सेर बनाई जाती है देखो वह तरकारी तो दो पैसे ही की होती है जो उस्में से चौथाई खराब गई तो धेले का माल गया पर जब वह तय्यार होती है तो उस्में घी मसाला नमक ईंधन दो आने का और लग जाता है कि वह भी सब निकम्मा जाता है - नौकरों को क्या परवाह जो इधर ध्यान दें उनको तो इसीमें हाथ लगता है - वह जानते हैं कि जो चीज़ बचेगी वह हमको ही मिलेगी - तीसरे यह बात है कि नौकर चाकर सौदा सुलफ़ लाते हैं उस्में से कुछ न कुछ बिना लिये नहीं रहते - बाज़ार से चीज़ें लाते हैं वह कम्म दामों की लाते हैं और बहुत बताते हैं बनिया की उचापत में जो चीज़ लाते होंगे उस्में से कुछ न कुछ ज़रूर लेते होंगे वा दूकान से ही कम लाते होंगे - एक दिन मैंने भानो को घर में से दाल चुराते देखा - मैं चुप की हो रही और मैंने तुमसे इसलिये नहीं कहा कि कहीं तुम मेरे कहने को झूठ समझो - तब सास ने कहा कि हैं भानो ने दाल चुराई मैं तो उसे बड़ी सच्ची जानती थी अरी बहू तू सच कहती है जब कोई चीज़ सीताराम अपने हाथ से लाता है तो बहुत जँचती है और जब किसी नौकर के

हाथ मँगवाती हूँ थोड़ी लगती है। तू ने भानो से दाल क्यों नहीं छीन ली वह आवे तो सही उसको कैसा झाड़ती हूँ और मैं ऐसी चोट्टी को कभी नौकर नहीं रखूँगी वह मेरा घर काट काट कर अपना घर भरती है - गंगा ने कहा कि सब नौकरों का यही हाल होता है - भानो बहुत काम करती है कोई और कहारी इतना काम न करेगी फिर सास ने कहा कि भला उससे कहूँगी तो कि हमारा नाज पात चुरा ले जाती है - गंगा ने कहा कि भानो से कुछ न कहना चाहिये - मेरे नज़दीक नौकर से कभी यह न कहे कि तू चोर है और चोर कहे तो नौकर न रखे क्यों कि नौकर जब यह समझता है कि मेरा एतवार नहीं तो और चोरी करने लगता है और जब तक जानता है कि मुझको ईमानदार जानते हैं तब तक कम चोरी करता है और हर घड़ी चौकस रहता है कि कहीं चोरी खुल न जाय वहाँ अपनी चौकसाई आप रखनी चाहिये कि जिस्से नौकर चुरा न सकें जो चीज़ बाज़ार से मँगाई जाय वह तोल ली जाय जिस्से कम न लावे - सास ने कहा कि बहू मैं तो इतनी बड़ी हुई आज तक मुझे तो इतनी अटकल भी नहीं आई कि सेर भर चीज़ कितनी होती है मेरे नज़दीक तो आज से घर का बंदोबस्त तू कर और तू ही अटकल से सब चीज़ निकलवाया कर और इस कमबख्त बनिये का झगड़ा नहीं निबटता। नहीं तो सब चीज़ें बाज़ार से इकट्ठी आ जावें - यह तो तू सच कहती है कि उचापत में बनिये का घर बन्ता है - गंगा ने कहा कि घर चलाना आप ही को शोभा देता है मैं तुम्हारे सामने करती क्या अच्छी लगूँगी - सास ने कहा कि अरी बहू इसमें क्या डर है न मैं कुछ इसमें से लाल छुटा लेती हूँ और न तू कुछ इसमें से छुटा लेगी जो कुछ तेरी चौकसाई से बचेगा वह घर ही के काम आवेगा तू क्या कहीं और रख आवेगी और इसके सिवा तू देखती है कि मुझमें अब इतने पौरुष नहीं रहे कि अच्छी तरह देखभाल कर सकूँ और बुढ़ापे से मुझको याद भी नहीं रहती, जिस्को चार पैसे देती हूँ और जिस्से चार पैसे लेती हूँ वह याद नहीं रहते और बहू जैसा तेरे जी में आवे वैसा नौकरों से काम ले नौकर ठहरे या सिर के सरदार जो तेरा कहा न मानेंगे - तू न कहोगी तो कौन कहने को आवेगा - तू ही घर की पीर न करेगी तो कौन करेगा। गंगा ने कहा कि अच्छा घर का हिसाब किताब मैं लिखती जाऊँगी और सब काम सँभाल लूँगी हर रुपया पैसा तुम अपने हाथ से दिया लिया करो - सास ने कहा कि अच्छा यह मैंने माना - जिस दिन सीताराम की तनख्वाह आयी उस दिन गंगा ने सास से कहा कि अब की बार बनिये को कौड़ी न दो उससे कहला भेजो कि अगले महीने में तुम्हारा सब हिसाब चुका देखेंगे और इसी तरह जिस किसी का देना था किसी को नहीं दिया - रात को गंगा ने सीताराम से कहा कि कल इतवार का दिन है कुछ तुमको कचहरी तो जाना है ही नहीं जो कुछ मैं कहूँ वह घर का काम कर दो सीताराम ने कहा बहुत अच्छी बात जो कहो जो कहोगी सो ही करूँगा गंगा ने कहा कि तुम्हारे घर में इतना रुपया आता है और बर्कत नहीं होती। इसलिए तुम्हारी मा जी ने घर का काम मुझे सौंपा है सो तुम बाज़ार से एक महीने के खर्च के लिए सब चीज़ें ला दो - सीताराम कहा कि मा जी से पूछ कर जो तुम कहोगी सो बाज़ार से ला दूँगा अब यह अखबार पढ़ो और मैं सुनूँ।। दूसरे दिन सबेरे सीताराम अपनी मा से पूछ कर नौकर को साथ ले बाज़ार गये और नाज, घी, तेल साँभर और सब चीज़ें जो जो गंगा ने मँगाई थी बाज़ार से ले आये फिर गंगा ने एक बड़ी तराजू और एक तरजा और एक पसेरी तक सब लोहे के मुहर लगे हुए बाट मँगवाए कि जो चीज़ बाज़ार से कोई नौकर लावे उसकी पहचान कर औ जो जो नाज बाज़ार से उस दिन आया था सब फटकवाकर मटकों में भरवा दिया और पिसन हारी को बुलवा कर अपने सामने दाल दलवाई और फटकवाकर मटके में भरवा रखी सब तरह के मसाले जुदी-जुदी थैलियाँ गंगा ने अपने हाथ से सी लीं किसी थैली में हलदी और किसी में मिर्च और किसी में धनियाँ भर दिया और उन थैलियों पर ऐसी निशानियाँ कर दीं कि जिस्से जल्दी पहचानी जावे कि

इसमें कौन-सी चीज़ है जैसे हलदी की थैली को पीला रंग दिया और मिरचों की थैली को लाल और नौकरों से कह दिया कि इन थैलियों को पहचान लो जो चीज़ चाहिये उसी वक्त ले लो ढूँढ़ते न रहो नाज को कोठे में रखवाकर ताला लगा दिया और कोठे के बाहर तिदरी में एक अलमारी में सब चीज़ें जो रोज़ खर्च होती हैं रख दीं और उसी अलमारी में थोड़ा थोड़ा आटा दाल और चावल भी रखवा दिये और अलमारी की ताली अपने पास रखी। अब गंगा का यह हाल था कि जो चीज़ कोई माँगता या तो आप निकाल देती वा भानो से निकलवा देती गंगा ने यह तो अटकल कर ली थी कि इतनी जिन्स सब तरह की रसोई के लिये निकाली जाती हैं और उसको सब चीज़ों के देने की अटकल भी बहुत थी पर हर दफ़े सब चीज़ों का देना तो कठिन था और घर के खर्च के लिए नौकरों से यह कहना कि इतना आटा दाल तोल लो यह बात हिन्दुओं में बड़ी बुराई की समझी जाती है इसलिये गंगा ने टीन के कटोरे नापने के लिए बनवा रखे जब भानो कहती कि बहू दाल आटा रसोई के लिये निकाल दो तो वह कह देती कि अलमारी में से एक कटोरा दाल ले ले और चार कटोरे आटे के भर ले या जितने का खर्च देखती बता देती और नमक, मिर्च, मसाला भी अपनी अटकल से प्रतिदिन अपने सामने निकलवा दिया करती अब तो घर की अटकल पड़ गई कि न बासी बचे न कुत्ता खाय - जब तक रोटी होती तब तक उसी अलमारी के पास बिछौना बिछाए हुए सीती पिरोती रहती और जब रोटी हो चुकती तो अलमारी में ताला लगा कर जहाँ जी चाहता बैठती उठती - जब साँझ होती दीवे की बत्तियाँ अपने हाथ से बना देती और दीवे में तेल डालने के लिए एक पली मोल ले ली और भानो से कह दिया कि एक पली तेल दीवे में डाल दिया कर - जब कोई चीज़ नौकर से माँगवाती तो पूछ लेती कि कितनी आई और उसको मकान पर तोल लेती इस डर से कभी कोई नौकर कोई चीज़ कम नहीं लाता था - चीज़ों का भाव गंगा नहीं जानती थी इसलिये उसने सीताराम से कहा कि जब तुम बाज़ार को आया जाया करो तो कभी कभी चीज़ों का भाव भी पूछ लिया करो - इसलिये सीताराम गंगा से बाज़ार का भाव कह दिया करते थे इसी तरह वह बाज़ार के भाव की भी ख़बर रखवा करती थी इस तरह के बंदोबस्त से खर्च उठाने से पहले ही महीने में पंद्रह रुपये तनख़्वाह में से बच रहे उनमें से गंगा ने पिछले बनिये का जो देना था चुका दिया और दूसरे महीने से महीने महीने पंद्रह सोलह रुपये की बचत रहने लगी और सब चीज़ों में वर्कत होने लगा - पहले वह बात थी कि जो कोई पाहुना आ जाता तो उसके लिये उसी वक्त सब सामान बाज़ार से आता एक चीज़ भी घर में न निकलती अब यह बात हो गई कि चाहे दस पाहुने आ जावें तो उनके लिये सब सामान घर में से निकलता - तरकारी के सिवा और कुछ बाज़ार से न लाना पड़ता जितनी चीज़ें घर में रहनी चाहियें सब घर में रहती थीं - लाला तुलजाराम और सीताराम के कलेऊ के लिये नाना प्रकार की चीज़ें बनी रहती थीं - कहीं मूँग और मगद के लड्डू बने हुए रखे हैं - कहीं अमृतवान में शर्बत के लिये बूरा रखी हुई है तरह तरह के अचार अचारदानों में भरे रखे हैं - इसी तरह पान खाने का सब सामान इकट्ठा घर में रहता था - कत्था इकट्ठा आता उसको पकवाकर और सुखाकर रख छोड़ती - छालियाँ भी महीने दो महीने के खर्च के लिये इकट्ठी आतीं - यह नहीं कि रोज़ दमड़ी का कत्था आया और कुल्हियों में डाला - चूना छना हुआ एक हाँड़ी में अलग रखवा रहता - गंगा को प्रबंध करते हुए चार महीने भी नहीं बीते थे कि घर भरा भरा लगने लगा - जब से गंगा ने घर को सँभाला तब से नौकरों के पौरह जाते रहे पहले वे दो दो और तीन तीन रुपये उड़ा लिया करते थे अब फूटा बादाम भी हाथ नहीं लगता था। सूखी तनख़्वाह रह गई तो वह उदास रहने लगे और काम काज भी घुटने तोड़कर करने लगे - जब गंगा ने देखा कि अब नौकरों को कुछ लाभ नहीं रहा इस से सब उदास हैं और नौकरी छोड़ने को

हो रहे हैं इसलिये उनकी तनख्वाह बढ़ा दी और कह दिया कि जैसे पहिले जी से काम करते थे वैसे ही आगे को काम करते रहो अब तो नौकर तनख्वाह बढ़ने से बहुत मग्न हुए और सब जगह गंगा को सराहने लगे - उनकी चोरी की कौड़ी तो जाती रही पर तनख्वाह के बढ़ने की भी बहुत खुशी होती है - गंगा की यह चतुराई की बात उसकी सास को बहुत अच्छी लगी कि नित तुलजाराम के यहाँ कनागतों और दिवाली और होली में आपसदारी के देने लेने में दस-दस रुपये उठ जाते थे सो गंगा ने उनको इस्तरह बचाया कि जब कनागतों में एक के यहाँ से प्याली आती तो दूसरी जगह भेज देती और यों ही दिवाली की मिठाई और होली की मेवा और मिठाई सब जगह अपने लेने देने में दे देती और अपने घर से एक कौड़ी भी खर्च न करती - एक दिन गंगा ने सीताराम से कहा कि तुमने घोड़ा तो ले लिया पर मैं तुमको कभी चढ़ता नहीं देखती, सीताराम ने कहा कि तहसील की कचहरी पास है भला ज़रा सी दूर के लिये क्या सवारहूँ। गंगा ने कहा तो फिर बिना बात यह दस बारह रुपये महीने का खर्च क्यों बाँध रक्खा है जो चीज़ काम न आवे उसका रखना निरर्थक है। सीताराम ने कहा काम में क्यों नहीं आता है जब कभी सर्कारी काम के लिये किसी गाँव को जाना पड़ता है तब किसी की सवारी माँगनी नहीं पड़ती बेखटके चढ़ कर चला जाता हूँ - गंगा ने कहा कि घोड़े को लिये छै महीने हुए तुमको कै बार गाँव को जाना पड़ा। सीताराम ने कहा कि मैं आज तक दो बार गया हूँगा। गंगा बोली कि देखो अब तक सत्तर पिछ्तर रुपये उसके खर्च में पड़े होंगे जो जाते वह किसी की सवारी भी न माँगते और किराए कर ले जाते यहाँ तक कि जो रथ किराए करते तो भी दो चार रुपये से बढ़ती खर्च न पड़ता। यह सत्तर रुपये यों ही गये या नहीं फिर क्यों दस बारह रुपये महीना यों ही खोते हो - सीताराम ने कहा कि नाम कैसा है कि उसके यहाँ सवारी है गंगा ने कहा कि ऐसी कुछ घर में अमीरी भी तो नहीं है कि निरे नाम के लिये सवारी रक्खी जावे और दस बारह रुपये महीना उठाया जावे। मैं तुमसे यह पूछती हूँ कि यह जो सौ सवा सौ रुपये साल बचेंगे तो वह किसी समय काम आवेंगे या यह नाम काम आवेगा - कल को जयदेई का विवाह सिर पर है उस वक्त किसी से उधार माँगते फिरोगे और नौकरी की क्या जड़ है आज है और कल नहीं और कहावत है कि नौकरी की जड़ सवा हाथ ऊँची होती है जो रुपया अपने पास होगा वही काम आवेगा तुमने यह कहावत नहीं सुनी कि बेटा और खोया पैसा समय पर काम आता है तब सीताराम ने कहा कि कहती तो सच हो यह घोड़ा तो निरर्थक बाँध रक्खा है तब दो चार दिन में उसको बेच डालेंगे सात आठ दिन पीछे सीताराम ने कहा कि मैंने यह घोड़ा पचास रुपये को लिया था अब चालीस रुपये से एक कौड़ी भी बढ़ती को नहीं बिकता दस रुपये का टोटा तो मुझसे सहा नहीं जाता जब कोई पचास रुपये देगा तो बेचूँगा गंगा ने कहा कि बेचोगे तो सही पर जो दो चार महीने पीछे तुमको पचास रुपये मिले और जब तक यह पचास रुपये और खायगा तो यह कैसा टोटा होगा कि मानो घोड़ा बिना दामों में गया मेरा कहा मानो तो आज ही बेच डाला तब यही समझना कि एक महीने पीछे बिका जो एक महीने में उसका खर्च बचे तुम यही जानना कि घोड़े ही के दाम आए। वह बँधे बँधे तो कुछ नहीं दे देगा यह बात सीताराम की समझ में आ गई और उसी दिन घोड़े को बेच डाला अब एक दिन गंगा ने अपनी सास से कहा कि अंत को दो चार बरस में जयदेई का विवाह होगा जो थोड़ा थोड़ा सामान अभी से इकट्ठा करती जाओ तो कैसा - किसी महीने में कोई बर्तन आ जाय और कभी कोई कपड़ा कभी कुछ और कभी कुछ ले लिया जाय तो तुम्हारे यहाँ दो चार बरस में सब विवाह का सामान इकट्ठा हो जायगा और कोई तो कान में भी न जायेगा कि कब हुआ और कब नहीं - सास ने कहा कि अरी बहू तू तो आक्रवत के बोरिये इकट्ठे करती है अभी जयदेई का विवाह किसने देखा है जाने जब तक कौन मरे और कौन जिये और

किस राजा का राज हो गंगा ने कहा कि जो इस बहाने से घर में दो चार चीज़ें आ जायँगी तो इस्का क्या कुछ डर है सास ने कहा कि डर क्या है जो तेरी मर्जी हो सो कर अब गंगा हर महीने दो चार रुपये की कुछ न कुछ चीज़ जयदेई के विवाह के लिये मँगवालेती गंगा यह तो सब जानती ही थी कि लड़की के विवाह में कौन कौन सी चीज़ की ज़रूरत पड़ती है क्यों कि उसने अपनी बहन किशोरी के विवाह में अपने हाथ से सब काम किया था इसलिये चार पाँच बरस में गंगा ने चुपके चुपके सब विवाह का सामान इकट्ठा कर लिया कपड़ा गहना तो सब बनवा ही लिया था घी तेल और और चीज़ें हर महीने के खर्च में से बचाती गई और जब जयदेई का विवाह हुआ तो नाज पात कि सिवा बाज़ार से और किसी चीज़ के मोल लेने की ज़रूरत न पड़ी विवाह के पीछे सब मनुष्यों को यह अचंभा था कि लाला तुलजाराम और सीताराम को लड़की के विवाह में एक चीज़ भी बाज़ार से लाते नहीं देखा सब सामान उनके घर ही में से निकल आया और यही कहते सब का मुँह सूखता था कि लाला तुलजाराम के बेटे की बहू बड़ी चतुर और चौकस है यह सब उसके घर सँभालने की बड़ाई है। जयदेई के विवाह के पीछे गंगा के पास डेढ़ हजार रुपये रोकड़ थे। एक दिन सीताराम ने गंगा से कहा कि हम बड़ी विपत् में हैं। हममें और तहसीलदार में बन्ती नहीं कहीं ऐसा न हो कि कोई दोष लगाकर मुझे दूर करा दें मेरे जी में तो यह आता है कि इस्तिफ़ा दे दूँ और और जगह नौकरी ढूँढ़ लूँ - गंगा ने कहा कि तुमसे साहिब कलक्टर तो बहुत खुश हैं जो बन सके तो कहीं और की बदली करा लो सीताराम ने कहा कि वह साहिब तो यहाँ से बदल गया। गंगा ने पूछा कि फिर तहसीलदार से न बन्ने का क्या कारण है सीताराम ने कहा कि क्या कहूँ मेरा स्वभाव तो तेज़ है जब कभी वह कहनी अनकहनी बात कहते हैं मैं सीधा जवाब दे बैठता हूँ। गंगा ने कहा कि ऐसी नौकरी गई हुई फिर मिलनी कठिन पड़ जायगी इस्में तुम्हारा तस्लार क्या बिगाड़ है कि उलट कर उत्तर न दिया करो वह आख़िर को अफ़सर ही हैं जो कहा करें सो कर दिया करो सीताराम ने कहा कि अब इस्तिफ़ा देने के बिना नहीं बनेगी। अब तक तो तहसीलदार को उन साहिब का डर था जिन्होंने मुझको पेशकार किया था अब वह बिना मौकूफ़ कारण कभी न मानेंगे फिर जो क्रसूर से मौकूफ़ हुआ तो और जगह भी नौकरी नहीं मिलेगी। निदान सीताराम ने नौकरी से इस्तिफ़ा दे दिया और यह कहा कि मैं नौकरी की ढूँढ़भाल में अवध को जाऊँगा तब तो सीताराम के माँ बाप को बहुत दुःख हुआ गंगा ने सीताराम से कहा कि नौकरियाँ कहीं मोल को तो नहीं बिकती जो जाते ही मोल ले लोगे और जो कहीं नौकरी मिल भी गई तो तुम्हारे तेज़ स्वभाव से क्या आस है कि निभ सके मेरी सलाह मानो तो अब नौकरी का नाम मत लो कोई दुकान कर लो या सौदागरी करने लगो सीताराम ने कहा कि मुझ पर ऐसी क्या आफ़त पड़ी है जो दूकान करूँ क्या मैं पढ़ा लिखा नहीं हूँ हमारा क्या है जो बहुत तनख़्वाह की नौकरी न मिलेगी तो थोड़ी तनख़्वाह की कर लेंगे नौकरी पेशह तो दर्ज़ी की सूई है कभी गज़ी में और कभी मख़मल में - गंगा ने कहा कि क्या तुमने मेरे कहने का बुरा माना। इस्में बुरा माने की क्या बात है क्या दूकान करने में कुछ डर है सीताराम ने कहा लो डर नहीं है। लोग कहेंगे कि पढ़ लिखकर दूकान करते हैं। फिर वही कहावत होगी पढ़े फ़ार्सी बेचे तेल यह देखो कर्ता के खेल - गंगा ने कहा कि मुझको तुम्हारी इस बात से बड़ा अचंभा हुआ कि दूकान करना तो ऐब है और नौकरी करना ऐब नहीं है बहुत से लोग लाचारी को नौकरी करते हैं और शहर के लोग अपने मतलब के लिये उनकी कुछ इज्जत भी करते हैं पर जो ध्यान देके देखो तो नौकरी गुलामी से भी बुरी है गुलाम तो कभी काम को टाल भी देता है पर नौकर कभी नाँह नहीं कर सक्ता जब भी हाकिम ने बुलाया जाना पड़ा जो काम दिया वह करना पड़ा नौकरी की बुराई तो लोगों में यहाँ तक प्रसिद्ध है कि लोग नौकर और कूकर को बराबर समझते हैं एक

बार एक चमार और चमारी अपने घर में पड़े सोते थे जब सबेरे आँख खुली तो देखा कि मूसलाधार में बरस रहा है और एक आदमी सड़क पर चला जाता है चमारी ने चमार से पूछा कि हैं ऐसे मेह में सड़क पर कौन जाता है चमार ने कहा कि कोई चाकर कूकर होगा - तिस्पर भी नौकरी का यह हाल है कि उसका रहना और न रहना हाकिम की जीभ पर है जब हाकिम ने कह दिया नौकर हो गये जब उसने दूर कर दिया दूर हो गये जब तक नौकरी रही तब तक वह थोड़े से लोग जिनका कुछ काम पड़ता हैं या वह लोग जो यह समझते हैं कि कभी हमारा काम न पड़ जाय इज्जत करते रहे आप अच्छा खाते पीते रहे एक दो सवारी भी रही दस आदमी भी आकर चापलूसी करने लगे जब नौकरी जाती रही सब इज्जत खाक में मिल गई। कोई यह भी नहीं पूछता कि तुम कौन हो जो नौकरी ईमानदारी से की और अभिमान भी नहीं हुआ तो लोगों को उसकी नौकरी जाते रहने का पछतावा हुआ नहीं तो यह कहने लगे कि अच्छा हुआ जो वह नौकरी से दूर हो गया बड़ा बेईमान था और उसको अभिमान तो इतना था कि किसी से बात भी नहीं करता था खुशामदियों ने भी आना जाना छोड़ दिया और जो कर्जदार थे तो उसी वक्त लोग माँगने लगे जो दूसरी जगह झटपट नौकरी मिल गई तो मिल गई। नहीं तो घर का माल अस्वाब बेच बेच कर खाने लगे भाई बंधु और मित्र सब तुच्छ गिन्ने लगे जो किसी के पास गये तो उसने यही जाना कि यह आज कल ठाली बैठे हैं कुछ माँग न बैठें वह भी उखड़ी उखड़ी बातें करने लगा भला तुमने कोई ऐसा मनुष्य देखा है कि जिसने चालीस पचास रुपये या सौ डेढ़ सौ रुपये की नौकरी ईमानदारी से की हो और रिश्वत न ली हो और वह अमीर हो या कोई धर्म का काम किया हो जैसे शिवालय बनवाया हो या दो चार कुएँ खुदवाए हो बहुत कर्के यही देखने में आया है कि जितनी तनख्वाह बढ़ती गई उतना ही खर्च बढ़ गया एक सवारी की दो सवारियाँ हो गई। दो नौकर के चार नौकर रख लिये - एक बड़ी कठिनाई नौकरी में यह है कि काम पड़ने पर छुट्टी नहीं मिलती तब जी को कितना दुःख होता है और जी मार कर बैठ रहना पड़ता है और कभी छुट्टी न मिलने से बड़ा नुकसान हो जाता है तुम भूल गये कि जयदेई के विवाह में तुम को सात दिन की छुट्टी तनख्वाह कट कर बड़ी मुश्किल से मिली थी। वह तो यह कहो कि तहसील ही में तुम नौकर थे नौकरी भी करते रहे और घर का काम काज भी किया और जो कहीं बाहर नौकर होते तो कौन विवाह का काम करता। लाला जी में इतने पौरुष कहाँ था जो अपने ऊपर सब काम उठा लेते फिर वक्त पर आना जाना सर्कारी नौकरी में अलग है पल भर की देर के लिये भी टोका टोकी होती है तुम्हारा यह हाल था कि उलटी सीधी दो रोटियाँ पेट में डालीं और भागे बताओ कौन-सा सुख नौकरी में हैं और इज्जत का यह हाल है कि गरज वालों के सिवा तो और कोई बात भी नहीं करता अपने अमले के नौकरों का यह हाल होता कि जो हाकिम मिहरवाबी पर है तो और सब लोग भी खातिर करते हैं और जो हाकिम खफा है तो और लोग भी कुछ नहीं गिन्ते हैं दूकानदारी और सौदागरी में इन्में से कोई बुराई नहीं दूकान पर आना जाना अपने आधीन है अपनी नींद सोना अपनी नींद जागना जब जी चाहा काम किया जब न चाहा न किया खाने पीने का स्वाद आता है। जो ईमान से लेन देन करे तो इस्में घाटे का डर भी बहुत कम है और जो संयोग से आज घाटा हो गया तो कल को उससे दूना लाभ हुआ। बस्ती के सब लोग उसका एतवार करते हैं जो बात का सच्चा है चाहे दो हजार रुपये का सौदा बाज़ार से उधार ले आवे इस्में बन्ते हुए देर नहीं लगती जो दूकान चल गई तो थोड़े ही दिनों में वारे न्यारे हैं इसी शहर में जितने अमीर और जायदाद वाले हैं भला यह तो बताओ कि वह नौकरी करके अमीर हुए हैं या सौदागरी करके और अब उनके यहाँ नौकरी होती है या सौदागरी। सीताराम ने कहा कि यह तो तुम सच कहती हो मुझे तो कोई यहाँ ऐसा नहीं मालूम होता जो नौकरी करके अमीर हुआ हो

सबसे बढ़ कर रुपये वाले यहाँ नानक चंद हैं सो लाला जी यह कहते थे उनके दादा आड़त की दूकान किया करते थे। उसी दूकान से बढ़ते बढ़ते अब यह हाल है कि उनके यहाँ दस लाख रुपया है और बहुत से गाँव मोल ले लिये हैं। अब भी गाँव की आमदनी के सिवा उनके यहाँ लेन देन होता है और औरों का भी यही हाल है। किसी की हूँडी की दुकान है किसी के कपड़े की कोठी चलती है। हाँ ऊपर की टीप टाप और भड़क किसी किसी नौकरी वाले के भी बहुत है पर रुपया उनके पास कहाँ है। गंगा ने कहा कि वह सामान नौकरी ही तक है जब नौकरी नहीं रहती है तो थोड़े ही दिन में यह सामान मालूम भी नहीं होता कि कहाँ गया यह वर्कत भगवान ने दूकान में ही दी है कि जो चमक गई तो अमीर हो गये और थोड़े दिनों में जन्म भर की रोटियाँ कमा ली। यह तो कहावत प्रसिद्ध है कि उत्तम खेती मध्यम बनज निरुष्ट चाकरी। भीख निदान क्यों इस्का मतलब यह नहीं है कि सब से अच्छी खेती और उससे कम दूकानदारी और इन दोनों से बुरी नौकरी और सबसे बुरा भीक माँगना और जो तुम यह कहते हो कि क्या मैं पढ़ा लिखा नहीं हूँ कि जो दूकान करूँ सो क्या पढ़ना लिखना दूकानदारी में काम नहीं आता। बे पढ़े लिखे से तो दूकानदारी भी अच्छी नहीं हो सकती और ऐसा तो कोई दूकानदार न होगा कि जो कुछ पढ़ना लिखना न जानता हो और जो पढ़े लिखे न हों तो अपनी दूकान पर हिसाब किताब क्यों कर लिख सकें। देखा तुम्हारे मुहल्ले का बनिया जिसके यहाँ से तुम्हारे घर की उचापत उठती थी अपना हिसाब किताब कैसा ठीक रखता था और उसकी आमदनी का हाल यह है कि ऐसी कुछ लंबी चौड़ी दूकान नहीं पर तो भी उस दूकान से सब घर का खर्च उठाता है और शादी ब्याह भी उसी दूकान की बदौलत करता है और सब लोग उसपर भरोसा रखते हैं कि आज वह चार पाँच हजार रुपये का आदमी है हाँ, यह लोग हिन्दी पढ़े होते हैं उर्दू, फ़ार्सी या अंगरेज़ी पढ़े नहीं होते सो यह कुछ डर की बात नहीं है कि फ़ार्सी अंगरेज़ी पढ़कर दूकान करना ऐब हो जाय मैंने बहुत कर्के देखा है कि उर्दू फ़ार्सी पढ़े हुआँ की बुद्धि तेज़ होती है फिर जो यह लोग दूकान करें तो बहुत अच्छी तरह से करेंगे। तुमने फ़ार्सी पढ़ी है जो अंगरेज़ी पढ़े होते या उर्दू की किताबें जो मदरसों में पढ़ाई जाती है देखी होती तो तुम आप जानते कि अंगरेज़ लोग जो आजकल पढ़ते लिखते हैं और सबसे ज़ियादह चतुर गिने जाते हैं सौदागरी को कितना अच्छा जानते हैं - मैंने भारत वर्ष पुस्तक में पढ़ा है कि अंगरेज़ लोग पहले सौदागरी के लिये हिन्दुस्तान में आये थे और इसीसे बढ़ते-बढ़ते यहाँ के बादशाह हो गये और मैंने किताबों में यह भी पढ़ा है कि उनकी विलायत में लोग नौकरी तो लाचारी में करते हैं जहाँ तक हो सक्ता है सौदागरी ही करते हैं। सीताराम ने कहा कि हाँ यह तो मैं भी जानता हूँ कि अंगरेज़ बड़े भारी सौदागर हैं और यह भी जानता हूँ कि नौकरी से सौदागरी वा दूकान करने में बड़े लाभ हैं पर मेरे पास रुपया नहीं कि जो कोई अच्छी इज्जत की दूकान करूँ और यह तो मुझसे हो नहीं सक्ता कि सौ पचास रुपये लगा कर परचून की दूकान खोलूँ और सारे दिन बैठा नून तेल बेचा करूँ - गंगा ने कहा मैं राम राम कहो मैं कब कहती हूँ कि तुम परचून की दूकान करो। नहीं हजार दो हजार रुपये लगा कर कोई ऐसी दूकान करो जिसमें गद्दी तकिये लगा कर बैठे रहा करो रुपये का कुछ सोच न करना। उसका उपाय मैं कर दूँगी - सीताराम ने कहा कि दूकान तो बज़ाज़ से बढ़कर और कोई अच्छी नहीं पर उसके लिये पहिले पहल दो हजार रुपये तो चाहिये और यह तो मुझको आस है कि जो मैं दूकान करूँगा तो मेरी दूकान सबसे अच्छी चलेगी। गंगा ने कहा कि यह तुमने कैसे जाना कि मेरी दूकान सबसे अच्छी चलेगी। सीताराम ने कहा कि वह दूकान अच्छी चलती है जिसका दूकानदार सच बोलता है और नफ़ा कम लेता है सो मैं सच भी बोलूँगा और नफ़ा भी कम लूँगा। गंगा ने कहा कि क्या कोई और बज़ाज़ सच नहीं बोलता। सीताराम ने कहा कि इस शहर में तो रामजीमल बज़ाज़ के सिवा और कोई

सच नहीं बोलता। इसलिये रामजीमल का नाम यक सखुनियाँ पड़ गया है और उसकी दूकान पर कपड़ा मोल लेने वालों का मेला सा लगा रहता है। सैकड़ों रुपये का रोज़ कपड़ा बिकता है पर नफ़ा भी बहुत लेता है जो नफ़ा लेता है वह सबसे लेता है यह नहीं कि किसी जान पहचान को कम नफे से दिया मूर्ख या गँवार को ठग लिया गला सड़ा कपड़ा दे दिया जो मैं उससे कम नफ़ा लूँगा तो मेरी दूकान पर कपड़ा लेने वाले बहुत आवेंगे चाहे मुझको उससे नफ़ा कम हो। गंगा ने कहा कि नहीं तुमको नफ़ा कभी कम न होगा जिसका माल बहुत बिकता है चाहे वह थोड़ा ही नफ़ा ले उसको लाभ ही रहता है तुम नहीं जानते कि सौ के सवाए अच्छे दस के दूने से और तुम्हारी बातों से मैं जान गई कि तुम दूकान बहुत अच्छी तरह से करोगे कहावत है कि सच का बेड़ा पार है जो तुम सच बोलोगे तो तुमको ज़रूर ज़रूर बहुत फ़ायदा रहेगा और वह कमबख़्त जो झूठ बोल बोल और धोका दे दे कर लोगों का गला काटते हैं उनका यहाँ भला होगा न वहाँ। सीताराम ने कहा कि बातें तो बहुत सी हुईं पर यह तो बताओ कि तुम रुपये का यत्न कहाँ से कर दोगी या कहीं वही कहावत है कि - सूत न कपास जुलाहे से लट्ठम लट्ठा-गंगा हँस पड़ी और कहने लगी कि घबड़ाओ मत सूत कपास भी है तुम्हारी मा के पास डेढ़ हज़ार रुपये रक्खे हैं उसकी न तुमको और न तुम्हारे लाला जी को ख़बर है बाकी हज़ार पान सौ का घर में गहना पाता है काम पड़ने पर उसको गिरवी रख लेना - सीताराम ने कहा कि बस दूकान तो हो चुकी भला मा के पास डेढ़ हज़ार रुपये कहाँ से आए पहिले तो एक कौड़ी भी नहीं बचती थी हाँ अब तुम्हारे प्रबंध से कि घोड़ा बेच डाला था दस बारह रुपये महीने की बचत हुई होगी वही जयदेई के विवाह में उठा। गंगा ने कहा कि क्या मैं झूठ बोलती हूँ क्या तुम मेरे कहने को हँसी समझे तुम जानते हो कि मेरा स्वभाव झूठ बोलने और हँसी करने का नहीं है। मैं महीने महीने बीस पच्चीस रुपये बचाती थी तुमको एतवार न हो तो जाके माँ जी से पूछ लो तब तो सीताराम हँसी खुशी मा के पास दौड़े गये और कहने लगे कि भला मा तेरे पास कितना रुपया इकट्ठा हो गया होगा। सीताराम की माँ मुसकराई और जी में सोची कि आज बहू ने सीताराम से रुपयों का हाल कह दिया। उसने कहा भाई बहुतेरा रुपया तुम बतलाओ कि तुमको काहे को चाहिये, सीताराम ने कहा कि मेरा विचार बज़ाज़े की दूकान खोलने का है उनकी मा ने कहा कि बेटा इससे अच्छी क्या बात है मुझे तो इस बात की बड़ी खुशी हुई कि तू बाहर नहीं जायगा। घर ही रहेगा। हाँ मेरे पास डेढ़ हज़ार रुपये हैं और यह तेरी बहू के बंदोबस्त से बचे हैं। सीताराम ने कहा कि तुमने या किसी और ने मुझसे नहीं कहा। सीताराम की मा ने कहा कि जो तुझसे कहा जाता तो आज तक रहता भी नहीं। तू तो उड़ाऊ था। भला सवारी क्यों दूर करता और यों ही सब उड़ा देता। सीताराम ने कहा कि जो तुम कहो तो दूकान के बखेड़े में क्यों पड़ूँ तीन चार बरस के खाने के लिये मौजद ही है। इसी शहर में नौकरी ढूँढ़ क्या तीन चार बरस तक नौकरी नहीं मिलेगी। उनकी मा ने कहा कि जैसे तेरी राज़ी हो सो कर पर बाहर मत जा। गंगा यह सब बातें सुन रही थी जब सीताराम मा के पास से उठ कर आए तब उसने कहा कि हैं फिर कच्चे हो गये जो तुमको इस ढूँड़ भाल में नौकरी न मिली या ऐसी मिली जिस्से घर का गुज़ारा नहीं हुआ तो जो रुपया घर में है वह भी उठा बैठोगे फिर जो कुछ करना चाहोगे किस्से करोगे आज तो अच्छा बानक भगवान् ने बना रक्खा है इतना रुपया घर में है कि दूकान का ढंग डाल सके हो तब सीताराम ने कहा कि अच्छा अब तो दूकान ही करेंगे पर पहिले कोई आदमी दूकान के लिये ढूँड़ ले क्योंकि लाला जी में दूकान पर बैठने तक की ताकत नहीं है वह तो कुछ दिनों के मिहमान दिखाई देते हैं निदान सीताराम ने एक आदमी दूकान के लिये नौकर रखकर बाज़ार में दूकान किराए की ली और कानपुर से दो हज़ार रुपये का कपड़ा ले आए। पहले तो पाँच छै महीने तक कुछ दूकान न चली। पर जब लोग जान गये कि

सीताराम की दूकान पर सब जगह से कपड़ा सस्ता मिलता है और वह एक ही बात कह देते हैं तब तो खूब बिकरी होने लगी। इन्हीं दिनों में सीताराम के जी में एक बार यह भी आया कि दूकान से कुछ लाभ नहीं ओ इसको छोड़ दें। पर गंगा ने कहा कि सवर करो अभी वरस छै महीने और देखो अब तो कानपुर से आड़त हो गई है दो हज़ार रुपये भेज देने से दस हज़ार रुपये का कपड़ा आ सकता है तीन चार ही वर्ष में सीताराम कई हज़ार रुपये के आदमी हो गये तब उन्होंने दूकान करनी तो छोड़ दी और एक कोठी बज़ाज़े की डाली। बजाज़ों के हाथ इकट्ठे थान बेच देते खुदरे में गाहकों के हाथ न बेचते दस बरस में उनके पास इतना रुपया हो गया कि कई गाँव मोल ले लिये सब अमीरी ठाठ हो गये। इसी समय में सीताराम के दो लड़के पैदा हुए उनको जैसा चाहिये गंगा ने पाला और छोटी उमर तक उनको आप पढ़ाया फिर मदरसे में बिठा दिया जब लड़के पढ़ लिख कर निपुण हो गये तो इन्में से एक को तो मथुरा दास इनके नाना ने गोद ले लिया और दूसरे को सीताराम ने सौदागरी के काम में लगा दिया।।

राधा का हाल

जब राधा का गौना हुआ तक उसकी उमर 12 बरस की और उसके वनड़े तुलसी राम की उमर तेरह बरस की थी - एक तो राधा बालक थी दूसरे बचपन से ही उसके सब लक्षण कुलक्षण थे - अच्छे घर की बहू बेटियाँ की सी कोई बात उस्में न थी - लाज उस्में नाम को भी नहीं थी कभी घूँघट काढ़ लिया - कभी मुँह उघाड़ दिया - जब चार औरतें आपस्में बातें करती तो आप भी बीच में बोल उठती जब कोई नाते रिश्ते की औरत घर में आती तो कभी उसके पाँव पड़ती और कभी न पड़ती जो आप पीढ़े पर बैठी है और सास नीचे तो इस बात का ध्यान नहीं कि पीढ़े से उतर बैठें। भूँक की इतनी बरदाश्त नहीं कि घंटे भर भी रोक सके जैसे अपने बाप के यहाँ सबसे पहिले खा लेती थी वैसे ही यहाँ अपने मुँह से माँगती थी यह नहीं कि मर्द खा जावें तब आप खावें नींद की ऐसी दिवानी कि चाहे कोई और सोवे या न सोवे आप रोटि खाई और सो रही। उठने का यह हाल कि जब सास जगाने जाती तो उठती। यह नहीं कि सबसे पहिले उठा करे निदान न छोटे का छुटप्पन और न बड़े का बड़प्पन समझती थी - फूहड़ ऐसी कि पान बनाना तक भी नहीं आता था जब पान बनाती तो कभी चूना ज़ियादह और कभी कत्था ज़ियादह लगा देती - बिरादरी की स्त्रियाँ उसके लक्षण देख देख दाँत तले उँगली देतीं - कोई तो चुप की हो रहती और कोई उसकी सास से कहती कि क्यों जी यह बहु कैसी - उसकी सास कहती कि कैसी क्या जैसी आजकल की बहू होती हैं वैसी है - अभी बालक है जब स्यानी होगी आप सब बातों का ध्यान आ जायगा पर वे औरतें अपने अपने घर इसकी बड़ी चर्चा करतीं और कहतीं कि ऐसी गौनिहाई तो कोई नहीं देखी ऐसी भी बालक क्या है उसके तो सब लक्षण कुलक्षण हैं कोई ढंग उस्में अच्छा नहीं दिखाई देता - रही सही उसकी सास उसकी ओर उठकर उसको बिगाड़े देती है - देखो तुलजाराम के बेटे की बहू भी तो उसी की बहन है उसने सौतेली सास से कैसे निर्वाह किया। आया गया सब उसको सराहता है दूसरी कहती कि भला उसकी रीस कौन करेगा सारे मुहल्ले में उसकी बड़ाई हो रही है वह तो सौतेली सास में ऐसी रही कि कोई सगी सास में क्या रहेगी सच पूछो तो वह अंधेरे घर का दीवा है उसके आने से पहिले तुलजाराम के घर में क्या ख़ाक थी - आएगये के लिए उनके घर में पान तक भी नहीं निकलता था अब देखो उसकी वर्कत से कैसा घर में विभव आ रहा है तुम देखना कि हरीराम के बेटे की बहू थोड़े ही दिनों में अलग घर बसायेगी और यही सास जो अब उसकी हामी भरती है उसका झींकना झीकेगी - निदान यों

ही कुछ तो राधा के लक्षण उसकी मा ने बिगाड़े और रहे सहे उसकी सास ने लाड प्यार में खो दिये - सास जानती थी कि बड़े होने पर सुधर जायगी सो भला कहीं स्वभाव बदलते हैं - कहावत है कि रस्सी जल जाय पर उसका बल न जाय जिस्का बचपन से ही स्वभाव न सँभला उसका जवानी पर क्या सँभलेगा - राधा का जवान होने पर भी यही हाल रहा वरन और भी स्वभाव बिगड़ गया - अब तो वह सास को भी हर बात में उलट कर जवाब देने लगी और सुसरे से भी लाज काज छोड़ दी - बोलती ऐसी कि बाहर तक सुनाई देता और चलती ऐसी कि सब घर धमकता - अब सास भी उससे हार मान गई और उसके लक्षणों से सास का नाक में जी आ गया और आये गये के साम्हने बहू को विसराने लगी पर अपने लड़के तुलसीराम से इसलिये बहू की बुराई नहीं करती कि तुलसीराम बड़ा क्रोधी है कहीं उससे बोलना न छोड़ दे। तुलसीराम के बराबर के यार तुलसीराम से कहते कि तुम्हारी बहू कैसी है जो सास और सुसरे को जवाब देती है और कुछ लाजकाज नहीं करती तुम उसको कुछ समझाते नहीं - यारों के कहने से तुलसीराम को बड़ी शर्म आती पर क्या करें कुछ बस नहीं चलता था - जब कभी राधा से कुछ कहते तो वह एक की दस सुनाती और जब कभी उसको सहज में समझाते कि तुम अपना ऐसा स्वभाव छोड़ दो तो वह कहती कि मुझ में कौन सी बुराई है - कभी तुलसीराम को क्रोध भी आ जाता पर आप ही अपने जी में जल भुन कर बैठ रहते - महीनों तक राधा से बोलना भी छोड़ देते। निदान किसी उपाय से राधा का स्वभाव न बदला - तुलसीराम के बाप लाला हरीराम को तो साहिब कलक्टर ने रिश्वत के भरम में (जो साहिब के जी में तुलसीराम के विवाह में बहुत सा रुपया उठाने से लोगों ने डलवा दिया था और जिस्का वर्णन तुलजाराम ने अपने समधी मथुरादास को लिखा था) तहसीलदारी से दूर कर दिया था और जब से अब तक अपने घर का माल और असबाव बेच बेच कर निर्वाह करते थे पर अब भगवान की कृपा से तुलसीराम अंगरेज़ी पढ़ लिख कर चालीस रुपये महीने का नौकर हो गया तब तो राधा ने और भी ऊधम उठाया। दिन रात सास से लड़ाई रखने लगी और यह चाहती थी कि किसी तरह सास और सुसरे से अलग हो जायँ जितनी कमाई आती है वह मेरे ही हाथ में आवे और मैं ही उसको बर्तू और सास सुसरे को एक पैसा न दूँ और तुलसीराम से भी इस बात के लिये नित तकरार रखने लगी पर तुलसीराम अपने मा बाप की बहुत टहल करता था और जो तनख्वाह लाता वह अपने बाप के हाथ पर रख देता और वह अपनी घरवाली को दे देते और उनकी घरवाली उसको अपनी चतुराई से घर में उठाती सो यह बात राधा को बुरा लगती थी जब बहुत तकरार होने लगी तब एक दिन तुलसीराम की मा ने तुलसीराम से कहा कि बेटा तुम्हारी बहू की मर्जी अलग होने की है सो तुम जुदे क्यों नहीं हो जाते यह नित्त का झगड़ा तो मिटे और तुम्हारे जी का क्लेश भी दूर हो। तुलसीराम ने कहा कि मा फिर ऐसी बात मुँह से मत निकालना। उस मूर्ख की मर्जी से क्या होता है जो तुम अलग होने का नाम लोगी तो मैं अपना काला मुँह कर्के घर से निकल जाऊँगा। हाय मैं तुम से अलग हो कर अपने यार और पासके बैठने वालों और बिरादरी में क्या मुँह दिखाऊँगा और मैं क्या उसके स्वभाव को नहीं जानता अरी मा वह बड़ी मूर्ख है कोई बात उसकी समझ में नहीं आती और चुटकला यह है कि वह आप को सब से चतुर जानती है जो कोई उसकी बातें सुन्ता है वह उसको बुरा कहता है सब पास बैठने वाले मुझको ताने देते हैं पर क्या करूँ घर में से निकाला भी तो नहीं जाता बुरी भली चीज़ तो बदली जा सकती है पर आदमी तो बदला नहीं जाता अब तो निर्वाह करे ही बनेगी और तुम्हारा क्या थोड़े दिनों और जियोगी जीते जी तो मुझे भुगतनी पड़ेगी - देखिये क्या दुःख मुझको उठाने पड़ेंगे और उसी वक्त तुलसीराम ने राधा से कहा कि तुम दिन रात मा के पीछे क्यों पड़ी रहती हो घर में लड़ाई दंगा रहने से बड़ी बदनामी होती है घर का काम करने से क्या थकी

जाती हो जिस काम को मा कहा करे उसको कर लिया करो और अभी से तुम ने सब की लाज काज छोड़ दी है यह अच्छी बात नहीं और मा जो तुम से कहती है वह तुम्हारे ही भले की कहती है। उसके कहने को तुम क्यों नहीं मान्ती राधा ने कहा कि तुम भले और तुम्हारी मा भली। बुरी तो मैं हूँ सो मुझे घर से निकाल दो या मुझको मेरे बाप के घर पहुँचा दो और काम तो मैं भले ही करूँगी जो रुपया पैसा उठावेगा वही काम करेगा मुझे क्या लालच है जो अपने हाथ पैरों को तोड़ूँ मेरी बला से चाहे जो कुछ बिगड़े चाहे न बिगड़े जो बच रहेगा सो मुझे क्या मिल जायगा। मुझको तो मेरे बाप ने जितना गहना बनवा दिया था उतना भी मेरे पास नहीं रहा। उसमें से कई दूम गिरवी पड़ी हैं। तुलसीराम ने कहा कि तुम कैसी मूर्खता की बातें करती हो। घर चलाने के लिये बड़ी चतुराई चाहिये यह उन्हीं की बुद्धिमानी है जो इस तनख्वाह में पोत पूरा किये जाती हैं भगवान् जाने जो तुम खर्च उठाओगी तो इस चालीस रुपये में पोत पूरा भी न होगा और बिना बात की बदनामी और लोग हँसाई होगी कि सास के साम्हने बहू खर्च उठाती है बेकारी में ज़रूर तुम्हारी दो चार दूमें गिरवी रख लीं थीं और इस नौकरी में तो कोई दूम गिरवी नहीं रखी गई वरन एक आध छूट आई है। भगवान ने चाहा तो थोड़े दिनों में रही सही भी छूट जायगी और इस्का कुछ होता भी तो नहीं। गहना पाता इसी वास्ते होता है कि काम पड़ने पर काम आवे। तुलसीराम ने राधा को बहुत समझाया पर उसके समझ में एक भी न आई अब राधा को इस बात की तला बेली पड़ी कि किसी तरह से मैं अपने बाप को लिख भेजूँ कि वह मुझे बुला लें पर आप तो पढ़ी लिखी नहीं थी जो चिट्ठी लिख भेजती और जो दूसरे से लिखवावे तो भेद खुल जाने का डर था। उस वक्त उसको बड़ा पछतावा आया कि हाय मैंने गंगा की तरह क्यों नहीं पढ़ा जो आज को मैं भी पढ़ी होती तो अपने बाप को चिट्ठी लिख भेजती पर यह न सोची कि जो पढ़ी लिखी होती तो आज को ऐसी मूर्खता की बात क्यों करती जब उसको अपने जी की बात का लिखने वाला नहीं मिला तब उसने अपनी बहन गंगा से जो उसी मुहल्ले में रहती थी कहला भेजा कि चार घड़ी के लिये मेरे पास हो जाओ मुझे कुछ तुमसे कहना है। गंगा तो अपनी सास के कहने में थी बिना पूछे सास के कोई काम न करती थी और न किसी के यहाँ जाती। आठ सात बरस विवाह को हो गये कभी अपनी बहन राधा के पास तक भी अकेली नहीं गई। जब कभी उसकी सास गई तो उसके साथ एक दो बार गई थी। इसलिये गंगा ने अपनी सास से पूछा कि आज मेरी बहन ने मुझको बुलाया है जो तुम कहो तो चार घड़ी के लिये हो आऊँ। सास ने कहा कि बहू क्या डर है तेरी तो वह बहन है और यहाँ के नाते से तुलजाराम भी दूर नहीं है यह घर और वह घर एक ही है। मैं एक डोली मँगवाए देती हूँ जा होआ। निदान गंगा राधा के वास आई और डोली से उतरते ही अपनी बहन और बहनोई को राम-राम की और बहन की सास के पाँव पड़ी राधा ने अलग हो कर गंगा से कहा कि मैंने तुमको इसलिये बुलाया है कि तुम अपने चाचा को एक चिट्ठी अपनी तर्फ से या मेरी तर्फ से लिख दो कि वह मुझको बुला लें मेरा जी अब यहाँ नहीं लगता। गंगा ने कहा कि हैं कोई ऐसी बात भी चिट्ठी में लिखता है जब उनका जी चाहेगा बुला लेंगे जो कहीं इस बात की खबर बहनोई या तुम्हारी सास को हो गई तो तुमसे उनके जी फट जायेंगे और तुमने जो मन लगने की अच्छी बात कही इस घर से तो तुमको सदा काम है यहाँ तो तुमको जी लगाए ही बनेगी राधा ने कहा बहन तुम क्या जान्ती हो जिसके जी पर बीतती है, वही जान्ती है। मेरे जी को बड़ा भारी क्लेश रात दिन रहता है। मुझसे सब के जी पहिले ही फट रहे हैं अब क्या फटेंगे मैं यहाँ रहने से बाज़ आई और मैं कुछ किसी दूसरे को नहीं लिख पाती अपने मा बाप को लिखवाती हूँ और किसी दूसरे आदमी से तो नहीं लिखवाती जो कोई और जानेगा इसीलिये तो मैंने तुम ही को बुलाया है। गंगा ने कहा कि यह तो सच है पर तो भी ऐसी बात

लिखने में अपना ही हलकापन है और वह कौन-सी बात है जिसे तुम्हारे जी को रात दिन क्लेश रहता है राधा ने कहा कि एक बात हो तो बताऊँ सैकड़ों बातें हैं कहाँ तक कहूँ - मेरी सास दिन रात मेरे पीछे पड़ी रहती है - कभी कहती है कि तू चिल्ला कर बोलती है - कभी कहती है कि तेरी चाल बुरी है - मेरे तो खाने पीने बोलने चालने-चलने फिरने-सोने उठने सबके न्याय पड़े रहते हैं - आप मालकन की तरह पलंग पर बैठी हुक्म चलाया करती हैं कि यह काम करो वह काम करो - इसके सिवा तुम जानती हो कि तुम्हारे ही बहनोई की कमाई है और मेरा कुछ आदर नहीं - मैं एक एक पैसे को हड़कती हूँ - मेरी मजाल नहीं कि एक चुटकी आटा भी उनकी बिना मर्जी के भिखारी को दे सकूँ या दो रोटी किसी के हाथ पर धर सकूँ जिस घर में अपनी कुछ चलती नहीं उस घर में रहने का क्या धर्म है - न इस घर में कुछ अच्छा खाने को मिलता है न पीने को - तुम्हारे बहनोई के भी कान भर भर कर उनको मुझसे नाराज करा दिया है वह अपनी मा के कहने में चलते हैं मेरी एक नहीं सुन्ते जो वही मेरे बस के होते तो मैं आज को जुदी हो जाती। सो कल ही की बात है कि सास ने उनसे कहा था कि तुम जुदे हो जाओ तिसपर उन्होंने कहा कि जो जुदे होने का नाम लोगी तो मैं अपना काला मुँह करके घर से निकल जाऊँगा तब गंगा ने कहा कि बहन कुछ तुम मुझसे ऐसी छोटी नहीं हो कि जो मैं तुमको समझाऊँ। भला मैं तुम से यह पूछती हूँ कि क्या और लोग अच्छा खाते पहरते हैं और तुमको बुरा देते हैं। राधा ने कहा कि मुझे भगवान को जान देनी है मैं झूठ कभी नहीं बोलूँगी जो सब खाते हैं सो मैं खाती हूँ वरन कभी कोई अच्छी चीज़ भी मुझे मँगा देते हैं और कपड़ा भी मुझे औरों से अच्छा बन्ता है पर इस कमबख्त घर में अच्छा ही क्या होता है वही रंडियाँ रोटी दुखिया दाल या एक दो तरकारियाँ हो गई। न इस घर में कभी खीर खाने को मिलती है न रबड़ी न मिठाई क्या तुम नहीं जानती कि मैं अपने घर रोज़ खीर और रबड़ी खाती थी और जिस बात की हठ करती थी वह करके छोड़ती थी। गंगा ने पूछा कि क्या तुम्हारी सास दान-पुन्य बहुत करती हैं जिसमें सब कमाई उठा देती हैं - राधा ने कहा कि खाक दान पुन्य करेगी अरी बहन वह तो बड़ी कंजूस है जूठे हाथ से कुत्ते को भी नहीं मारती। देने के नाम से कभी किबाड़ तक नहीं देती जो मैं किसी को उनके बिना पूछे कुछ दे दूँ तो मुझे सौ सुनाती हैं - तब गंगा ने कहा कि फिर तुम्हारे कोई ननद या देवर जेठ भी तो नहीं है जो उसको दे देती होंगी। राधा ने कहा कि नहीं यह बात भी नहीं है उनका तो कुछ भेद ही नहीं लगता। गंगा ने कहा कि मुझको कोई बात तुम्हारी सास में बुराई की नहीं दिखाई देती जैसी पुराने समय की बड़ी बूढ़ियों की चाल है वह सब उन्में हैं वह चटोरी और उड़ाऊ नहीं है और तुम चटोरपन और उड़ाना चाहती हो यही तुम्हारी लड़ाई की जड़ है तुम्हारी बातों से मुझको तो तुम्हारी ही खोट जाना जाता - भला मैं तुमसे पूछती हूँ कि वह कंजूसी करके चार पैसे बचाती है उसमें किस्का लाभ है जो वह उधार सिर करें और तुमको चटोरपन करने दें तो वह ऋण किस्को सिर चढ़ेगा और जो वह दो चार सौ रुपये इकट्ठे कर लेंगी तो क्या वह छाती पर रख ले जायँगी कल को तुम्हारे ही टेहला होने वाला है उसमें खर्च होगा और उसके सिवा और बीसियों खर्च गृहस्त में आन पड़ते हैं उनका क्या आज मरी कल दूसरा दिन वह सब का इकट्ठा किया हुआ तुम्हारे ही काम आवेगा। तुम बिना बात झगड़ा रखती हो वरन तुम को उलटा मग्न होना चाहिये कि तुम्हारी सास तुम्हारी भलाई में है और चटोरपन और उड़ाने का स्वाद तुमने नहीं देखा - यह माना कि तुमने अपने घर सदा रबड़ी और खीर खायी और जो जी में आया सो किया और तुमने क्या मेरी ताई का भी यही हाल था फिर क्या हुआ अंधाधुंध खर्च उठाने से अब खाने तक को हड़कने लगे - और जुदे होने का कभी नाम मत लेना। इसमें तुम्हारी बड़ी बदनामी होगी। लोग कहेंगे कि बहू से सास सुसरे को रोटी नहीं दी गई क्या इस नौकरी में निराला तुम्हारा ही भाग

है तुम्हारे सास सुसरे का नहीं। सोचो तो उन्होंने किस किस दुःखों से बेटे को पाला और पढ़ाया लिखाया तब यह दिन देखा कि कमाई खावें जो तुम उनको प्रसन्न रखोगी और उनकी टहल करोगी तो तुम्हारे बहू बेटे तुम्हारी सेवा करेंगे। यह तो यहाँ का बदला यही है - और जो तुम काम करोगी तो कुछ डर है अपने घर का काम कौन नहीं करता। तुम्हारे सामने तुम्हारी सास काम करती हुई क्या अच्छी लगेगी मैं तो अपनी सास को पलंग पर से उठने नहीं देती जिस काम को वह कहती हैं हँसी खुशी कर देती हूँ - अरी बहन बैठे बैठे क्या आदमी बढ़ता है यह मांस किस काम आवेगा और मेरे पीछे तो उसको कच्चे कुत्ते भी न खावेंगे जो तुम चला फिरा न करोगी तो ताई की तरह नित नई बीमार रहा करोगी सास सुसरे क्या किसी के सदा बैठे रहते हैं अंत को सब घर का बोझ तुम ही पर पड़ेगा। जब जो जी चाहेगा तो करना आज तो सास बुरी लगती है फिर पीछे उन्हीं को याद करोगी। सास सुसरे का बैठा रहना ही धन्य जानो जब तक वह बैठे हैं तुम्हारा बोझ भार बना हुआ है। तब राधा ने कहा कि जो तुमने कहा सो मैंने माना अच्छा मेरा ही खोट सही पर क्या करूँ अब मेरा जी यहाँ नहीं लगता जो तुम चिट्ठी लिख दो और चाचा मुझको बुला लें तो थोड़े दिनों घर रह आऊँ। गंगा ने कहा कि हैं फिर वही बात कही आदमी को चाहिये कि जो बात निभ न सके वह कभी न करे अंत को फिर यहीं आओगी - फिर वे बुलाएँ आने और जाने में दोनों तर्फ से हलकापन होगा और यह भी सोचो कि तुम्हारे चाचा का आजकल हाथ बहुत तंग है तुम क्या नहीं जानती हो पार्वती के विवाह के पीछे नौकरी भी जाती रही और गाँव भी बिक गये अब दस रुपये महीना तुम्हारे छोटे चाचा देते हैं उसी में अपना निर्वाह करते हैं दूसरे पार्वती की तर्फ से उनको बड़ा सोच रहता है। पार्वती के बुलाने तक का टिकाना ही नहीं तुमको कहाँ से बुलावेंगे और रक्खेंगे। निदान गंगा ने राधा को इस ढंग से समझाया कि राधा के जी पर गंगा की बात जम गई और उस दिन से फिर कभी राधा ने सास सुसरे से कुछ तकरार नहीं की और न कभी जुदे होने का नाम लिया पर राधा में जो और बहुत सी बातें मूर्खता की थीं इसलिये तुलसीराम का जी उससे नहीं मिलता था कहावत है कि सिर पड़े बजाए सिद्ध जैसे बनता निर्वाह करते - थोड़े दिन पीछे राधा के लड़का हुआ तब से तुलसी राम की माँ राधा का बहुत आदर करने लगी और पौते के ध्यान से उससे किसी काम को न कहती और सर्दी गर्मी से बचाती पर राधा के चटोरे पन से लड़का नित रुगीला रहता - तुलसीराम और उसकी मा ने राधा को बहुत समझाया कि चटोरपन से दूध बिगड़ जाता है और उससे बालक को रोग होता है। तुम साधारण खाना खाया करो कि लड़के को अजीर्ण न हो पर यह बात उसके ध्यान में कब आ सकती थी इसलिये उसने चटोरपन न छोड़ा और परिणाम को वह लड़का अधिक बीमार हो गया। बहुत सी दवा दारू की। पर उसको आराम न हुआ और जान से जाता रहा फिर तो तुलसी राम और राधा में रोज यह तकरार रहने लगी कि तुलसी राम तो यह कहते कि तुम्हारे चटोरपन से लड़का मरा और वह मूर्ख यह कहती कि इलाज अच्छा नहीं हुआ तुम तो हकीम ही की दवा करते रहे - किसी स्याने को तो दिखाया नहीं आराम कैसे होता गंगा भी लड़के के मरने पर मकान को आई तब राधा ने गंगा से भी यही कहा कि बहन लड़का तो अपने हाथों खोया मैं बहुतेरा अपना सिर धुन्ती रही कि कि स्याने दिवाने को दिखाओ पर इन्होंने किसी स्याने को नहीं बुलाया। एक हाकिम ही पर सिर मुँडाए बैठे रहे - तब गंगा ने कहा कि अरी बहन तू कैसी बातें करती है। मर्दों को औरतों से तो कुछ जियादह ही समझ होती है - सैकड़ों पोथियाँ पढ़ते हैं सैकड़ों जगह बैठते हैं - सैकड़ों बीमारियाँ देखते हैं जो स्याने आराम कर देते तो मर्द उनको बुरा क्यों कहते और सच भी यही है कि स्याने न्योतों से कुछ नहीं होता। वह बड़े ठग होते हैं - उन्हें झूठी मूठी छू छू करने के सिवा और कुछ नहीं आता - भला सोचो तो सही कि कहाँ रोग और कहाँ झाड़ू फूँक -

यह दुष्ट बड़े हत्यारे होते हैं। एक दो दवा दस्तों की अपने पास रखते हैं और वही बे सोचे समझे बालकों को दे देते हैं लग गई तो तीर नहीं तो तुक्का। कभी ऐसा होता है कि जो बालक मरता न हो तो उनकी दवा से मर जाता है - मैं तो कभी अपने घर में स्याने न्योते को नहीं आने देती। जब कोई बालक बीमार हो जाता है तो पास पड़ोस की औरतें मुझसे बहुतेरा कहती हैं कि किसी स्याने को दिखाओ और मेरी सास भी मुझसे कहती हैं पर मैं कभी नहीं बुलाती हूँ कि हकीम ही का इलाज करती हूँ और उसीसे आराम हो जाता है बीमारी का इलाज तो हकीम करेगा और उसी की दवा से आराम होगा। पर मौत का कोई इलाज नहीं और परहेज़ सौ दवा की एक दवा है सो तुम्हारी बुराइयाँ मैं अपने घर बैठे सुन्ती थी कि तुम परहेज़ नहीं करती मेरी बहन सच पूछो तो उस जानहार की बीमारी तुम्हारी बद परहेज़ी ने ही बढ़ा दी अब पछताए क्या होता है जब चिड़ियाँ चुग गईं खेत जो होना था सो हुआ भगवान् की मर्ज़ी ऐसी ही थी कहावत है कि जिसको विधि दारुण दुख देई उसकी मत पहिले हर लेई। बहन अब संतोष करो जो तुम्हारा होता तो जीता और तुम को कुछ सुख देता वह तो कर्ज़दार था जितना कर्ज़ उसका तुम पर आता था उतना ही तुमसे उठवाया और चल बसा। जिसकी चीज़ थी उसके पास गई भगवान ने ही दिया था और उसने ही ले लिया और वही फिर और देगा। गंगा के समझाने से राधा की कुछ धीर बँधी दिनों दिन दुःख कम होता गया पर उसकी सास को पोते के मरने का दुःख बहुत ही हुआ और वह इसी दुःख में मर गई अब तो राधा अकेली रह गई कोई दूसरी औरत घर में न रही। पहिले तो राधा कभी कभी लड़ाई और क्रोध में यह कहा करती थी कि कौन-सा दिन होगा जो मेरी सास टलैगी पर अब उसको सास की क्रूर मालूम हुई ज़रा सी बात पर सास को कह कर के रोती। सच है कि आदमी की क्रूर मरे पीछे जानी जाती है।।

तुलसीराम को तो नौकरी के काम से छुटकारा न था कि घर का प्रबंध करते और लाला हरीराम इतने बूढ़े हो गये थे कि उनके होश भी ठिकाने नहीं थे अब सब घर का काम राधा के सिर पर आ पड़ा सो उस मूर्ख में घर चलाने की समझ कहाँ थी तुलसीराम की मा ने कभी ब्राह्मणी रोटी करने को नहीं रक्खी आप ही रोटी कर लिया करती थी पर जब से वह मर गई तब से एक दिन भी बिना ब्राह्मणी के रोटी नहीं हुई क्योंकि राधा को रोटी करनी नहीं आती थी यहाँ तक कि जिस दिन ब्राह्मणी रोटी करने को नहीं आती। उस दिन घर के लिये बाज़ार से कचोरियाँ मोल आतीं और जो राधा ने रोटी भी की तो कहीं जली कहीं भुनी कहीं कच्ची जो दाल में नमक बहुत है तो तरकारी में कम है चावल कभी कच्चे रहे कभी गल कर गुलत्था हो गये - सास के मरते ही चार रुपये महीने का खर्च तो एक यही बढ़ गया और दूसरे राधा चटोरी और उड़ाऊ और बिलल्ली ऐसी थी कि उससे भी बहुत खर्च पड़ने लगा। सास ने जो दो सौ रुपये इकट्ठे किये थे उसमें से सौ रुपये लड़के के होने में उठे और सौ रुपये उसकी मौत को लगे और अब तो महीने महीने दस पाँच रुपये और सिर चढ़ने लगे - हाँ तुलसीराम अपने जी में यह सोचते थे कि जो इसी तरह से हर महीने खर्च उठा तो दो चार बरस में उधार से मेरा बाल बाल बिंध जायगा पर क्या करें कुछ बस न था - तुलसीराम की मा के मरने के पीछे हरीराम भी चल बसे और उसी वर्ष तुलसीराम के दूसरा लड़का हुआ। घर में तो कौड़ी तक भी न बचती थी तुलसीराम ने अपनी मा का गहना बेच कर यह दोनों कार्य किये - गंगा ने लड़के के उत्पन्न होने की खबर सुनकर तुलसीराम से कहला भेजा अब तुम को कोई दूसरी औरत घर के काम काज के लिये ज़रूर रखनी पड़ेगी अकेले मल्लू कहार से काम नहीं चलेगा। जो मेरा कहा मानो तो एक दाई लड़के के दूध पिलाने के लिये नौकर रख लो। इसमें दो लाभ हैं एक तो बहन लड़के के झगड़े से निफ़राम हो जायगी। उसको केवल घर का

काम ही रहेगा। दूसरे तुम जानते हो कि वह बहुत बद परहेज़ हैं उनकी बदपरहेज़ी से लड़का नित नया बीमार रहेगा। दाई के दूध से लड़का पल जायेगा और खर्च तो वैसे भी तुम्हारा बहुत पड़ेगा और ऐसे भी - गंगा की यह सलाह तुलसीराम के मन भा गई और उन्होंने एक दाई पाँच रुपये महीने की दूध पिलाने के लिये नौकर रख ली और लड़के का राधा से कुछ काम न रक्खा राधा अपने घर का कामकाज करती रही और एक वर्ष पीछे तुलसीराम के एक और लड़का हुआ और उसको भी तुलसीराम ने दाई को सौंप दिया - तुलसीराम ने दाईयों के खाने पीने की बहुत चौकसाई रक्खी इसीलिये दोनों लड़के अच्छे रहे और कभी बीमार न हुए जब दूसरा लड़का भी एक बरस का हो गया। तब तुलसीराम ने राधा से कहा कि आजकल ऋतु अच्छी है कहो तो इन दोनों लड़कों के टीका लगवा दें जिन बालकों के टीका लग जाता है उनके शीतला नहीं निकलती और जो निकलती भी है तो बहुत थोड़ी। राधा ने कहा कि नहीं नहीं मैं अपने लड़कों के टीका कभी नहीं लगवाऊँगी। देवी माई की मुझ पर वैसे ही दया रहेगी क्या सबके टीका ही लगवाया करते हैं जिनके टीका नहीं लगता क्या देवी माई उन पर कृपा नहीं करती वह तो जगत् माता हैं और सबके मनोरथ जात्रेवाली हैं उनसे छिपा कर मैं अपने लड़कों कहाँ ले जाऊँगी और कहने लगी कि हे देवी माई मैं टीका लगाने का नाम नहीं लेती हूँ तुम मुझ पर वैसे ही दया रखना - जब तुलसीराम ने देखा कि यह मूर्ख मेरे कहने के कभी न मानेगी और इसकी बिना राज़ी टीका लगवाने में नित का क्लेश रहेगा। इसलिये तुलसीराम ने गंगा को बुलाकर उससे कहा कि मैं लड़कों को टीका लगवाना चाहता हूँ और तुम्हारी बहन नाँह करती है। तुम तो उनको समझाओ। तब गंगा ने राधा से कहा कि हैं तुम टीका लगवाने को क्यों मने करती हो। अब तो सब लोग टीका लगवाते हैं और जिन बालकों के टीका लगाता है उनके चेचक नहीं निकलती। तुम देखती हो कि मैंने अपने दोनों लड़कों के टीका लगवाया और एक बार क्या तीन बार उनके टीका लग चुका है भगवान की दया से अब एक दस बरस का है और दूसरा आठ बरस का अब तक किसी के शीतला नहीं दर्शी - राधा ने कहा कि मेरी सास कहा करती थीं कि हमारे यहाँ टीका नहीं लगता हमारे बालकों पर देवी माई की वैसे ही कृपा रही है कभी कोई बालक इसमें नहीं मरा तब गंगा ने कहा कि पहिले टीका लगवाने की चाल कहाँ थी और कौन यह युक्ति जानता था यह तो अब अंगरेज़ों ने उपाय निकाला है इसके लिए यह बहुत अच्छा उपाय है। अरी बहन बालकों के लिये यह बहुत बुरा रोग है जो बालक इस रोग से उबर भी गया तो कोई काना हो जाता है - कोई अंधा - कोई लंगड़ा - कोई लूला और कुछ न हुआ तो खतरे तो सब ही हो जाते हैं और सोचो तो उस समय बालकों को कैसा कुछ दुःख होता है जब शीतला निकलती है - लोगों ने माता माता मान रक्खा है। सच पूछो तो यह जठराग्नि है जो पढ़े लिखे हैं वह इस रोग को अच्छी तरह जानते हैं। मैंने पुस्तकों में इस रोग का हाल पढ़ा है। मैं अच्छी तरह जानती हूँ कि टीका लगवाया जायगा तो बालक के शीतला कभी नहीं निकलेगी। यह रोग सब जाति के लोगों के बालकों को होता है क्या हिन्दू क्या मुसलमान क्या ईसाई। पर और जाति के लोग इसको देवी देवी करके नहीं पूजते - इस्का इलाज़ करते हैं और हँसी खुशी टीका लगवाते हैं। मेरा कहना मानो तो तुम इसमें हठ मत करो - राधा ने कहा कि अरी बहन टीका लगाने वाले तो बालक को पछने से गोदते हैं भला मुझसे यह कब देखा जायगा। गंगा ने कहा कि नहीं नहीं उसमें बहुत दुःख बालकों को नहीं होता। केवल गुदगुदी-सी लगती है और यह दुःख एक दो दिन का तो तुम पर नहीं देखा जायगा और जब शीतला निकलेगी तो वह बड़ा भारी दुःख महीनों का तुम पर कैसे देखा जायगा। निदान गंगा ने राधा को बहुत समझाया। पर राधा ने एक न मानी और यही कहा कि मैं तुम्हारा कहना मानूँ या और औरतों का। मुझे तो कोई बड़ी बूढ़ी इस बात की सलाह नहीं देती हार कर गंगा अपने घर को चली गई।

संयोग की बात है कि तुलसीराम का बड़ा लड़का और लड़कों के साथ बाहर खेल रहा था। टीका लगाने वाले जो उधर को निकले उन्होंने उस लड़के को पकड़ कर उसके टीका लगा दिया और दो तीन लड़कों को भी लगा दिया जब वह लड़का रोता हुआ घर में आया और राधा को इस बात की खबर हुई तो राधा ने सैकड़ों गालियाँ टीका लगानेवालों को दीं और तुलसीराम ने भी राधा का मन रखने के लिये टीका लगानेवालों को बुरा भला कहा, पर अपने जी में खुश हुए कि चलो इसी तरह काम बन गया और राधा से कहा कि खैर अब तो टीका लग गया अब इसकी चौकसाई ज़रूर करनी चाहिये। इस लड़के को सर्दी गर्मी हवा पानी से बचाती रहो उसी दिन उस लड़के को हलका-सा बुखार आ गया और तीसरे दिन टीका उठ आया और दोनों बाहों पर जहाँ टीका लगा था बड़े बड़े फफूले उठ आए और वह इसी तरह भरे और सूखे जैसे शीतला भरती और सूखती है उसी वर्ष फागन के महीने में आगरे में शीतला का बड़ा जोर हुआ। सैकड़ों हज़ारों बालकों के शीतला निकली। तुलसीराम के छोटे लड़के के भी जिसके टीका नहीं लगा था शीतला निकली तब तुलसीराम ने चाहा कि हकीम वा डॉक्टर से पूछ कर कोई ऐसी दवा दी जावे जिसे शीतला जल्दी से उभर आवे और बालक को दुःख न हो पर राधा ने कहा कि नहीं नहीं दवा का नाम मत लेना। देवी माई पर - ध्यान धरे बैठे रहो। वह थूक थाक अपने गुलाम को छोड़ जायगी और देवी कोली को बुला दो वह हाथ दे जाया करेगा। तुलसीराम जी में तो इन बातों से कुढ़ते थे और जानते थे कि वह कमबख्त आकर क्या करेगा। पर लाचार होकर उसको बुला दिया और समझा कि उसके आने से बिगाड़ भी नहीं है। हर रोज़ देवी आता और झाड़ फूक कर चला जाता। बहुतेरी उस पाखंडिये ने झाड़ फूक की पर चेचक अच्छी तरह न भरी। राधा ने और बहुत से मालियों और स्यानों भोयों को दिखाया और गुड़गाँवे और कुसुंगी और ज्वाला देवी आदि बीसियों जगह की जात बोली और सैकड़ों मन्त्र मानी और उठावने उठाये पर कुछ शांति न हुई और परिणाम को वह लड़का इसी रोग में मर गया। और वही क्या उस महीने में हज़ारों बच्चे शीतला से मरे दश पाँच ही अच्छे हुए होंगे या उन बच्चों की जान बची जिनके टीका लग गया था। अब तो राधा बहुत रोई पीटी और पछताई कि हाय मैंने मर्दों का कहना क्यों न माना और अपनी बहन गंगा का भी कहना टाल दिया जो आज को उसके भी टीका लगा होता तो वह क्यों इस रोग में मरता और अब तो वह सैकड़ों गालियाँ देवी माई को देने लगी और कहने लगी कि अरी तू बड़ी हत्यारी है जो मेरे बालक को खा लिया पर पीछे पछताए क्या होत है जब चिड़ियाँ चुग गई खेत। आदमी को पहिले ही आगा पीछा सोचना चाहिये। गंगा उस लड़के के मरने में मकान को न आई क्योंकि हिन्दुओं में चाल है कि चेचक से मरे हुए की मकान को कोई नहीं जाता पर थोड़े दिनों के पीछे अपनी बहन से मिलने को आई और कहा कि क्यों बहन मैं जो कहती थी कि टीका लगवा दो। अब तुम्हारी सास का कहना कहाँ गया कि हमारे यहाँ कोई बालक चेचक से नहीं मरता। राधा रोने लगी। तब गंगा ने कहा कि अब रोने पीटने से क्या होता है जो होना था सो हो गया। तुम्हारी मति तुम्हीं को खराब करती है। अरी बहन यह कमबख्त रोग ऐसा ही होता है जब बालक इस रोग से बच जाय तो जानो कि इसका दूसरा जन्म हुआ और औरतें भी पास पड़ौस की उस वक्त आन बैठी और राधा को समझाने लगी कि सुन बहू सात पूत भी सपूती और एक पूत भी सपूती भगवान तेरे इस लड़के ही को राज़ी रक्खे और तू अपना जी इसी से लगा। गंगा ने कहा कि एक बात अब भी मैं तुम से कहे देती हूँ कि हर तीसरे बरस इसके टीका लगवा देना। जब तक पंधरह सोलह बरस का न हो जाय फिर शीतला निकले तो मैं जानू राधा ने कहा कि क्या मैं अब भी तुम्हारा कहना न मानूँगी। अपनी मूर्खता से दोनों खो चुकी। हाय मैं कमबख्त जो तुम्हारा कहना पहिले से ही मान्ती तो क्यों मुझ पर यह आफ़त पड़ती और भगवान भला

करे उन टीका लगाने वालों का जिन्होंने मेरे बड़े लड़के के टीका लगा दिया नहीं तो जाने इसकी क्या गति होती। जब तो मैंने उन विचारों को गालियाँ दी थीं पर अब मैं उनको आशीस देती हूँ। जो कि अब एक ही लड़का रह गया था। इसलिये राधा और तुलसीराम दोनों का उत्सर्ग बहुत प्यार रहता था पर राधा का प्यार मूर्खपने का था। राधा रोज़ तुलसीराम से कहती कि तुम तो बड़ी कंजूसी करते हो। एक तो लड़का है सो उसको भी अच्छी अच्छी चीज़ें पहनने को नहीं बनवाते इसको सौ दो सौ रुपये का सोने का गहना बनवा दो देखो जगत् के लड़के गहने से लदे फिरते हैं तुलसीराम ने कहा कि क्या मैं कंजूसी से गहना नहीं बनवाता। नहीं मैं नहीं चाहता कि लड़के को गहना पहनाया जावे। अब तो वह बाहर निकल जाता है कभी आदमी साथ होता है कभी नहीं होता लड़कों में अकेला खेलता रहता है जो दो चार रुपये की चीज़ पहरे हैं सो वह भी उतार लो ऐसा नहीं कि गहने के पीछे लड़के की जान भी जाय। यह कह कर तुलसीराम ने उसी वक्त उसकी सब चीज़ उतार ली और राधा से कहा कि ख़बरदार अब कभी कोई चीज़ उसको मत पहराना। अच्छा खाना खिलाओ और अच्छा कपड़ा पहराओ कुछ गहने ही पर लाड़प्यार नहीं जाना जाता। कोई यह नहीं कहेगा कि उनको पैदा नहीं है। तुम देखो तुम्हारी बहन गंगा के भी दो लड़के हैं और भगवान् की दया से उनको तुमसे ज़ियादह मक़दूर है वह अपने लड़कों को एक पैसे की चीज़ नहीं पहराती हैं राधा ने कहा कि अब मैं किसी बात में हठ नहीं करती जो तुम्हारी मज़ी हो सो करो पहराओ मत। बनवाने में तो कुछ डर तो नहीं है। आए गए तीज़ त्यौहार पहर लिया करेगा। अपना ऐसे भाग्य कहाँ है जो भगवान की दया रहे तो एक बरस में उसकी सगाईयाँ आने लगेंगी आगे जो तुम्हारी मज़ी हो सो करो तुलसीराम ने कहा कि जब पाँच सात बरस का होगा तो देखा जायगा जो उत्सर्ग गहना न होगा तो क्या इसका विवाह न होगा। बालकों को क्या कुछ गहना पहराने ही से अमीरी जानी जाती है जो सगाई करने को आवेगा वह क्या उसके गहने का ही ध्यान करेगा और हमारी नौकरी और घराने का ध्यान न करेगा लड़कों का बड़ा गहना लिखना पढ़ना है भगवान् वह दिन करे तो इसके पढ़ाने लिखाने में बहुत ख़र्च करना। पर राधा कब मान्ती थी वह तो बड़ी हठीली और मूर्ख औरत थी। उसने तुलसीराम की चोरी से अपना गहना तुड़वा तुड़वा कर दो ढाई सौ रुपये का गहना लड़के के वास्ते बनवा लिया पर तुलसीराम के डर से पहराती न थी। जब तुलसीराम के लड़के की उमर छै बरस की हुई तब उन्होंने उसको नागरी और उर्दू पढ़ाने के लिए एक पढ़ाने वाला अपने घर पर बिठाया और सोचा कि जब दो तीन बरस में कुछ नागरी, उर्दू पढ़ जायगा तो सर्कारी मदरसे में अँगरेज़ी पढ़ने के लिये बिठा देंगे। वह लड़का ऐसा बुद्धिमान् था कि चार छै महीने ही में नागरी और उर्दू पढ़ने लगा। तुलसीराम अपने लड़के का पढ़ना लिखना देखकर बहुत खुश होते और सोचते कि यह मिहनत करेगा तो सात आठ बरस में अँगरेज़ी नागरी उर्दू पढ़ लिखकर निपुण हो जायगा। पर मन चीते कार्य कहाँ होते हैं। भगवान तो उन पर हँस रहा था आदमी को ख़बर नहीं होती कि कल क्या होगा। इस लड़के का नाम दयाराम था। उसी मकतब में एक लड़का बलदेव जो नाते में तुलसीराम का भानजा था पढ़ता था यह बलदेव दयाराम से बहुत प्यार रखता और तुलसीराम के घर में भी आया जाया करता था। राधा ने जब देखा कि बलदेव मेरे लड़के को बहुत चाहता है तो राधा भी बलदेव को बहुत चाहने लगी और जो अच्छी चीज़ अपने लड़के दयाराम के खाने को बनाती वह बलदेव को भी देती और बलदेव से कहती कि देखो यह तुम्हारा छोटा भाई है। कहीं लड़कों से लड़ाभिड़ा न करे बलदेव कहा करता कि अरी भाभी तुम क्या कहती हो। मैं तो उसको अपने जान से ज़ियादह चाहता हूँ और मकतब में भी उसको अपने पास ही बिठाए रखता हूँ। यह जहाँ जाता है मैं साथ जाता हूँ। राधा ने कहा कि नहीं बाहर जाने आने को तो मल्लू नौकर है। मल्लू कहार पर राधा और

तुलसीराम का बड़ा एतबार था राधा तो सदा की सुस्त थी सारे घर की ताली कुंजी उसके हाथ रहती थी दो दो सौ रुपये का गहना मल्लू बाज़ार को बनवाने ले जाता मल्लू भी इस लड़के से बहुत प्यार रखता था। बचपन से उसीने खिलाया था। जब से यह लड़का दाई से अलग हुआ तब से मल्लू ही के पास रात को सोता था। अब दयाराम की उमर नौ बरस की हो गई और तीन बरस उर्दू पढ़ते भी हो गए इसलिये अब तुलसीराम का विचार हुआ कि उसको अंगरेज़ी मदरसे में बिठावें पर तुलसीराम की ननसाल तो एतमादपुर में थी। एक विवाह होनेवाला था और वहाँ से तुलसीराम और राधा को बुलावा आया। इसलिये तुलसीराम ने सोचा कि इस विवाह के पीछे मदरसे में बिठलावेंगे तुलसीराम ने बहुतेरा चाहा कि पंधरह दिन की छुट्टी मिल जाय कि मैं अपने साथ लड़के बालों को एतमादपुर जाऊँ और ले जाऊँ पर तुलसीराम को छुट्टी न मिली। तब लाचार होकर राधा से कहा कि तुम न जातीं तो कुछ डर न था पर मेरा जाना बहुत ज़रूर था। सो मुझको रुखसत नहीं मिलती। अब क्या करें और मैं तुमको अकेला भेजना नहीं चाहता। वहाँ दयाराम की होशियारी कौन करेगा। शादी विवाह का घर होगा। दस इगाने बिगाने इकट्ठे होंगे तुमको अपनी ही चीज़ वस्तु का होश नहीं रहता, फिर उस बिचारे की क्या ख़बर रक्खोगी। राधा ने कहा कि मल्लू को साथ कर देना। वह सब ख़बरदारी कर लेगा और दयाराम मल्लू पर हिला भी है तुलसीराम ने कहा कि फिर यहाँ मेरे पास कौन है। मल्लू के बिना मुझको बहुत दुःख मिलेगा। इससे यही अच्छा है कि तुम भी मत जाओ। राधा तो सब जगह के जाने के लिये तय्यार रहती थी। उसने कहा कि भला तुम कैसी चाह करते हो नाते रिश्ते की बात है और नातारिश्ता कैसा वह तो तुम्हारी ननसाल ही है और तुम्हारे सगे मामा की लड़की का विवाह है जो मैं भी न जाऊँगी तो बड़ी नामधराई होगी जो लड़के के विवाह में न जाय तो न जाय, पर लड़की के विवाह में ज़रूर जाना चाहिये जो मैं न जाऊँगी तो मेरे कौन आयगा और तुम्हारे न जाने का कुछ डर नहीं सब जानते हैं कि पराए नौकर हैं और तुम अपना गुज़ारा दस पंधरा दिन के लिये जैसे हो सके वैसे कर लेना। मल्लू को तो ज़रूर मेरे साथ कर देना तब तुलसीराम ने कहा कि भला मल्लू गया भी तो हवेली के अंदर तो जाया करेगा नहीं तुम्हारा परदा तो उससे छूट गया, वहाँ जहाँ तहाँ की बहू बेटियाँ इकट्ठी होंगी कोई ऐसा आदमी चाहिये जो अंदर आया जाया करे। तुमको भी उससे आराम मिले और लड़के की भी होशियारी रक्खे राधा ने कहा इस्का तुम सोच मत करो। मैंने बलदेव से कहा था सो उसने हाँ कर ली है। भाभी मैं तुम्हारे साथ चलूँगा। तुलसीराम ने कहा कि हाँ बलदेव की क्या बात है वह तो अपना भानजा ही है जो बलदेव तुम्हारे साथ जाय तो कुछ मल्लू की भी ज़रूरत नहीं है। राधा ने कहा कि बलदेव ज़रूर चलेगा और मल्लू को भी मैं ज़रूर ले जाऊँगी, क्योंकि पराये घर बिना नौकर के कुछ इज़्ज़त नहीं - निदान राधा और दयाराम और मल्लू और बलदेव सब एतमादपुर को गए। राधा ने वह सब गहना जो तुलसीराम से छिपाकर बनवाया था रस्ते में दयाराम को पहरा दिया और मल्लू और बलदेव से कहा कि तुम घर चलकर दयाराम के लालाजी से मत कहना नहीं तो वह मुझसे बहुत लड़ेंगे। मैंने उनसे छिपाकर यह गहना बनवाया है। मैं लौटती बार सब उतार लूँगी। शादी विवाह की बात है। इसलिये मैं ने इस्को पहरा दिया है पर इन दोनों दुष्टों के जी में उसी समय से बेईमानी छाई और आपस में यह सलाह की कि किसी तरह से यह गहना लेना चाहिये। जब एतमादपुर पहुँचे तो जो आदमी दयाराम को देखता खुश होता। एक तो उसका रंग रूप ही अच्छा था दूसरे गहना कपड़ा पहनने से और भी अच्छा लगने लगा - हर वक्त यह लड़का मल्लू के या बलदेव के साथ रहता पर ये दुष्ट हर वक्त गहना उतारने का समय ताकते थे - जिस दिन वहाँ बरात की विदा हो रही थी और सैकड़ों आदमियों की भीड़ भाड़ थी उस दिन यह दोनों कमबख़्त सलाह कर्के दयाराम को

अरहर के खेत में ले गए और वहाँ उसका सारा गहना उतार लिया और उसको मार कर उसी खेत में दबा दिया और झटपट मकान पर आकर बलदेव घर में गया और कहने लगा अरी भाभी यहाँ दयाराम है राधा ने कहा कि भाई वह तो बाहर ही था। देखो बाहर ही तमाशा देखता होगा। क्या तुम्हारे साथ नहीं था बलदेव ने कहा कि हमारे पास तो घंटा भर से नहीं है और न मल्लू के पास है। पर बरात की भीड़ में राधा ने बलदेव की बात का कुछ ध्यान नहीं किया और जाना कि बाहर ही होगा जब बरात विदा हो गई और दयाराम का पता न लगा तब तो राधा बहुत घबड़ाई और बावेली मचाने लगी उसकी हाय तोवा मचाते ही तुलसीराम के मामा को बड़ा सोच हुआ और सब जगह ढूँढ़ने लगे और बलदेव और मल्लू का यह हाल था कि यह दोनों दुष्ट धाड़े मार मार कर रोते फिरते थे और सब से ज़ियादह घबराते थे - अब किस्का विवाह और किस्का काज राधा तो अपना सिर पीट पीट कर रोने लगी। कोतवाली में ख़बर की। कोतवाल मकान पर आया। उसने सब हाल पूछ कर पीछे अपनी बुद्धि से पहचाना कि हो न हो यह काम बलदेव और मल्लू का है। उसने उन दोनों को पकड़ लिया राधा ने यह बात सुनकर कोतवाल से कहला भेजा कि हैं हैं यह क्या अंधेर करते हो यह बलदेव तो उस लड़के की फूफी का बेटा है और मल्लू मेरा बड़ा पुराना नौकर है। इसके हाथ हज़ारों रुपये का माल और असबाव रहा। कभी इसकी नीति नहीं बिगड़ी सो क्या अब सौ दो सौ रुपये के माल पर उसकी नीति बिगड़ती और इन दोनों को वह लड़का हमसे भी अधिक प्यारा था। यह काम तो बरात वालों में से किसी का है। पर कोतवाल ने उन दोनों को न छोड़ा और कोतवाली में रक्खा और ढूँढ़ भाल में रहा। उसी दिन एक आदमी लाला तुलसीराम के पास भेजा वह इस बात के सुन्ते ही दौड़ आए। जब तुलसीराम ने सुना कि दयाराम दो ढाई सौ रुपये का गहना पहरे हुए था तब तो तुलसीराम के शरीर में आग लग गई और जी में आया कि अपनी घरवाली को बुरा भला कहूँ पर और के घर कुछ कहना उचित न जाना। तुलसीराम को एक तो लड़के का सोच दूसरे बलदेव का ध्यान था कि यह कैसा मुँह काला होगा। लोग कहेंगे कि भानजे को अपने काम के लिये भेजा और वहाँ उसको कलंक लगा कर पकड़वा दिया। अब यह सलाह ठहरी कि जहाँ से बरात आई थी वहाँ आदमी भेजो कदाचित् वहाँ दयाराम किसी के साथ चला गया हो। जब वहाँ भी आदमी हो आया और कुछ पता न लगा तब तो तुलसीराम अपना सिर पीट कर रोए और कहने लगे कि अब दयाराम नहीं मिलता किसीने उसका गहना उतार लिया और उसे मार डाला - जब कोतवाल को और कहीं पता न लगा तब वह बलदेव और मल्लू को मारने लगा और कहा कि यह काम तुम दोनों के सिवा तीसरे का नहीं है, सच बताओ वह लड़का कहाँ है। कहावत है कि मार से भूत भागता है मल्लू तो पक्का था कि वह तो नाँह ही करता रहा पर बलदेव के मुँह से निकल गया कि हाँ इस मल्लू ने उसको मार कर गहना उतार लिया है और उस खेत में लोथ गाड़ दी है और वहाँ गहना रक्खा है - फिर कोतवाल बलदेव को साथ लेकर उस खेत पर गया और गहने और लोथ को निकाल लाया। मुकद्दिमह दौरे सुपद हुआ। मल्लू तो नाँह ही करता रहा पर उसका साझी होना पाया गया इसलिये बलदेव को फाँसी और मल्लू को जन्म क्रैद हुई - राधा और तुलसीराम रोते पीटते अपने घर को आए। अब तो दो घर रोना पीटना पड़ा - एक तुलसीराम दूसरे बलदेव का घर - बड़े पछतावे की बात है कि गहना पहनाने से दो तीन घरों का नाश हुआ। आगरे में जो यह बात सुन्ता दाँत तले उँगली दबाता और हाथ मलता राधा ने पीटते पीटते अपना आपा लाल कर दिया और तुलसीराम को तो सिड़ सी हो गई। कभी रोते और कभी पहरों तक बुत की तरह चुपके बैठे रहते - यह बात सुन कर जमुनादास अपनी लड़की के पास आए और गंगा भी लड़के की मकान और अपने ताऊ जमुनादास से मिलने को तुलसीराम के यहाँ आई - जमुनादास ने राधा और

तुलसीराम को बहुत समझाया - तुलसीराम ने क्रोध में भर कर अपने सुसरे जमुनादास से कहा कि तुम अपनी लड़की को अपने घर ले जाओ इस अभागी के कारण मैंने आज यह दिन देखा। मैंने दो रुपये के कड़े तक उस लड़के को नहीं बनवाए और इसने मुझसे छिपाकर दो सौ रुपये का गहना उसको बनवा दिया जो यह गहना उसको न पहनाती तो क्यों वह बेचारा अपनी जान से जाता और गंगा की तर्फ हाथ कर्के कहा कि देखो यह भी तो आप ही की भतीजी है। यह कैसी चतुराई की बात करती है। मैंने इनके लड़कों को एक पैसे की चीज़ पहरे हुए नहीं देखा। जमुनादास ने कहा कि भाई अब इन बातों से क्या होता है। उसकी मौत इसी मिष से थी उस बिचारी ने भी तो कुछ वैर से गहना नहीं पहनाया सब औरतों का यही हाल है औरतों ही पर क्या है मूर्ख मर्द भी नहीं मानते। आँखों से देखते हैं और कानों से सुन्ते हैं कि सैकड़ों बालक इस गहने के कारण मारे जाते हैं। तब भी लोग गहना पहराए बिना नहीं मानते और बुद्धि क्या सबही के बाँटे आती है जिसको भगवान देता है उसी को मिलती है और गंगा की तुम क्या कहते हो उसकी बराबर तो बहुतेरे मर्दों में समझ नहीं होती - अच्छा भाई जो तुम्हारी यही मर्जी है तो मैं अपनी लड़की को अपने साथ ले जाऊँगा जो मुझको एक रोटी खाने को मिलेगी तो आधी उसे भी खिलाऊँगा। तुम उसको छोड़ दो मुझसे तो छोड़ी नहीं जाती। गंगा से यह बात सुनकर रहा न गया बोली कि ताऊ तुम कैसी बात कहते हो जो बहन बुरी हैं तो इनको खेनी पड़ेंगी और जो भली हैं तो इनको। हिन्दुओं में यह बात आज तक नहीं आई कि बुरे आदमी को कोई घर से निकाल दे मर्द बुरा हो तो उसको औरत खेवे और जो औरत बुरी हो तो मर्द और बहन में बुराई ही क्या है जैसी आजकल की औरतें होती हैं वैसी ही वह हैं। हाँ पढ़ी लिखी नहीं है जो इनमें उनकी सी बुद्धि हो और बहनोई से बोली भला बतलाओ तो इस्में बहन का क्या खोट है क्या वह बिचारी यह चाहती थी कि लड़का मर जाय? क्या उनको उसके मरने का सुख हुआ? मा को तो बाप से अधिक संतान का दुःख होता है। हाँ गहना पहनाने का खोट इनका है सो मैं तुमसे पूछती हूँ कि इतनी समझ उनमें कहाँ से आ सकती है एक मैंने अपने बालकों को गहना न पहनाया पर सारा जगत् तो पहनाता है और इस बिचारी ने तुम्हारे भानजे और मल्लू को लड़का सौंप दिया था। भला तुम जानते थे कि बलदेव और मल्लू से ऐसी बात होगी। तुलसीराम ने कहा नहीं नहीं मुझे तो अब भी बड़ा अचंभा इस बात पर है। तब गंगा ने कहा कि आजकल के समय ही पर पत्थर पड़े हैं। अब किस्का भरोसा किया जाय और सच है कि पैसे के सब बैरी होते हैं और एक यह भी बात है कि सदा आदमी की नीति एक-सी नहीं रहती - पल भर में आदमी की नीति बिगड़ जाती है। पंधरह बरस से मल्लू तुम्हारे घर में नौकर था और हज़ारों रुपये का माल असबाब उसके हाथ रहा तब नीति उसकी नहीं बिगड़ी और अब बिगड़ी तो सौ दो सौ रुपये के माल पर और उस निर्दयी को दयाराम के खिलाए पिलाए का भी कुछ ध्यान न आया - सच पूछो तो सब बातें होनी कराती है नहीं तो बहन उसको गहना क्यों पहराती और क्यों उसके जी में लालच आता। उसकी मौत थी किसी न किसी बहाने मरता हाँ इतनी बात है कि ऐसी मौत का दुःख अधिक होता है जो वह बीमार पड़ता और उसकी दवादारू कर लेते तो जी का अरमान निकल जाता। ईश्वर को याद करो कि उस जानहार का विवाह नहीं हुआ था। चलो तुमही को दुःख हुआ पराई जाई का गला तो न कटा अब दुःख मात्रे और रोने पीटने से क्या हाथ लगता है जो रोने पीटने से दयाराम आ जावे तो आओ हम तुम सब बैठकर रोवें पीटें तुम जो पढ़े लिखे हो और मर्द सूरत हो तुमको संतोष करना चाहिये और तुमको चाहिये कि हमारी बहन का धीर्ज बँधाओ और उनको समझाओ सो उलटे तुम उन पर क्रोध करते हो तो जो बात आदमी के हाथ में नहीं है उसमें संतोष के सिवा कुछ बस भी तो नहीं है। यह बात कुछ तुम ही पर निराली नहीं पड़ी। सदा से यों ही

होती चली आई है। तुम को याद नहीं कि जिस बरस तुम्हारा छोटा लड़का चेचक से मरा उस बरस इस रोग से आगरे में घर के घर बालकों से खाली हो गये। किसी-किसी के तो चार बालकों में से एक भी नहीं बचा। क्या उनके मा बाप जिए नहीं। यह हमारे चाचा बैठे हैं जो इनके कोई लड़का नहीं हुआ तो क्या जीते नहीं। यह कहो कि भगवान ने संतान की बड़ी मामता बना दी है नहीं तो जो ध्यान पे देखो तो संतान से दुःख के सिवा और क्या लाभ है - जो संतान जी गई और सुपूती निकली तो कुछ सुख दिया नहीं तो जीते जी का दुःख है। लो उठो रोटी खाओ और बहन को भी रोटी खिलाओ। चार दिन से तुम्हारे दोनों के मुँह में एक रोटी नहीं गई कहीं यों प्राण निकलते हैं - गंगा के समझाने से तुलसीराम को कुछ संतोष आया और फिर इनके पास के बैठने वालों ने तुलसीराम से कहा कि हैं तुम अपने घर में से उसके बाप के साथ भेज देते हो इसमें तुम्हारी बड़ी हँसी होगी। भाई तुम ही पर क्या है एक संसार की यही दशा है औरतों की मूर्खता से मर्दों का नाक में दम है - कोई ही ऐसे भागवान होंगे जिनको चतुर स्त्री मिलती होगी, जैसे तुम्हारे भाई सीताराम को कि जिनको पढ़ी लिखी औरत मिली है। नहीं तो सब इसी दुःख में फँसे हुए हैं और जो सोचो तो औरतों का खोट भी नहीं वह तो अपनी जान में जो कुछ करती हैं वह अच्छा ही करती हैं। यह सब उनकी समझ का खोट है लड़कपन में कुछ लड़कों और लड़कियों की बुद्धि में भेद नहीं होता वरन् लड़कियाँ लड़कों से अधिक बुद्धिमान होती हैं हाँ यह मूर्ख रहती हैं और कुछ पढ़ती लिखती नहीं। इसलिये उनसे मूर्खता की बातें होती हैं जैसे मर्द पढ़े लिखे होते हैं वैसी ही औरतें पढ़ी लिखी हों तो क्यों औरतों और मर्दों की एक सी समझ नहीं। फिर इनके पास बैठने वालों में से सबने अपनी अपनी औरतों का झींकना झींका तब तुलसीराम ने सबके समझाने से राधा को उसके बाप के साथ न भेजा और जमुनादास और गंगा अपने अपने घर को गये -

संतान का दुःख ऐसा नहीं होता जो समझाने से जाता रहे और उन्में भी लड़कों का तो सब जानते हैं कि जितने बालक किसी के मरते हैं उतने ही छेद मा बाप के हृदय में हो जाते हैं - अब तुलसीराम को इस लड़के के दुःख ने ऐसा सताया कि उनको आँखों से भी कम सूझने लगा। तब लाचार होकर तिहाई पिनसन तेरह रुपये पाँच आने चार पाई की ले ली और घर बैठे और इसी दुःख में तुलसीराम और राधा ने सारी उमर तेर की और फिर संतान का मुँह देखना प्राप्त न हुआ।

किशोरी का हाल

किशोरी विवाह के समय केवल तेरह बरस की थी और विवाह में गौने की रीति नहीं भुगती गई थी इसीलिये किशोरी दस पाँच ही दिन सासरे रही और फिर अपने बापके घर आ गई - मथुरादास ने ज्ञानो पंडितानी को किशोरी के विवाह के पीछे दूर कर दिया इसलिये अब केवल किशोरी को सीने पिराने का काम रहता था। एक दिन किशोरी ने अपने बाप से कहा कि चाचा मर्दाने और ज़नाने कपड़े सीना और ब्यौतना तो मुझको सब अच्छी तरह से आ गये और जाली के दुपट्टे आदि भी काढ़ लेती हूँ पर कलाबत्तू का काम मुझको कुछ भी नहीं आता जो कोई सिखानेवाली मिले तो मैं उससे कला बत्तू का काम भी सीख लूँ जो मुझको कलाबत्तू का काम आ जावे तो एक अच्छा सा दुपट्टा अपने लिये बनाऊँ और एक गंगा जीजी को बना के भेजूँ। मथुरादास ने कहा कि बेटी यह तो बहुत अच्छी बात है नसीबन पठानी कलाबत्तू की टोपियाँ दुपट्टे बना बना कर बेचती है मैं उससे कह दूँगा वह यहाँ बैठी अपना काम भी करेगी और तुमको भी सिखलाया करेगी और रोटी यहाँ खा लिया करेगी। दूसरे दिन मथुरादास नसीबन को बुला लाए और उससे कह दिया कि पठानी जी तुम यहाँ बैठ कर अपना काम बनाया करो और किशोरी को भी सिखलाया करो और रोटी यहाँ खा लिया करो। एक पंथ दो काज। तुम्हारा कुछ हर्ज नहीं

और किशोरी भी तुम्हारी दया से सीख जायगी। उसने कहा कि हाँ लाला जी इसमें मेरा क्या हर्ज है और उलटा मेरा फायदा है। मुफ्त में करी कराई रोटी मिलेगी दो घंटे तो मकान पर रोटी पकाने में ही लग जाते हैं। अब किशोरी ने पहिले सूत से टोपी काढ़नी सीखी और फिर कलाबत्तू से काढ़ने लगी। निदान सारे दिन किशोरी उस पठानी के पास बैठी कलाबत्तू का काम सीखा करती। कभी टोपी बनाती कभी दुपट्टा काढ़ती। मथुरादास के पड़ौस में एक लड़का मिशन स्कूल में पढ़ता था उस स्कूल के पादरी साहिब की मेम इस लड़के के घर आया करतीं और सब मुहल्ले की लड़कियाँ उनके पास इकट्ठी हो जातीं। वह मेम सब लड़कियों से पढ़ने के लिये कहतीं और उनका सीना पिरोना भी देखतीं कभी कभी कोई कपड़ा इनाम दे जातीं। एक दिन किशोरी भी अपनी मा से पूछ कर अपना बनाया हुआ दुपट्टा और एक टोपी मेम के दिखलाने को ले गई - मेम किशोरी का सीना पिरोना और कलाबत्तू का काम देख कर बहुत मग्न हुई - और कहा कि बेटी कुछ पढ़ना लिखना भी चाहिये तब और औरतें जो वहाँ बैठी थीं बोल उठीं कि यह तो पढ़ लिख कर होशियार हो गई है क्योंकि पाँच छै बरस पढ़ा लिखा है चिट्ठी पत्री घर का हिसाब किताब सब लिख लेती है। मेम ने किशोरी का पढ़ने लिखने में इम्तहान लिया और मग्न होकर चार रुपये इनाम देने लगी पर किशोरी ने कहा कि यह रुपये मैं नहीं लूँगी। मेरे चाचा मुझ पर क्रोध करेंगे। कई बार मेम ने कहा पर किशोरी ने रुपये नहीं लिये और यह कहा कि इनाम तो रुचि दिलाने के लिये होता है सो मुझको पढ़ने लिखने की वैसी ही बहुत लगन है। किशोरी की इस हिम्मत और बात से मेम बहुत ही मग्न हुई और उससे ऐसा स्नेह करने लगीं कि चौथे पाँचवें दिन किशोरी के मकान पर आतीं और उसको चिकन काढ़ना और नाना प्रकार के बेल बूँटे काढ़ना बता जातीं। निदान जब तक किशोरी का गौना हुआ तब तक वह सूई का काम बहुत अच्छा जान गई। अब वह सूई के काम में ऐसी चतुर हो गई कि जो ढूँड़ा तो हज़ारों में एक ही वैसी निकले। विवाह से तीन बरस के पीछे किशोरी का गौना हुआ क्योंकि किशोरी के सुसरे लाला ललता प्रसाद बहुत दिनों से ठाली बैठे थे इसलिये उसकी ससुराल में कुछ विभव की सी बात न थी। उसका वनड़ा ठाकुर प्रसाद जिसकी उमर अब अठारह बरस की थी सक्कारी मदर्स में पढ़ता था और वहाँ से पंदरह रुपये महीना उसको मिलता था। उससे घर का काम चलता था। ससुराल में किशोरी का रंग ढंग सब गंगा का सा था और क्यों न हो दोनों ने एक सा ही पढ़ा लिखा था जो कोई किशोरी के रंग ढंग सीने पिरोने काम धंधे को देखता वह उसकी बड़ाई करता था। सब औरतें किशोरी की सूरत देखकर यह कहतीं कि बहू बड़ी चतुर और भाग्यवान दिखाई देती है। इसके माथे से भाग्यवानी बरसती है। पर जो भगवान चाहता है वही होता है। जब चाहै किसी को भागवान कहलावे और जब चाहे कमबख्त। किशोरी के गौने को पूरे दो वर्ष भी न होने पाए थे कि उसके सुसरे लाला ललता प्रसाद हैजे में मर गये और उनके मरने के बीस दिन पीछे उसका वनड़ा ठाकुर प्रसाद भी उसी रोग में मरा अब देखो तो इस घर में कोई नाम लेवा और पानी देवा न रहा और इस घर हीपर क्या है इस बरस इस बीमारी से दिल्ली में घर के घर बिगड़ गए। ललता प्रसाद का क्रिया कर्म तो ठाकुर प्रसाद किया था अब ठाकुर प्रसाद का क्रिया कर्म किशोरी को करना पड़ा। बीस दिन में दोनों सास बहू विधवा हो गई। क्या करें बिचारी भगवान की मार से लाचार थीं। अब जो औरतें घर में आतीं वह यही कहतीं कि यह बहू कैसी कमबख्त आई कि उसके आते ही घर मलिया मेट हो गया। पर किशोरी की सास अपने मुँह से आधी बात न निकालती और किशोरी भी रो देने के सिवा किसी को उलट कर उत्तर न देती। यह खबर सुनकर किशोरी के बाप मथुरादास भी रोते पीटते दिल्ली में आए और ठाकुर प्रसाद की क्रिया कर्म तक वहीं रहे। प्रतिदिन अपनी लड़की और समझन को समझाते कि भगवान की मर्जी से किसी का चारा नहीं। अब संतोष करो आज

भगवान की दया से मेरी इतनी आमदनी है कि मैं तुम्हारी दोनों की खाने पहनने की सुध अच्छी तरह से ले सका हूँ। जब ठाकुर प्रसाद का क्रिया कर्म हो चुका तब मथुरादास ने किशोरी से अलग होकर यह कहा कि बेटी अब तू मेरे साथ घर चल। तेरा जी यहाँ नहीं लगेगा और वहाँ तेरी माँ दिन रात रोती रहेगी। किशोरी ने कहा कि नहीं चाचा तुम कैसी बात कहते हो। अब जो मैं तुम्हारे साथ चलूँ तो मेरा बड़ा मुँह काला होगा। प्रथम तो मुझको एक बरस वैसे ही जाना नहीं चाहिये। दूसरे यहाँ सास अकेली डकरा कर मर जायगी। लोग कहेंगे कि बहू तो अपने बाप के यहाँ अच्छा खाने पीने को चली गई और सास को यहाँ अकेली विपत् में छोड़ गई। मथुरादास ने कहा कि विपत् की क्या बात है। हम तेरी सास के लिये भी खर्च भेजते रहेंगे। किशोरी ने कहा कि खर्च का आना कोई नहीं जानेगा। मुझको लोगों में मुँह दिखाना दूबर पड़ जायेगा और एक भी बात थी कि किशोरी ने लाज के मारे बाप से नहीं कहा और यह कहा कि चाचा अब तुम्हारे सिवा कौन है जो तुम मेरी सुध न लोगे तो और कौन लेगा। एक बरस के पीछे जब दोनों की बरसी हो जावेगी तब जैसा होगा देखा जायगा। मेरे भाग में यों ही लिखा था तुम क्या करो। मा, बाप क्या जन्म देकर कर्म के साथी होते हैं। तब मथुरादास रोने लगे और सौ रुपये किशोरी को देने लगे। उसने कहा कि यह रुपये तुम मेरी सास के पास भेजो। मैं अब बिना उनकी मर्जी के नहीं ले सकती। मथुरादास ने वह रुपये अपनी समझन के पास भेजे और कहला भेजा कि मेरे और तुम्हारे बीच में कुछ भेद नहीं अब तो यह रुपये तुम्हारे खर्च के लिये दिये जाता हूँ। फिर जब ज़रूरत हो कहला भेजना। किशोरी की सास ने किशोरी से पूछा कि बहू यह रुपये मैं ले लूँ। किशोरी ने कहा कि मैं क्या नाँह करती हूँ वह तो मुझ ही को देते थे। मैंने चाचा से नाँह करना अच्छा नहीं समझा। इसलिये मैं ने उनसे कहा कि मेरी सास के पास भेज दो। रुपये लेने में क्या डर है। कुछ चाचा गैर नहीं हैं। पर लोग यह कहेंगे कि उनके मरने के पीछे चार दिन भी घर न चलाया गया। जब समधी ने दिया तो खाने को मिला न कोई जानेगा कि माँग कर लिया और न कोई जानेगा कि उन्होंने अपने आप दिया। लोगों की जीभ तो नहीं पकड़ी जाती। लोग उलटी भी कहते हैं और सीधी भी। और अभी तो पाँच सात सौ रुपये का घर में माल असबाब भी है जब यह न रहेगा तब देखा जायगा। मेरी सलाह मानो तो चाचा से कहला भेजो कि अभी ज़रूरत नहीं है। जब ज़रूरत होगी तब कहला भेजेंगे। किशोरी की बात सास की समझ में भी आ गई। उन्होंने वह रुपये फेर दिये और जो किशोरी ने कहा था वही समधी से कहला भेजा।

मथुरादास तो अपने घर को चले गये और उसी दिन एक चिट्ठी गंगा की किशोरी के पास आई-

चिट्ठी

मेरी प्यारी किशोरी सदातुम को भगवान

संतोष दे

राम राम के पीछे मालूम हो कि कल चाचा की चिट्ठी मेरे पास आई। उससे ठाकुर प्रसाद के परलोक सिधारने का हाल जाना। हाय यह कैसी विपत् मेरी बहन पर पड़ी न जाने कौन से जन्म के पाप उदय हुए कि तुम जैसी को भगवान ने यह दिन दिखाया चिट्ठी के पढ़ते ही मेरी आँखों के आगे अंधेरा हो गया और कुछ सुध न रही और काटो तो बदन में लहू न था। फिर जब कुछ सुध आई तो बावलों की तरह कहती कुछ थी और मुँह से निकलता कुछ था। कभी फूट फूट कर रोने लगती कभी बुत बन जाती। जब मेरा यह हाल हुआ तो भगवान जाने तुम्हारा क्या हाल हुआ होगा। पर जब ढाढ़स बाँध कर जी को थाँमा और आपे को सँभाला तो सोची कि यह संसार असार है और केवल स्वप्न मात्र है। मुझको तो आठ दिन से व्याप गई थी कि कोई विपत् भारी आने वाली है क्योंकि जी पर उदासी छा गई थी और

किसी काम में जी नहीं लगता था सो वही हुआ -

मेरी प्यारी बहन तुम अच्छी तरह जानती हो कि संसार में जीवन मरण यह सबके साथ लगा हुआ है। तुमको याद होगा कि हमने एक किताब में पढ़ा था कि सारे जगत् में एक पल में चौबीस वा एक घड़ी में १४४० आदमी मरते हैं और इतने ही उत्पन्न होते हैं - अब फैलाओ कि रात दिन में साठ घड़ियाँ होती हैं। इसलिये एक दिन में ८६,४०० मरते हैं और उत्पन्न होते होंगे - मेरी बहन मरना जीना तो सबके साथ है इसलिये मौत सबके लिये आवश्यक बात है। चाहे अमीर हो चाहे कंगाल - राजा हो चाहे भिखारी यह किसी को नहीं छोड़ती - बड़े बड़े हकीम वैद्य जो औरों का इलाज करते हैं वह भी उसके पंजे से नहीं बचते। संसार में जो उत्पन्न हुआ है वह एक दिन न एक दिन अवश्य मरेगा। फिर जो हम वा हमारे कुटुंब वा नातेदारों में से कोई मर जावे तो क्या अचंभे की बात है और उसका दुःख और शोक क्या - हाँ केवल अपने दुःख का शोक होता है - जिस्से अपने लाभ और सुख चैन की अधिक आस होती है। उसीका अधिक शोक होता है -

हिन्दुओं में चाल है कि बूढ़े के मरने की खुशी और जवान और बालक के मरने का दुःख मानते हैं। इसका कारण यही है कि बूढ़े से लाभ की आस जाती रहती है और जवान और बालक से आगे सुख मिलने की आस रहती है। सो जो ठाकुर प्रसाद अपनी उमर पाकर मरते और कुछ अपनी निशानी छोड़ जाते तो कुछ ऐसे शोक और दुःख की बात न थी। बड़ा भारी दुःख तो यही है कि उन्होंने कम उमर में मौत पाई कि जिस्से सारा जीवन तुम्हारा बिगड़ गया। इस कमबख्त हैजे ने तुमको खाक में मिलाया और मेरे कलेजे में घाव कर दिया। अबके बरस आगरे में भी बड़े बड़े जवानों को लिया जिनका हाल सुन सुन कर छाती फटती है - मेरी बहन इस आगरे में भी इस बीमारी से तुम जैसी कई हो बैठीं। कई बिचारियों का तो गौना भी न हुआ था और एक के ब्याह को तो अभी एक महीना भी नहीं हुआ था। पर क्या कीजिये - जिसमें आदमी का बस नहीं उसमें संतोष के सिवा और क्या बसाती है। तुम पर तो दोहरी भगवान् की मार पड़ी जो तुम्हारा सुसरा भी जीता रहता तो रोटियों का आसरा तो बचता घर में मर्द के रहने से ढाढ़स बंधा रहता है और लोग भी अपने को तुच्छ नहीं गिन्ते अब भगवान् से यही अरदास माँगो कि थोड़े दिनों तुम्हारी सास बैठी रहें। उनके जीते जी तुमसे यह कोई नहीं कह सक्ता कि तुम्हारे मुँह में कै दाँत हैं - जिस भगवान् ने बिगाड़ी वही पार लगा देगा। भगवान् लाज और प्रतिष्ठा से तुम्हारी उमर तेर कर दे - रोटि तो तुम्हें और तुम्हारे कुत्तों को बहुतेरी हैं - प्रथम तो चाचा ही तुमको वहाँ रहने न देंगे दूसरे दस पंधरह रुपये, महीना भी उनको देना कुछ कठिन नहीं - इसके सिवा तुम्हारे बहनोई को भी भगवान् ने सब कुछ दे रक्खा है। वह भी तुम्हारी सहायता करने को मौजूद हैं - अब तुमको चाहिये कि ज्ञानो पंडितानी का सा व्यवहार वर्तो यह तो तुम भी जानती ही हो कि पंडितानी जी की भी इसी उमर में बिगड़ी थी फिर उन्होंने अपनी उमर कैसी अच्छी तरह से काटी। अपने तन मन को भगवान् ही के ध्यान में लगा दिया। अब उनकी उमर पचास बरस से भी ऊँची हो गई। किसीने उसे आज तक आधी बात न कही - अब अपने जी को ढाढ़स बाँध कर अपनी सास का जी थामती रहो - तुम पढ़ी लिखी और आप समझदार हो तुम्हारे लिये थोड़ा लिखना बहुत है। इस चिट्ठी का उत्तर बहुत जल्दी भेजना और जब खर्च की ज़रूरत हुआ करे तो उसके मँगवाने में कुछ सोच विचार न करना। तुरत मुझको लिखना क्या चाहिये यहाँ से उसी समय भेज दिया जाया करेगा।।

किशोरी अपनी बहन की चिट्ठी पढ़कर रोने लगी और उसीसमय उसका उत्तर लिखा।।

उत्तर

संतोष दिलाने वाली मेरी गंगा जीजी भगवान् तुमको सदा मुझ पर दयावान् रखे राम राम के पीछे प्रयोजन लिखती हूँ कि आज तुम्हारी चिट्ठी उपदेश से भरी हुई ढाढ़स बाँधाने वाली ऐन शोक में मेरे पास पहुँची - उसके पढ़ने से जी को कुछ कुछ संतोष आया - यह तो मैं भी खूब जानती हूँ कि भगवान् की मर्जी में न कुछ चारा और न रोने पीटने से कुछ लाभ। पर जी को क्या करूँ। वह अपने बस में नहीं बहुत ढाढ़स बाँधती हूँ पर बाँधता नहीं - थोड़े दिनों में आप ही आप थोड़ा थोड़ा संतोष आ जायगा और ढाढ़स बाँध जायगा - आदमी मोम से ज़ियादह नर्म और पत्थर से ज़ियादह सख्त है जो उस्पर पड़ती है वह सहता है और जैसी बीतती है वैसी बिताता है और मैंने तो अपने जी को बहुत सख्त कर लिया और छाती पर पत्थर धर लिया। तब तो सब क्रिया कर्म उनका अपने हाथ ही से किया और जो जी को पत्थर न करती और छाती पर पत्थर न धरती और सारे दिन रोने पीटने में लगी रहती तो उनकी मिट्टी भी न सँभलती - मा जी का यह हाल है कि उनको सारे दिन रोने के सिवा और कुछ काम नहीं - मेरी बहन यह तुम्हारा लिखना बहुत ठीक है कि कोई किसी के लिये नहीं रोता सब अपने सुख के लिये रोते हैं - हिन्दुओं की ऊँची जातों में पति से अधिक और किसी के मरने का शोक नहीं होता क्योंकि इन जातों में सब राज पाट स्त्री का उसी एक पर है सो मेरी तो एक पहाड़ उमर पड़ी है देखिये भगवान् कैसे बेड़ा पार लगायेगा - आदमी का मनचीता कुछ नहीं होता जो वह चाहता है सो करता है। अब तो भगवान् से अपनी यही प्रार्थना है कि मुझको भी उठा ले - अब तो तुम्ही सबका भरोसा है जब खर्च चाहियेगा मैं तुमको लिखूँगी - चाचा यहाँ आए थे और तेरहवीं तक रहे। चलते हुए मुझको अपने साथ लिये जाते थे पर मैं एक तो सास के लिये दूसरी बरसी तक घर पर रहना चाहिये नहीं गई - वह मुझको सौ रुपये भी खर्च के लिये देते थे। सो मेरी सास ने नहीं लिये और यह कह दिया कि अभी कुछ ज़रूरत नहीं है। जब ज़रूरत होगी तब मँगवा लेंगे।।

जो कोई इन बेचारियों की दशा को देखता हाथ मलता और जो सुन्ता वह रो देता - सारे मुहल्ले और नाते रिश्ते की औरतें इन बेचारियों के पास उनके जी बहलाने को आ बैठा करती थीं। इसलिये यह भी रोटी पानी करने खाने के सिवा और कोई काम घर का न करतीं और सारे दिन औरतों के आगे अपना रोना रोतीं - किशोरी की सास को ललता प्रसाद के मरने का तो दुःख हुआ ही था पर अपने लड़के ठाकुर प्रसाद के मरने का बहुत शोक हुआ। दो दो दिन शोक के मारे न खाती - पर किशोरी बड़ी बुद्धिमान् और पढ़ी लिखी लड़की थी वह अपने जी को ढाढ़स बाँधे रहती और सास को भी दिन रात समझाया करती और उनको सौगंदे दिलाकर खिलाया करती और आप भी जो मन भाता खा लेती।।

ठाकुरप्रसाद के मरने के तीन महीने के पीछे किशोरी के लड़का हुआ। तब किशोरी और उसकी सास ने अपने जी में भगवान् को ध्यान किया और कहा कि जो यह बालक जी जाएगा तो आगे को नाम चला जायगा पर ऊपर से कुछ खुशी लड़के के उत्पन्न होने की नहीं की और न कोई टेहला छटी दशूठन आदि किया और यह कहा कि जब पाँच सात वर्ष का होगा तब देखा जायगा। यहाँ तक कि किशोरी की सास ने उसके बाप के यहाँ लड़का होने की खबर करवाई और कहलवा भेजा कि हम अभी तालवा छूछक नहीं लेंगे और गंगा को खबर तक भी न की। पर गंगा को मथुरादास की चिट्ठी से लड़के होने की खबर हो गई और उसने नाई के हाथ तालवा भी भेजा और एक चिट्ठी किशोरी की सास के नाम लिखी।।

चिट्ठी

बड़ों की बड़ी मौसी जी भगवान् तुम्हारी सदा मुझ पर और मेरी प्यारी बहन पर दया रखे - राम राम के पीछे समाचार यह है कि मुझको चाचा की चिट्ठी से मालूम हुआ कि प्यारी किशोरी के लड़का हुआ। मुझको ऐसी खुशी हुई कि उसको कुछ कह नहीं सकती - पछतावा ही रह गया कि आज को मौसा जी और ठाकुर प्रसाद नहीं जो वह आज को जीते होते तो कैसी कुछ खुशी न होती। अब भगवान से यह अर्दास है कि ईश्वर उसकी उमर लगावे जिस्से तुम्हारा जी बहला रहे और आगे को कुल का नाम चले - मुझको इस बात का बड़ा अर्मान है कि मेरी प्यारी बहन ने तो शर्म के मारे नहीं लिखा पर तुमने भी मुझको इस खुशी की खबर न की। क्या तुमने मुझको गैर समझा अब जो कुछ मैं नाई के हाथ भेजती हूँ कृपा कर्के रखलेना और सदा लड़के की कुशल क्षेम के समाचार भेजती रहना और यह भी लिखना कि नाम लड़के का क्या रक्खा गया।।

नीचे लिखी चीज़ें भेजी जाती हैं

सोने के कड़ों की जोड़ी - चाँदी के कड़ों की जोड़ी

हँसली और तगड़ी चाँदी की - पहुँची सोने की -

५ सेर मेवा और कुरता टोपी

हाँ, मेरी बहन किशोरी आप ही पढ़ी लिखी है और चतुर है और इसके सिवा उसने कुछ वैदक भी पढ़ी है पर तब भी बालक है बिचारी बालकों के पालन की सार क्या जाने तुम उसके खाने पीने की होशयारी रखना कोई ऐसी चीज़ न खाय जिस्से बालक को अजीर्ण हो बहुत सा स्नान ध्यान भी न करे जिस्से बालक को सरदी हो जाय और जब जाड़े के दिन आवें लड़के के टीका ज़रूर लगवा देना और कुछ वहम न करना और सब कुशल है।

उत्तर

प्यारी बीवी गंगा भगवान् तुमको सदा प्रसन्न रखे। आशीस के पीछे समाचार यह है कि तुम्हारी चिट्ठी और चीज़ें जो तुमने नाई के हाथ भेजीं वह पहुँचीं - तुम कभी अपने जी में बुरा न माना कि मैंने तुमको लड़के के उत्पन्न होने की खबर नहीं की - भला तुम ही गैर होगी तो और कौन अपना होगा मैं तो तुमको तुम्हारी बहन से अधिक समझती हूँ। इस्का कारण यह था कि मैंने उसके पैदा होने का अभी तक कुछ उत्सव नहीं किया और न कोई टेहला छटी दशूठन आदि किया और यह सोचा कि जो तुम सबके पुन्यप्रताप से जी जायगा तो छठे बरस छटी और दसवें बरस दशूठन करूंगी और मैं यह भी चाहती थी कि अभी किसी के यहाँ की कुछ चीज़ न लूँ। तुम्हारे चाचा को भी कहला भेजा है कि अभी छूछक न लेवेंगे - जी में यह था कि जो चीज़ तुमने भेजी है वह भी फेर दी जाय जब तुम्हारे चाचा के यहाँ का छूछक लूँ तब तुम्हारे यहाँ का तालवा भी लूँ पर पास पड़ोस की औरतों ने यह कहा कि फेर देने में अपशकुन होगा इसलिये मैंने ले लिया - तुम्हारी बहन आप बड़ी चतुर है उसको समझाने की कुछ हाजत नहीं। मैं उसके चलन और व्यवहार से बहुत राज़ी हूँ। बिना मेरे पूछे फली तक नहीं फोड़ती मुझसे उसकी बड़ाई नहीं हो सकती जैसे मैंने तुम्हारी बड़ाई सुनी थी। वैसी वह भी निकली और क्यों नहीं किस घराने की तुम बेटियाँ हो। नारायण ऐसी लड़कियाँ सब किसी के दे अभी पाँच रुपये नाई को विदायगी के दिये हैं। जब दशूठन आदि होगा तब फिर देखा जायगा। नाम लड़के का दशूठन पर रक्खा जायगा। अभी तो जो जिस्के जी में आता है सो पुकार उठता है - तुम्हारी बहन तुमको राम राम कहती है।।

अब जो औरत घर में आती वह यही कहती कि भगवान इस लड़के को अच्छा रखे जी के

बदले जी है भगवान ने तुम राड़ों के जी बहलाने को खिलौना दिया है जो जीता रहेगा तो उसके धंधे में तुम्हारा दिन कट जायगा।

किशोरी और उसकी सास उस लड़के को पालने में बड़ा जत्न करतीं और सारे दिन उसका मुँह तकती रहतीं -

किशोरी के परहेज़ की यह दशा थी कि उस बिचारी ने अपनी जीभ काठ की करली - जब ललता प्रसाद और ठाकुर प्रसाद की बरसी हो गई और लड़का भी धरती पर बैठने लगा तब किशोरी ने अपने जी में सोचा कि अब कोई उपाय चार पैसे की आमदनी का करना चाहिये यों तो घर में बैठे-बैठे खाने से तो राजा भी खाली हो जाते हैं। सो यहाँ केवल पाँच सात सौ रुपये की सब विभूति थी उसमें से भी अब तक दो डेढ़ सौ रुपये उठ चुके हैं इसलिये एक दिन किशोरी ने अपनी सास से कहा कि तुम्हारे पास जवाहिरमल टोपीवाले की बहू आया करती हैं। उनसे यह पूछना कि जवाहिरमल लाला अपनी दूकान का काम आप बनाया करते हैं या कारीगरों से बनवाकर बेचते हैं और जो बनवाते हैं तो किस हिसाब से बनवाई देते हैं और क्या क्या चीज़ें उनकी दूकान पर बिकती हैं - सास ने कहा कि बहू तू पूछ कर क्या करेगी हमें क्या प्रयोजन जो किसी की दूकान या घर का हाल पूछें - किशोरी ने कहा कि मैं इसलिये पूछती हूँ कि जो जवाहिरमल अपनी दूकान का काम मज़दूरी देकर बनवाते हों तो थोड़ा बहुत काम मैं बना दिया करूँ। रुपये धेली रोज़ हाथ लग जाया करेगा - सास ने कहा कि बहू ऐसी क्या हमारी खाट कट गई है जो उस निगोड़े की मज़दूरी करने जायेंगे - जिस भगवान ने नीरा है सो तीरेगा अभी तो घर ही में चार पाँच सौ रुपये का असाबाब रक्खा है उससे निर्वाह करेंगे फिर तेरे चाचा कह गये हैं कि क्या वह कुछ सहायता न करेंगे दस पंधरह बरस की बात है कि भगवान ने चाहा तो यह लड़का कमाने लायक हो जायगा - किशोरी ने कहा - जब तक लड़का न कमाए तब तक क्या हम दूसरे के दरवाज़े पर भीक माँगेंगे। अपने हाथ से काम करना तो सबसे अच्छा है। यह तो राजा का काम है कि घर बैठे काम कर लिया और दो पैसे भी आ गए। आदमी कोई गुण इसीलिये सीखता है कि समय पर काम आवे देखो बहुत सी मुसलमानियाँ इसी दिल्ली में घर बैठी जिनको यह काम आता है करती हैं या नहीं मैं तो सुनती हूँ कि दिल्ली में तो गोटा किनारी मुसलमानियाँ ही बुना करती हैं - जब ख़सम पूत वाली यह काम करती हैं तो हमको करने में क्या ऐब हैं - भला कुछ आमदनी की सूरत न होगी तो यह उमर कैसे कटेगी अभी तो एक पहाड़ उमर काटनी पड़ी है - इस लड़के को किसने देखा है अपने ऐसे भाग कहाँ है जो इसकी कमाई खाने को मिलेगी और जो भगवान ने कर दिया और जी जायगा तो चार पैसे पास होंगे तो उसके पढ़ने लिखने का भी अच्छा बंदोबस्त हो सकेगा। नहीं तो यों ही कुपड़ फिरेगा और सुनो किसी के दिये पोत पूरा नहीं होता। भगवान् ही के दिये पोत पूरा होता है - हाँ यह मैं जानती हूँ कि दस पंधरह रुपये महीना मेरे चाचा ख़र्च के लिये भेजते रहेंगे पर जब तक आदमी अपने आप उद्यम कर सके तब तक क्यों किसी के सामने हाथ पसारे दूसरे से माँगना बहुत ही बुरा है। कहावत है कि चलना भला न कोस का लड़की भली न एक माँगना भला न बाप से जो हर राखे टेक - किशोरी का कहना उसकी सास की समझ में आ गया और उसने जवाहिर मल की बहू से पूछा कि तुम्हारी दूकान की टोपियाँ और और काम कौन बनाता है और उस काम की मज़दूरी क्यों कर दी जाती है। क्या ज़वाहिरमल आप बना कर बेचते हैं या किसी से मज़दूरी देकर बनवाते हैं। उसने कहा कि उनको तो सूई पकड़नी भी नहीं आती। सब काम मज़दूरी देकर बनवाते हैं। दो तीन कारीगर तो दूकान ही पर बैठे रहते हैं और भी जहाँ तहाँ कारीगरों के पास भेज देते हैं वहाँ से बनकर चला आता है। रुपये तोले की उसकी मज़दूरी खुली हुई है जो कारीगर

एक तोला कलाबत्तू टाँकता है उसको एक रुपया मज़दूरी का मिलता है। इसलिये उसकी मज़दूरी सवा रुपये तोले की है। तब किशोरी की सास ने कहा कि कुछ काम तुम यहाँ ले आया करो। मेरी बहू बना दिया करेगी पर इस बात की दूसरे को ख़बर न हो - जवाहिरमल की बहू ने कहा कि मुझको क्या पड़ी है जो दूसरे से कहने जाऊँगी और इसमें क्या कुछ डर है अच्छे अच्छे घराने की बहूबेटियाँ जो इस काम को जानती हैं करती हैं और यह नहीं कि कोई गरीब घर की करती हो। ऐसे ऐसे अमीर घरों की करती हैं। जिनको भगवान ने हज़ारों रुपये का आदमी बनाया है मैं कल कुछ ज़रूर मँगा दूँगी - जवाहिरमल की बहू ने दूसरे दिन पहिले दो टोपियाँ बनाने को लादी और नमूने की टोपियाँ भी किशोरी को दिखला दीं और कहा कि बहू ऐसी टोपियाँ बना दो। यह कलाबत्तू जो मैं तुमको दिये जाती हूँ तुला हुआ है जितना बच रहेगा उसका हिसाब हो जायगा। किशोरी ने उन दोनों टोपियों को तीन दिन में बना दिया और बचा हुआ कलाबत्तू फेर दिया। जवाहिरमल ने जब वह टोपियाँ देखीं तो बहुत खुश हुए क्योंकि ऐसी सुन्दर बनी हुई थीं कि वैसी किसी और कारीगर के हाथ की न थीं और जब बाकी कलाबत्तू को तोला तो मालूम हुआ कि और कारीगरों से तोले पीछे एक माशा कलाबत्तू भी कम लगा। दो ढाई आने का फायदा कलाबत्तू में हुआ। जवाहिरमल ने दो रुपये मज़दूरी के अपनी बहू के हाथ किशोरी के पास भेज दिये और कहला भेजा कि तुम्हारे हाथ की टोपियाँ सबसे अच्छी रहीं। अब तो किशोरी जवाहिरमल की दूकान का काम रोज करती। कभी दुपट्टा काढ़ती कभी टोपी बनाती। एक कहारी चौका बर्तन के लिये रख ली बाक्री सब धंधा घर का उसकी सास कर लेती और पोते को खिलाती रहती। अब तो किशोरी दस बारह आने रोज का काम कर लेती थी। कुछ गृहस्थी लंबी चौड़ी तो न थी। दस रुपये महीने में सास बहू दोनों अपना निर्वाह कर लेतीं और आठ दस रुपये महीना बचा लेतीं। जब पास पड़ोस की औरतों ने जाना कि ललता प्रसाद की बहू को सीना पिरोना और कलाबत्तू का काम बहुत अच्छा आता है तो सब ने अपनी-अपनी लड़कियों को उसके पास सीखने को भेजा हाँ किशोरी का लड़कियों के सिखाने में हर्ज़ होता। पर उसकी आँखों में लिहाज़ बहुत था। इसलिये किसी से उसने नाँह न की। होते होते दस पंधरह लड़कियाँ उसके पास सीखने को आने लगीं। सारे दिन उसके यहाँ एक चटसाल सी बैठी रहती थी। उन दिनों सास बहुओं का यह चलन व्यवहार था कि सवेरे की तोप बजे से उठतीं पहले न्हा धोकर पूजन पाट करतीं। फिर सास तो पोते के खिलाने या घर के धंधे में लग जाती और किशोरी मुहल्ले की लड़कियों को जो उसके पास आती थीं सीना पिरोना सिखाती और अपना काम भी करती जाती। इन दोनों सास बहुओं में ऐसा प्यार था कि एक दूसरे को देखे जीती थी जब कुछ लड़कियों को थोड़ा बहुत कलाबत्तू का काम आ गया तो किशोरी ने यह चतुराई की कि झूठा कलाबत्तू बाज़ार से मँगवाकर उन लड़कियों से झूठे कलाबत्तू की टोपियाँ बनवाती और जब सौ पचास टोपियाँ इकट्ठी हो जातीं तो दस पंधरह रुपये को बाज़ार में बिकवा लेती थी। इस तरह से पच्चीस तीस रुपये महीने की जीविका किशोरी ने कर ली। जब लड़का एक बरस का हो गया तब किशोरी ने उसके टीका लगवा दिया और जब ज़रा भी उनमना हो जाता तो झटपट उसका उपाय करती। जब यह पाँच बरस का हुआ तब एक दिन उसको बड़े ज़ोर से ज्वर आया और उसी ज्वर में तीसरे दिन शीतला दर्शी तब तो किशोरी और उसकी सास को बड़ा सोच हुआ किशोरी ने अपने जी में कहा कि मुझसे बड़ी भूल यह हुई कि मैंने दूसरे बरस टीका नहीं लगवाया। जो दूसरे बरस फिर टीका लगवा दिया जाता तो आज को शीतला न निकलती। अब किशोरी ने उस लड़के को एक अंधेरे मकान में रक्खा और रात को उस मकान में दीवा तक न जलाती और घर में कभी तरकारी आदि न छौंकती क्यों कि उजेला और छौंक की गंध इस रोग के लिये बड़ी हानिकारी है। जब

शीतला निकलने में लड़के ने बहुत दुःख पाया तब उसने उसको आधा अंजीर औ एक सौने का वरक खिला दिया कि जिस्से शीतला झट-पट निकल आई और इस लड़के को शीतला निकलने में बहुत कम दुःख हुआ। पर निकलने के पीछे यह हाल हुआ कि जो दाना ज़रा भरे वही बैठ जाय अच्छी तरह उभारा न लेवे - तब किशोरी बहुत घबराई और सास से कहा कि मा जी ढंग बहुत बुरा है। भगवान कुशल रखे - सास ने कहा कि अरी बहू तू जो चाहे सो करे - अपनी चतुराई के आगे दूसरे को गिन्ती ही नहीं। न तू ने किसी स्याने को बुलाने दिया और न किसी माली को हाथ देने के लिये बुलवाया। भला मैं तुमसे पूछती हूँ कि कौन देवी माता में दवा देता है सो तू ने कहीं अंजीर खिलाया कहीं सोने का वरक दिया। घर घर माता में दीवा सारी रात जलता रहता है सो तू ने घड़ी भर भी दीवा जलने न दिया तू तो अपनी हिकमत में ही मरी जाती है। अब भी किसी स्याने को बुलवा और झाँड़ फूँक करवा उसने कहा नहीं नहीं यह तो मैं कभी नहीं करूँगी। उजड़े स्याने दिवाने को तो अपने घर में पाँव न धरने दूँगी फिर किशोरी ने डाक्टर के पास आदमी भेजा और लड़के का सब हाल कहला भेजा और यह भी कहला भेजा कि कोई ऐसी दवा बताइये या दीजिये जिस्से शीतला अच्छी तरह से भर आवे और लड़के के घबराहट दूर हो। डाक्टर ने कहा कि दवा तो सैकड़ों हैं पर हिन्दू लोग शीतला की दवा नहीं करते और न वह करेंगी फिर मुझको - दवा देने से क्या - किशोरी ने फिर से कहला भेजा कि नहीं मैं ज़रूर उनका बताया हुआ इलाज़ करूँगी। मुझको दवा पर बड़ा भरोसा है। लड़के का अच्छा होना न होना तो भगवान के अधीन है। दवा करने का अरमान तो जी में नहीं रहेगा - तब डाक्टर ने दो पुड़ियाँ दीं और कहा कि यह तो ताज़े पानी में धोल कर पिलाई जाय। इस्से लड़के की बेचैनी जाती रहेगी और इस दूसरी पुड़िया को आग में डाल डाल कर बफारा दिया जावे। भगवान् की माया - कि दवा के पिलाते और वफारे के देते ही जो घबराहट लड़के को थी वह सब जाती रहा और सब शीलता के दाने अच्छी तरह से भर आए और भर कर ढल गई और पंधरह दिन में सूख कर सब दाल झड़ गई। लड़का भला चंगा हो गया। तब तो किशोरी की बन पड़ी और सास से कहने लगी कि देखा इलाज़ कैसी अच्छी चीज़ है। यह लोगों की कम समझी है कि जो इस रोग का इलाज़ नहीं करते जो रोग है उसका इलाज़ है पर फूटे भाग का कुछ इलाज़ नहीं। जो भगवान् को अच्छा करना था दवा ने गुण किया। मेरे चाचा कहते थे कि हापड़ में एक साहूकार के लड़के के शीतला निकली और बैठ गई जिस्से लड़के को घबराहट हुआ और लोग कहने लगे कि अब यह नहीं बचेगा। पर उस साहूकार ने डाक्टर का इलाज़ किया। दवा देते ही उभर आई और वह लड़का भला चंगा हो गया और भगवान रखे अब तो वह जवान है।। इस लड़के के अच्छे होने की किशोरी और उसकी सास ने बहुत खुशी की और जाना कि उसका दूसरा जन्म हुआ। किशोरी की बुद्धि और दृढ़ता को सराहिये कि बहुतेरा मुहल्ले की औरतें और बहुत कर्के उसकी सास ने कहा कि दवा मत कर और स्याने दिवानों को दिखलाओ। पर उसने किसी की न मानी अब तो वे ही औरतें जो उसको बुरा कहती थीं सब बड़ाई करने लगीं और कहने लगीं कि जो इस लड़के को वफारा न दिया जाता तो कभी न बचता। एक बोली कि मेरा लड़का सात बरस का इसी रोग में मरा जो मैं अभागी थी किसी हकीम का इलाज़ करती तो बच जाता - दूसरी बोली कि मेरी लड़की के जब शीतला निकली थी और उसका यही हाल हुआ था तो मैंने तो कहा भी कि किसी वैद हकीम को दिखलाओ। पर किसी ने दिखलाने न दिया और अंत को वह मर ही गई - तीसरी बोली अरी बहन पहिले इलाज़ कौन करता था इलाज़ तो अब निकला है - मर्द जो पढ़े लिखे हैं वह तो स्याने दिवानों को दिखलाने से इलाज़ को अच्छा जानते हैं पर हम कम समझ औरतें उनकी चलने नहीं देतीं। सच है कि पढ़े की चार आँखें। यह बहू पढ़ी लिखी थी। मर्दों की समझ पर चली और

अपना लड़का था दृढ़ता बाँधे बैठी रही समझ से इलाज किया। भगवान ने किया अच्छा हो गया। दूसरे के बालक के लिये कौन कह सके कि दवा कर कल को उलटी पड़े तो कौन अपना मुँह काला करे - किशोरी की सास को इन औरतों की यह बातें बुरी लगीं और अपने जी में कहा कि जिन के बालक इस रोग में मर गए हैं वह मेरे पोते के अच्छे होने को उगट रही हैं। वह क्रोध में आकर कहने लगी कि चलो बैठो तुम क्या बातें करती हो। क्या इस रोग से सब मर ही जाते हैं कोई अच्छा नहीं होता - बहू ने क्या चतुराई की हमारा भगवान क्या सो गया था- हम पर कैसी कैसी आपत् पहिले पड़ चुकी हैं एक खिलौना हम दोनों राँड़ों के जी बहलाने को था सो क्या उसको भी ले लेता - उसे अच्छे होने का तुम सब ने एक अचंभा कर लिया। फिर ऐसी बातें मेरे सामने न करना - उसके बोलते ही सब चुपकी हो गई और कहने लगीं कि अजी तुमने बुरा माना भगवान इसको अच्छा रखे। हमने तो तुम्हारी बहू की चतुराई की बड़ाई की थी। किशोरी की सास ने कहा कि मेरी बहू चतुर है तो अपने आप को और फूहड़ है तो अपने आपको तुमको क्या जो तुम मेरे पोते को साँस ली हो जब वह लड़का अच्छी तरह चलने फिरने लगा तब किशोरी की सास ने बहुत खुशी मनाई और सारे नाते रिश्ते में इस खुशी की मिठाई बाँटी और छठे बरस उसकी छटी और दसवें बरस उसका दशूठन किया - अब तक इस लड़के का कुछ नाम भी नहीं रक्खा था अब दशूठन पर उसका नाम हरप्रसाद रक्खा गया। मथुरादास ने दशूठन पर बड़ी धूमधाम से छूछक भेजा और मथुरादास यह चाहते थे कि किसी बहाने से किशोरी की सास के साथ कुछ सलूक करें सो अब उन्होंने छूछक के बहाने से चार पान सौ रुपये का माल और असबाव किशोरी के यहाँ भेजा और उसकी सास ने खुशी से उसको लिया।।

चार पाँच बरस तक किशोरी ने हरप्रसाद को आप नागरी और उर्दू पढ़ाई और हिसाब किताब सिखलाया। जब वह नागरी पढ़ने लिखने लगा और हिसाब में होशियार हो गया और कुछ उर्दू भी पढ़ने लिखने लगा तब किशोरी ने चाहा कि उसको अंग्रेज़ी पढ़ाऊँ पर उसकी सास ने कहा कि मैं तो इसको अंगरेज़ी कभी नहीं पढ़ाऊँगी। मदरसे के पढ़ने में मिहनत बहुत पड़ती है। इसका बाप ठाकुर प्रसाद रातों जागा करता था। इस बिचारे में इतने पराक्रम कहाँ है जो मदरसे की पढ़ाई के बोझ को उठायेगा। यह तो वैसे ही नित नया छुईमुई रहता है और दूसरे यह बात भी है जो यह अंगरेज़ी पढ़ जायगा तो जाने कहाँ का मारा कहाँ नौकर होगा और मैं अपने जीते जी इसको आँखों से ओट करना नहीं चाहती - किशोरी ने तो बहुत चाहा कि हरप्रसाद को खूब पढ़ाऊँ पर दादी के प्यार के मारे अधकचरा रह गया - हाँ हरप्रसाद बहुत कुछ पढ़ा लिखा न था पर वैसे बहुत चतुर था जो काम घर का होता वह जी से करता - बाज़ार से सौदा बड़ी चतुराई से लाता। लाला ज्वाला प्रसाद जो हरप्रसाद के नाते में चाचा लगते थे और गोटे किनारी की दूकान करते थे उन्होंने एक दिन हरप्रसाद की दादी से कहा कि हरप्रसाद सारे दिन घर में बैठा हुआ क्या किया करता है - जो मेरे साथ दूकान ही को चला करे तो वहाँ दस आदमियों की सूरत देखेगा और दस की बातें सुनेगा अधिक समझ आवेगी और जो दूकान का काम जान जायगा तो उसको भी दूकान करा देना - यह बात किशोरी और उसकी सास दोनों की समझ में आ गई और उसी दिन से हरप्रसाद ज्वाला प्रसाद के साथ उनकी दूकान पर जाने लगा और दूकान के लेन देन और हिसाब किताब में उनका हाथ बंटाने लगा - जब दो तीन बरस में दूकान का काम हरप्रसाद को अच्छा आ गया और इधर किशोरी के पास भी तीन हज़ार रुपये रोकड़ा हो गये तब किशोरी ने पहिले हर प्रसाद का ब्याह हज़ार रुपये लगाकर बड़ी धूमधाम से दिल्ली में किया और इस ब्याह में मथुरादास ने पान सौ रुपये का भात दिया और उसकी बहन गंगा के यहाँ से भी तीन सौ रुपये का भात आया जब ब्याह से निश्चंत हुई तब किशोरी ने दो हज़ार

रुपये लगाकर गोटे-किनारी की दूकान बीच बाज़ार में हर प्रसाद को करवा दी - गोटे किनारी के सिवा कलाबत्तू के काम का असबाव भी दूकान पर बिका करता - किशोरी आप टोपियाँ और दुपट्टे आदि कलाबत्तू के बना कर अपनी दूकान पर बिकरी के लिये भेज देती - साथ साथ लड़कियों और औरतों को किशोरी ने यह काम सिखाया था अब उन्हीं से अपनी दूकान का माल बनवाती और उनको वाजिबी मज़दूरी दिया करती - इन युक्तियों से दो तीन वर्ष के पीछे उस दूकान की दो ढाई सौ रुपये महीने की आमदनी हो गई - इस दूकान पर और सब दूकानों से माल अच्छा रहता था और हर प्रसाद की दूकानदारी भी सच्ची थी। इसलिये उसकी दूकान सारे शहर में नामी हो गई और ग्राहकों की भीड़ भाड़ रहने लगी - सारे शहर के लोग हरप्रसाद को जान गये - हरप्रसाद जहाँ जाते वहीं बड़ी आवभगत होती - जब दूकान पर ग्राहक बहुत आने लगे तब हरप्रसाद ने दो कारिन्दे लेन देन और हिसाब किताब के लिये नौकर रख लिये और आप गद्दी तकिये लगाए बैठे रहते या हाकिमों और रईसों के मिलने जुलने में दिन तेर करते - अब किशोरी और उसकी सास दान पुन्य भी बहुत करने लगीं - कई कुएँ सड़कों पर बनवाए। कई बार गो-शत दान किया अर्थात् एक सौ एक गौ पुन्य कीं - सच है कि भगवान् को दिन फेरते कुछ देर नहीं लगतीं - जब ललता प्रसाद और ठाकुर प्रसाद मरे थे तब उनके घर में क्या था सारे मुहल्ले के लोग यह कहते थे कि देखिये इन रांडों का निर्वाह कैसे होगा पर किशोरी को सराहिये कि अपनी समझ और गुण से कभी किसी की एक कौड़ी की उधार न खाई वरन् अपनी चतुराई से आज को अमीरी भुगती और फिर इस अमीरी में सारी उमर उसकी बीती। ललता प्रसाद को दिल्ली में कोई जान्ता भी न था अब उनके पोते हरप्रसाद ने ऐसा नाम बनाया कि दिल्ली के सभी क्या छोटा क्या बड़ा हर प्रसाद को जानने लगे और दिल्ली के रईसों में एक रईस गिने जाने लगे - हाकिम भी उनकी बहुत इज्जत करने लगे और सरकार की तर्फ से और रईसों की तरह उस शहर के म्यूनिसिपलकमिशनर नियत हुए - सच है कि रुपये की सब इज्जत करते हैं। सच कहा है कि कौड़ी के सब जहाँन में नक्रशों नगीन हैं।। कौड़ी नहीं तो कौड़ी के फिर तीन तीन हैं।।

पार्वती का हाल

जब पार्वती का विवाह हुआ था तब उसकी उमर नौ बरस की थी और उसके दूल्हे की उमर आठ बरस की होगी - पार्वती के सुसरे बिहारीलाल तो पार्वती के विवाह से पहिले ही मर गये थे। पर हाँ उनके चार लड़के थे जिनमें से मँझले बेटे पन्नालाल से पार्वती का विवाह हुआ था और सब से बड़े का नाम हज़ारीलाल था - बाप के मरने के पीछे लाला हज़ारीलाल ही सब कारबार करते थे। लाला बिहारी लाल मरने के वक्त पाँच हज़ार रुपये का लेन देन छोड़ गए थे। उनके मरने के पीछे भी वही लेन देन लाला हज़ारीलाल ने रक्खा और उसी के ब्याज़ से घर का निर्वाह होता था - बाहर लाला हज़ारीलाल की मति पर सब काम होता और घर में उनकी मा अर्थात् पार्वती की सास का कहना चलता था - पार्वती के विवाह के तीन बरस पीछे उसकी सुसराल से गौने की कहावत आई पर जमुनादास के पास अब क्या रक्खा था जिस्से गौने का सामान करते। बस यह सोच के कि कदाचित् बरस दो बरस में कोई सूरत नौकरी की निकल आये सो बरस दो बरस में गौना करने से नाँह की और कहला भेजा कि अभी लड़का लड़की बालक हैं गौने की क्या जल्दी है। हम पाँचवें बरस गौना करेंगे - जब पाँचवा बरस लगा तो फिर कहलावत गौने की आई पर अब भी जमुनादास के हाथ पल्ले कुछ न था जो दस रुपये महीना मथुरादास देते थे उसी में अपना निर्वाह करते थे - जमुनादास ने यह भी बहुत चाहा कि कहीं से सौ पचास रुपये उधार लिये जावे सो भला बिना जायदाद वाले को कौन उधार देता है और इसके सिवा जमुनादास लोगों में

फ़जूल ख़र्च प्रसिद्ध हो गये थे। इसलिये भी कोई साहूकार इनको नहीं पतियाता था तब लाचार होकर जमुनादास ने शर्माते शर्माते अपने भाई मथुरादास से कहा कि भाई इस वैशाख में पार्वती का गौना ज़रूर करना पड़ेगा। उसकी सुसराल वाले कभी न मानेंगे और तुम जानते हो कि मेरे पास एक कौड़ी का ठिकाना नहीं। इसका क्या विचार है - इस बात को मथुरादास ने अपने घर में कहा उनकी बहू ने कहा कि हाँ पार्वती का गौना तो अब के ज़रूर होगा - भला उनकी सुसराल वाले काहे को मानेंगे और अच्छा तो है स्यानी लड़की को कब तक घर बिठलाए रखेंगे और मैं यह भी जानती हूँ कि तुम्हारे भाई के पास एक कौड़ी का ठिकाना नहीं है जो मैं जिठानी की बातों पर जाऊँ तो जी नहीं चाहता कि उनके साथ कुछ सलूक किया जाय पर इसमें अपनी भी तो लाज है कुछ बाप और चाचा ग़ैर नहीं होते तुम न करोगे तो और कौन करेगा। अब जैसे बने पार्वती का गौना तो करना ही पड़ेगा पर मेरा कहा मानो तो जो कुछ तुम्हारे पास देने को हो वह अपने भाई को इकट्ठे दे दो उसे जैसा उनकी और हमारी जिठानी के जी में आवे कर दें - यह सलाह मथुरादास को बहुत पसंद आई और अपने भाई को सौ रुपये देकर कहा जैसे हो सके इन्हीं रुपयों में गौना कर दो - भाई आजकल मेरे पास भी रुपये की कमी हो रही है - जमुनादास गौने का सामान करने लगे और दूसरी तरफ़ भी गौने की सब तय्यारियाँ थीं पर किस्का गौना और किस्का कुछ भगवान ने तो कुछ और ही ठानी था - गौने से दस पंधरह दिन पहिले यह आपत् पड़ी कि पार्वती का दूल्हा (जो अब भी कुछ समझदार तो था ही नहीं केवल बारह तेरह बरस का था) अपने बराबर के लड़कों के साथ गंगा की नहर नहाने चला गया और नहर में यह सब लड़के एक सीढ़ी पर बैठकर नहाने लगे - जिस जगह पार्वती का दूल्हा पन्नालाल नहाता था वहाँ पर काई जमी हुई थी - जब पन्नालाल नहाधोकर सीढ़ी से उठना चाहता था कि अचानक उसका पाँव फिसल गया और नहर में गिरा - नहर में पानी तो बहुत न था पूरे आदमी की कमर से कुछ ऊपर आता था परंतु यह बालक था डुबकियाँ खाने और लीजो लीजो पुकारने लगा और लड़कों में इतनी सामर्थ्य कहाँ थी जो उसको निकालते वह बिचारा गोते खाता हुआ उसी नहर में बह गया। तब तो और लड़कों के पेट में पानी हो गया और अपने जी में बहुत डरे और सबने यह सलाह की कि घर चल कर यह बात किसी से मत कहो। नहीं तो हम सब पर बड़ी मार पड़ेगी। इसलिये सब लड़के चुपचाप अपने-अपने घर आ बैठे - दोपहर को रोटी खाने के लिये लाला हज़ारीलाल ने पन्नालाल को बहुत ढूँढ़ा भाला और ढूँढ़ते ढूँढ़ते साँझ हो गई। पर कहीं पता न लगा - तब उन सब लड़कों से जिनके साथ वह बहुत करके खेला करता था पूछा कि कहीं तुमने पन्नालाल को देखा है या तुम जानते हो कि वह कहाँ गया और किस्के साथ गया - सबने यही कहा कि साहिब आज हमने उसे नहीं देखा और न हम जानते हैं कि कहाँ गया। इतने में एक लड़के के मुँह से यह निकला कि सबेरे नहर पर नहाने के लिये जाते हुए तो मैं ने देखा। पर अकेला ही था कोई साथ न था - जब नहर पर ढूँढ़भाल कराई तो किनारे पर उसकी लोथ दूसरे दिन सबेरे मिली - लाला हज़ारीलाल उसकी लोथ को रोते पीटते घर लाए - यहाँ उसकी मा ने अपना सिर पत्थर से दे मारा और सब घर के रोने पीटने लगे - मेरठ में जमुनादास को ख़बर कराई। वहाँ भी जमुनादास और उनकी बहू और मथुरादास आदि ने वह सोग किया कि कहने से छाती फटती है और इसी बरस किशोरी का दूल्हा मरा था यह तो दोनों आपत् जमुनादास और मथुरादास पर ऐसी पड़ी कि सारा मुहल्ला आह-आह पुकारता था - पार्वती भी इस समय की चाल के अनुसार सुसराल में भेजी गई और वहाँ बीस दिन रह कर फिर अपने बाप के चली आई। अभी पार्वती को कुछ ऐसा होश न था जो कुछ सोच करती। केवल तेरह बरस की थी। इसके पीछे बहुतेरा हज़ारीलाल ने पार्वती को बुलाया पर उसके बाप ने न भेजा और कहला भेजा कि अब जब उसको

अच्छी तरह समझ आ जायगी और स्यानी होगी तो भेज देंगे। जब पार्वती की उमर अठारह बरस की हो गई और ससुराल से कई बार आदमी बुलाने को आया जमुनादास ने उसको उसके सासरे भेज दिया और यह जी में सोचा कि हमको तो भगवान ने कुछ नहीं दिया जो उसकी उमर तेर करेंगे जो वहाँ अपने देवर जेठों में रहेगी तो उसकी उमर कट जायगी और यह भी सोचा कि जिस रुपये से इसके देवर जेठ खाते कमाते हैं वह रुपया भी तो इसी के सुसरे की कमाई है और उसमें उसका भी तो साझा है पर पार्वती की मा ने पार्वती के बुरी तरह से कान भर दिये अर्थात् उसको यह समझा दिया कि जो तुझको वहाँ किसी तरह का दुःख हो वा कोई दुःख हो तो सबसे अलग हो जाना और अपने सुसरे की कमाई का हिस्सा बटवा लेना। अब तेरा क्या अकेला दम है एक बार करेगी दो वार खायेगी - पार्वती तो हठीली और मूर्ख थी ही वह भला देवर जेठों में क्या निर्वाह करने वाली थी दूसरे उसकी मा के कान भरने - कहावत है कि एक तो करेला दूसरे नीम चढ़ा - निदान उसने सासरे जाकर दो वर्ष भी निर्वाह न किया - एक बरस तो जैसे बना निर्वाह किया दूसरे बरस उसने वह बताव बर्ते कि बात बात पर सबको उलट कर उत्तर देती और जो कोई कुछ कहता तो रो देती और यह कहने लगती कि न भगवान् मुझको ऐसा करता न तुम्हारी सहनी पड़ती - और लाला हज़ारीलाल और उनके भाई उसकी खातिरदारी करते और जिस गहने या कपड़े के लिये कहती अपने वित्त समान बनवा देते परंतु तिसपर भी उसकी त्योंरी चढ़ी रहती कभी कहती कि मैं तुलसी जी का विवाह करूंगी और कभी कहती कि मुझको एकादशी का उद्यापन करवा दो। निदान हर महीने में सौ पचास रुपये का खर्च बतला देती - घर में ऐसा क्या था जो सारी हठ उसकी पूरी होती - घरों में तो वैसे ही बहुत से खर्च होते हैं - न जाने कैसे बिचारे हज़ारीलाल घर चलाए जाते थे। एक आध बार तो पार्वती के कहने पर उन्होंने दस बीस रुपये खर्च कर दिये। फिर जब पास न हुआ तो नट गये - पार्वती को अलग होने का अवसर हाथ आया - बात बात पर यह कहने लगी कि क्या इस कमाई में मेरा साझा नहीं है - जिस रुपये से तुम सूद कमाते हो क्या वह रुपया मेरे सुसरे का नहीं है - भला तुम सब तो अपने लड़के बालों के विवाह शादियों में खर्च करोगे मैं किस मिष खर्च करूंगी जो पुन्य दान कर लूँ या खा पी लूँ वह मेरा है - अपने धर्म से मेरा साझा मुझे बाँट दो। अब मैं अलग रहूंगी और जो मेरे जी में आवेगा सो करूंगी। लाला हज़ारीलाल यह जानते थे कि इसके अलग रहने से लोग हमको बुरा कहेंगे। इसलिये टाल देते। पर परिणाम को लाचार होकर अलग कर दिया और हिसाब किया तो उसके साझे में सात सौ रुपये रोकड़ और तीन सौ रुपये का गहना आया - सो गहना तो पार्वती के पास ही था। रोकड़ के लिये हज़ारी लाल ने यह कहा कि सब रोकड़ रुपया व्यवहार में फैला हुआ है। उसका जो कुछ ब्याज़ आया करेगा तुम्हारे साझे का तुमको दे दिया जाया करेगा। उस आमदनी से तुम्हारा खर्चा चला जाया करेगा और रुपये का रुपया तुम्हारा बना रहेगा - उस मूर्ख की समझ में कब यह बात आती थी उसने कहा कि मुझको तुम्हारे व्यवहार से क्या मतलब और तुम को मेरे खर्च से क्या काम - मेरे भाग का रुपया मुझ को दे दो मैं अपने आप ब्याज़ वट्टा चलाऊँगी - उसकी सास ने भी उसको बहुत समझाया और कहा कि अरी बहू यह लेन-देन मर्दों ही से अच्छा चलता है। तू रुपया लेकर तितर-बितर करेगी और कुछ लाभ न आएगा - जो हज़ारी लाल के पास रुपया रहेगा तो रुपये का रुपया बना रहेगा और पाँच सात रुपये महीना तुझको पड़ता रहेगा - तेरे खाने पीने को बहुत है। पर उसने एक न मानी - हारकर हज़ारी लाल ने रुपये की उगाई करके सात सौ रुपये उसको दे दिये और कहा कि लो भाड़ में पड़ो और अपना सिर खाओ। अब तुमको मुझसे कुछ प्रयोजन नहीं - पार्वती इतने इकट्ठे रुपये देखकर फूली न समाई और सोची कि यह रुपया तो मुझको उमर भर खाने को बहुत है - जब ही दो सौ रुपये के

कर्नफूल और झुमके बनवाने के लिये सुनार को दे दिये - उसी मुहल्ले में एक ब्राह्मण की लड़की विधवा जिसका नाम रूपो था रहती थी वह उसके पास बहुत आया जाया करती थी - सारे दिन उसके पास बैठी रहती। होते-होते पार्वती और रूपो में ऐसा भनेला हो गया कि एक दूसरे को देखे जीती और बहन करके पुकारती - एक दिन पार्वती ने रूपो से कहा कि बहन मुझको अपने साझे के सात सौ रुपये मिले थे। उनमें से दो सौ रुपये का तो गहना बनवा लिया और पचास रुपये अब तक खाने पीने में उठे हैं। साढ़े चार सौ रुपये रहे हैं। यह भी यों ही उठ जायेंगे तुम मुहल्ले में सब घरों में आती जाती हो। जिस किसी को रुपये की ज़रूरत हुआ करे तो यहाँ से ले जाया करो थोड़ा बहुत ब्याज़ आने लगेगा - उसने कहा बहुत अच्छा। रुपये तो बहुत लोग उधार माँगा करते हैं। हाँ हथ उधार रुपया देने में ब्याज़ तो बहुत आवे है। पर रुपये के डूब जाने का डर रहता है और बहुत कर्के हम औरतों के लेन देन में - मेरे पास जो सौ पचास रुपये हैं उनके बदले गहना गिरवी रख लेती हूँ और जब माल पच्चीस का देख लेती हूँ तो बीस देती हूँ। किसी को हथ उधार नहीं देती। मेरी बहन थोड़ा खाना सुख से रहना जिस किसी को गरज होती है अपना माल रख जाती है और रुपये ले जाती है और जब मूल ब्याज़ दे गई अपना माल ले गई इसमें न किसी का झगड़ा और न किसी का टंटा सो यों ही तुम्हारे पास भी माल रखवा दिया करूंगी।

रूपो ने इस महीने में तीन सौरुपये का माल पार्वती के पास रुपये सैकड़ा ब्याज़ पर रखवा दिया और दस बीस रुपये हाथ उधार भी जान्ती जगह टका रुपये ब्याज पर दे आई। इससे तीन चार रुपये महीना ब्याज का पार्वती के पास आने लगा जिससे अच्छी तरह रोटियाँ चली जाती थीं। अब इस मुहल्ले में एक ऊपरी सी बिसातन सुरमा कंघी बेचने आने लगी और सुरमें कंघी के सिवा और बहुत चीज़ें मिस्सी मोती - शीशा आदि जिन को औरतें बहुत करके लिया करती हैं अपने पास रखती थी। पर यही पुकारा करती थी कि लो सुरमे कंघी - इसकी उमर पचास साठ बरस की - भोली-भोली सूरत और बातें ऐसी बनाती कि उसके सुन्ने को सबका जी चलता। इसलिये जिस घर में वह जाती उस घर की बहू बेटियाँ सौदा लेने के सिवा घड़ियों उसको अपने पास बिठलातीं और उसकी बातें सुन्तीं - कभी कोई कहानी कह देती - कभी झूठी सच्ची ख़बरें सुना देती - सारे मुहल्ले की बहू बेटियाँ उसे मुगलानी जी कहा करतीं और सबके सामने अपनी कहानी यों कहती कि मैं बड़े अमीर घर की बेटि थी और जिस घर ब्याही थी वह भी बड़े अमीर थे और पचास आदमियों का कुनवा था - भाग की बात है कि न वह ठाट बाट रहे न वह कुनवा मैं एक राँड बेवा रह गई - तिस्पर भी धन्य परमेश्वर को था दो तीन दूकानें इसी शहर में मेरी थीं। उनके किराये से अपना निर्वाह अच्छी तरह से हुए जाता था - किसी की कनौड़ी न थी अपना पकाना अपना खाना और ईश्वर का स्मरण करना - कभी किसी के सामने हाथ नहीं फैलाया उलटा औरों को बना तो चार पैसे देती रही न उजड़ा ग़दर होता और न मुझ पर यह आपत् पड़ती - ग़दर के पीछे बागियों के मकानों के साथ मेरी दुकाने भी सर्कार ने ज़ब्त कर लीं और कुछ पूछताछ न की। अब मैंने अर्जी दी है। ईश्वर चाहे तो छूट जावेंगी - तब तक कोई सूरत निर्वाह की न देखी। हार कर यह पेशा करने लगी और समझी कि हाथ पैर चलते किसी के सामने हाथ पसारना बड़ी लाज की बात है। मिहनत मज़दूरी करके खाने में कोई बुराई नहीं। निदान यों ही बातें बना बना कर अपना सौदा बेच जाती और कभी बहू बेटियों से मर्दों की चोरी चोरी रुपये दो रुपये उधार भी ले जाती और रुपये पीछे चार पैसे ब्याज़ के दे जाती जो एक महीने में देने को कहती तो बीस ही दिन में दे जाती और ब्याज़ पूरे महीने का देती हौले-हौले उसने अपना ऐसा एतबार बढ़ाया कि बिना माल के जहाँ-तहाँ से दस बीस रुपये ले जाती और सदा जब को कह जाती उससे पहिले दे जाती और जो माल गिरवी रख जाती हो तो दो पैसे रुपये का

ब्याज़ दे जाती। जब उसका एतवार सब घरों में बढ़ गया तो उसने यह प्रसिद्ध किया कि अब मेरी दूकाने छूट गई जिस के दो चार रुपये थे सब के दे दिये और सब से यह कहने लगी कि न मैं अब यह पेशा करूंगी और न अब मुझको उधार लेने का काम पड़ेगा। हम मुसलमानों के यहाँ तो ब्याज़ खाना और देना दोनों हाराम हैं। पर क्या करूँ लाचारी को ब्याज़ देती हूँ हाँ जो तुम अपना रुपया उधार देना चाहोगी तो मैं अपने दूकानदारों को दिला दिया करूंगी। वह बहुधा उधार लिया करते हैं। लाला हज़ारी लाल के घर भी यह मुगलानी आया जाया करती थी और कई बार पार्वती से भी दस बीस रुपये ले गई और चार पैसे रुपये का ब्याज़ दे गई और पार्वती की दुरानी जिठनियों ने भी मदों की चोरी चोरी ब्याज़ के लालच में कुछ कुछ रुपये उसको दिये। अब तो उसने सारे मुहल्ले की औरतों को ऐसा लालच में फाँसा कि जहाँ जाती वहाँ की औरते उससे यह कहतीं कि मुगलानी जी जब तुम को रुपये की ज़रूरत हुआ करे तो हम ही से ले जाया करो। तुम क्या तुमसे लाभ हो जायगा पर वह सब से यही कह देती कि मुझ निगोड़ी को रुपये की क्या ज़रूरत पड़ी है। मैं तो यों ही आँखों की लाज के मारे चलती हूँ। इधर तुम सबसे बात की पच पड़ रही है। उधर बिचारे दुकानदारों का काम निकल जाता है यहाँ तो मुझे बस हाथ घिसाई है। एक दिन पार्वती ने मुगलानी से यह कहा कि मुगलानी जी मैंने अपने तीन सौ रुपये रुपये सैकड़े ब्याज़ पर दे रखे हैं और तुम माल पर टका रुपया और बिना माल के चार पैसे रुपया दिलाती हो। जो तुम मेरा सारा रुपया लगा देती वहाँ से अपना रुपया निकाल लूँ। उसने कहा कि सुनो बहू जी कि जिन लोगों को मैं रुपया दे आती हूँ वैसे तो वह सब ईमानदार हैं। पचास पचास रुपये तक इन्हीं हाथों दे ले आई। पर आदमी की नीयत बदलते देर नहीं लगती। इतना रुपया तो मैं किसी मुए को बिना माल के न दूँगी। हाँ जो कोई माल गिरवी रखना चाहेगा तो मैं ज़रूर तेरे पास गिरवी रखा दूँगी और इसमें भी ढाई तीन रुपये महीने का ब्याज़ तुमको पड़ जायगा। तू इतने अपना रुपया इकट्ठा कर रख। जब अवसर होगा तो पहिले तेरा रुपया चला दूँगी पीछे किसी और का। पार्वती ने रूपो से कहा कि बहन मुगलानी जी से मैंने कहा था उन्होंने हथ उधार दिलाने को तो नाँह की पर यह बात मुझसे कही कि किसी का माल गिरवी रखा दूँगी। इसमें ढाई तीन रुपये का ब्याज़ पड़ जायगा जो मुगलानी की दया हो जावेगी तो बैठे बिठाए दस बारह रुपये महीने की आमदनी हो जायगी जिसका माल तुमने गिरवी रखवा दिया है उसको फेर दो और अपना रुपया ले लो। रूपो ने कहा कि तुरंत घड़ी तो रुपया मिलना कठिन है। हाँ दस पाँच दिन में कह सुनकर रुपया ला दूँगी। निदान जिसका माल गिरवी रखवा था उसपर बहुत तक्राज़ा करके अपना रुपया मँगवा लिया और उसका माल भिजवा दिया। जब सब रुपया पार्वती के पास आ गया तो उसने मुगलानी से कहा कि लो मुगलानी जी रुपया तो मैंने मँगवा लिया अब इसको जल्दी से लगा देना तुम्हारा काम है। वह खफ़ा होकर बोली कि अरी बहू कुछ बावली हुई है क्या। तेरे रुपये को मैं कहीं फेंक दूँ जब किसी को मुझ से ज़रूरत होगी वह अपने आप मेरे पास आवेगा। संतोष रख हौले-हौले सब लग जायगा और तुझसे तो मैंने सौगंध खाई है कि पहिले तेरा रुपया लगा दूँगी। फिर दूसरी का औरों का क्या है। खसम पूत वाली हैं उनको चार पैसे मिले तो क्या और न मिले तो क्या और तुझ रंड़िया का तो निर्वाह इसी पर है। क्या मैं तुमको नहीं जानती जो तू मुझसे बार-बार कहती है थोड़े दिनों के पीछे मुगलानी जी एक जोड़ी छड़े लाई और पार्वती से कहा कि ले बहू पचास रुपये को गिरवी रखले अधन्नी रुपये का ब्याज़ ठहरा लिया है पर बहू पहरना मत जो किसी को चीज़ घिस जाय या टूट फूट जाय तो यों ही झगड़ा हो। अब तो यह साठ रुपये भरे हैं उसने छड़े ले लिये और पचास रुपये मुगलानी जी को गिन दिये और थोड़े दिनों के पीछे एक सोने की पहुँची पचास रुपये भर की लाई और चालीस रुपये को पार्वती के पास गिरवी रख गई। रूपो ने

पार्वती से कहा कि तुम बे देखे भाले सब चीज़ यों ही गिरवी रख लेती हो। तुमको पहचान है कि छड़े चाँदी के हैं या राँग के और पहुँची सोने की है या पीतल की। पार्वती ने कहा कि बहन मुझको तो पहचान नहीं है। मैं तो मुगलानी जी के एतबार पर रुपये दे देती हूँ और झट छड़े और पहुँची निकाल कर रूपो के हाथ धरे और कहा कि तुम्हारे कहने से मेरे जी को भी वहम हो गया। लो जाओ और अभी सुनार को दिखलाओ जी का वहम निकल जाय। रूपो उन दोनों चीज़ों को अपने पड़ौस के ख़याली सुनार के पास ले गई। उसने उनको देखभाल और तोल ताल कर यह कहा कि छड़े ख़ालिस ईंट की चाँदी के साठ रुपये भर हैं और पहुँची भी पचास रुपये का माल है जो तुम बेचना चाहती हो तो साठ रुपये छड़ों के और पचास रुपये पहुँची के मुझसे ले जाओ। उसने कहा कि नहीं नहीं मैं तो यूँ ही दिखलाने लाई थी। और पार्वती से आकर कहा कि बहन मुगलानी बात को तो बड़ी सच्ची है जितने का वह माल बतला गई थी उतने ही का है और दोनों चीज़ों में से कोई खोटी नहीं है। पार्वती बोली अरी बहन जो दुनियाँ में सब बेईमान हो जावें तो असमान किस्के सत खड़ा रहे और मुगलानी को तो बरस दिन से मैं यहाँ आते देखती हूँ। कभी उसकी बात में रत्ती भर का फ़र्क नहीं पाया। उसकी बात तो पत्थर की लक़ीर है और लेन देन की तो ऐसी सच्ची है कि ऐसा कोई होगा कि जो महीने को कह जाती है तो बीस दिन में ला देती है। रूपो बोली फिर भी बहन अपना काम पक्का अच्छा होता है जो मैं दिखला लाई तो जी का भरम मिट गया।।

अब या तो मुगलानी दूसरे चौथे दिन आती थी या अब एक महीने तक न आई। एक महीने पीछे बीमारों की-सी सूरत बना कर एक दिन उस मुहल्ले में आई और पार्वती के पास भी आ निकली - पार्वती बोली अजी मुगलानी जी तुम कहाँ थीं। मैं तो तुम्हारी बड़ी बाट तक रही थी। तुमने तो मुझको भला भरोसा दिया - दूसरी जगह रुपये लगे हुए थे सो मैंने तुम्हारे भरोसे पर वहाँ से भी निकाल लिये। उसने कहा कि अरी बहू तू मेरी सूरत भी देखती है। मैं तो मरती मरती बची हूँ आठ दिन ऐसा बुखार रहा कि चारपाई पर से न उठी। अब मैं बड़े सोच में थी कि हमारी बहुत-सी बहू बेटियों का बहुत सा रुपया मेरे हाथों फँसा हुआ है। ऐसा न हो कि मेरी आँख बंद हो जाय और उनका रुपया डूब जाय। जिनके पास माल गिरवी है उनका तो कुछ सोच न था सो मैं अब सबका रुपया पटवाए देती हूँ आज भी सौ रुपये लाई थी - जिस जिस का देना था दे आई। सौ सवा सौ रोकड़ और देने हैं वह भी दस पाँच दिन में भुगतवा दूँगी और आगे को अब मैं किसी का रुपया नहीं ले जाऊँगी - पार्वती ने कहा अब तो अच्छी दिखाई देती हो। बीमारी का क्या है हो ही जाती है यह तो देह धरे का दंड है और मुझसे तो ऐसी रुखी रुखी बातें मत करो। मुझको तो तुम्हारा बड़ा भरोसा है। और दूसरे उमर कौन है जो मैं मर गई और किसी का रुपया रह गया तो यों ही मेरा जन्म बिगड़ा - शगन चंद गोटेवाला आज एक जोड़ी सोने के कड़े मेरे पास लाया था और कहता था इनको पान सौ रुपये को कहीं गिरवी रख दो। मैं दिल्ली जाकर माल लाऊँगा और जब बिक जायगा तो इन सहालगों के पीछे छुड़ा लूँगा और दो रुपये सैकड़े का ब्याज़ देता था। मैं तो कहीं रखना ही नहीं चाहती थी टालने के लिये उससे कह दिया कि तीन रुपये सैकड़े पर रक्खे जावेंगे। तब से वह चला गया पर वह मुआ क्या मेरा पीछा छोड़ेगा। फिर साँझ को आवेगा तुझे रखने हों तो ला दूँ - पार्वती ने कहा कि मुगलानी जी पान सौ तो मेरे पास नहीं हैं। सब साढ़े चार सौ रुपये मेरे पास थे उन्में से पचास रुपये और चालीस रुपये तो तुम ही ले गई अब साढ़े तीन सौ और होंगे। हाँ जो पहिले माल के रुपये ला दो तो साढ़े चार सौ हो जावेंगे और रहे पचास रुपये सो बहन रूपो कहीं से ला देगी। उसी समय रूपो भी वहीं बैठी थी। उससे पार्वती बोली कि क्यों बहन पचास रुपये तू ला

देगी। रूपो ने कहा कि अच्छा मुगलानी जी तुम कड़ों को दिखलाओ तो सही और ब्याज़ तो ठहराओ कि वह क्या देता है और कितना देता है और कितने दिनों में छुड़ावेगा बिना देखे भाले बात कैसे कही जाय क्या जाने वह कड़े कितने भारी हैं और कितने का माल है - मुगलानी रूपो की बातें सुन चुप की उठी घर को चली गई और कह गई कि अच्छा जो कड़े वह फिर लावेगा तो मैं यहाँ ले आऊँगी और जी में सोची कि यह बहू तो मूर्ख है पर बहन रूपो बड़ी चतुर है। उसके सामने दाल गलती नहीं दिखाई देती।।

एक दिन जब मुगलानी को यह ख़बर लगी कि रूपो गंगा न्हाने गढ़ मुक्तेश्वर गई है तो मुगलानी अवसर पाकर एक जोड़ी कड़ों की पार्वती के पास लाई और कहा कि ले बहू यह पान सौ रुपये की जोड़ी है। वह मुआ तो इन्हीं पर पान सौ रुपये माँगता है। पर मैं ने कहा कि भला पान सौ के माल पर पान सौ कौन देगा - साढ़े चार सौ रुपये देने कह आई हूँ और ढ़ाई रुपये सैकड़े का ब्याज़ भी कह आई हूँ और पहिले माल के रुपये तो अभी नहीं मिल सके पर जो तेरे पास रुपये नहीं तो मेरे पड़ौस में दीनानाथ बनिये की बेटी सौ रुपये का माल गिरवी रखना चाहती है। ला वह माल उसके पार गिरवी रख दूँ। नब्बे रुपये तेरे मूल के चाहियें और दस रुपये आज तक के ब्याज़ के हुए तेरा सौ रुपये का भरत हो जायगा। पार्वती ने कहा अच्छा रुपये देती हूँ। यह तो कहो कि तुम तो उसी दिन आने को कह गई थीं इतने दिनों कहाँ रहीं - उसने कहा कि बहू तू तो जानती है वह दूकानदार कौड़ी कौड़ी पर जान देता है और मैं यह चाहती हूँ कि जहाँ तक हो सके तुमको अधिक लाभ हो यह कड़े चार पाँच बार फेरे क्योंकि दो रुपये से अधिक ब्याज़ देता ही न था। जब और कहीं उसको रुपया नहीं मिला तो हार झकमार कर फिर मेरे पास आया और बड़ी खींचातानी से इतना ब्याज़ देना तय किया पर अब भी तो वह सवा दो रुपये का ब्याज़ कह रहा है। पर मैं कह आई हूँ कि ढ़ाई रुपये ब्याज़ पर जो रुपये मिलेंगे तो लाए देती हूँ। निदान पार्वती ने साढ़े तीन सौ रुपये रोकड़ और छड़े और सोने की पहुँची जो पहिले गिरवी रक्खी थी मुगलानी को दे दी और कड़ों की जोड़ी उससे लेकर हँसी खुशी संदूकचे में रख छोड़ी और मुगलानी से पूछने लगी कि अब सब क्या महीने ब्याज़ का हुआ। उसने कहा यह तो सीधा हिसाब है कि नौ रुपये तो दो रुपये के हिसाब से एक हुए और आठ आने के लेखे सवा दो एक हुए सवा ग्यारह रुपये चार आने महीने भर के ब्याज़ के हुए। सो मैं हर महीने तुमको दे जाया करूँगी। और यह कह कर वहाँ से चंपतु हुई - अब पार्वती भी जी में खुश होती थी और रूपो से कहती थी कि मुगलानी जी की दया से अब मुझको दस बारह रुपये महीने की आमदनी हो गई।

जब इस बात को तीन चार महीने हो गये और मुगलानी न कड़े छुड़ाने आई और न ब्याज़ के रुपये लाई वरन् आप भी फिर कभी आकर न झाँकी। तब पार्वती को सोच हुआ और रूपो से कहने लगी कि मुगलानी जी कह गई थीं कि मैं महीने के महीने ब्याज़ दे जाया करूँगी। सो ब्याज़ तो अलग रहा वह आप भी न आई। भगवान् जाने मुगलानी को क्या हुआ जो कहीं मर गई तो भला ब्याज़ के रुपये कौन देगा। रूपो ने कहा कि तुमने बड़ा सोच किया जिसका माल है वही ब्याज़ देगा और कौन देगा - तुमको याद नहीं रहा कि मुगलानी कहती थी कि यह कड़े शगुनचंद गोटे वाले के हैं। वह सहालगों पीछे छुड़ा लेगा। सो अब सहालग भी भुगत गये। उसकी दुकान पर आदमी भेजो और कहला भेजो कि या तो अपने कड़े छुटा ले या ब्याज़ के रुपये दे दे। माल में इतनी गुंजायश कहाँ है जो बहुत दिनों तक ब्याज़ चढ़ाया जावे - पार्वती ने कहा कि बहन मैं किस्को भेजूँ तुम्हीं अपने छोटे भाई को भेजना। रूपो ने पार्वती के कहने से अपने छोटे भाई गिरधारी को शगुनचंद गोटेवाले के पास भेजा - गिरधारी ने शगुनचंद से जाकर कहा कि वह जो तुमने कड़ों की जोड़ी मुगलानी के हाथ पान सौ रुपये को गिरवी रक्खी है उनका

अब तक न कुछ मूल है न ब्याज़ - सहालग बीते पर छुड़ाने को मुगलानी कह आई थी सो अब सहालग भी हो गई अब या तो तुम अपने कड़े छुड़ा लो या आज तक का ब्याज़ निबटा दो - शगुनचंद यह बात सुनकर हक्का बक्का हो गया और कहने लगा कि कैसे कड़े और कौन मुगलानी। मैंने कोई चीज़ किसी के हाथ गिरवी नहीं रक्खी - मुझे ऐसी क्या ज़रूरत पड़ी थी जो उधार लेता। भगवान् की दया से सौ पचास रुपये तो मैं ही औरों को उधार दे देता हूँ। तुम नाम भूल गये होंगे किसी और के होंगे और बताओ तो कौन-सी मुगलानी है - गिरधारी ने कहा कि वही नहीं जिसकी दूकान पर तुम बैठते हो। वह अपनी पाँच चार दूकानें बाज़ार में बतलाती थी और जब उसकी दूकानें जब्त हो गई थीं तब वह सुरमा कंधी बेचने लगी थी। शगुनचंद ने कहा कि राम राम कहो तुम कैसी बातें करते हो। यह दूकान तो लाला तुलसीधर तहसीलदार की है और इतने बड़े बाज़ार में तो कोई दूकान किसी मुगलानी की नहीं है - तब गिरधारी अपना सा मुँह लेकर घर आया और रूपो से कहा कि शगुनचंद तो कहता है कि मैंने कोई चीज़ गिरवी नहीं रक्खी और न वह मुगलानी को जानता है और तुम जो कहती थीं कि शगुनचंद मुगलानी की दूकान पर बैठता है। सो वह दूकान तो लाला तुलसीधर तहसीलदार की है।

गिरधारी ने और भी खोजखबर लेकर बताया कि मुगलानी ने ऐसी और भी बहुत सी मूर्ख औरतों को ठगा - जिस मकान में वह किराए पर रहती थी उसमें ताला डाल कर तीन महीने से कहीं चला गई है। मकान वाला आप सोच विचार में है कि किराया किससे लू जब लोगों ने सर्कार में ख़बर करके उसके मकान का ताला खोला तो उसमें एक चारपाई के सिवा और कुछ नहीं निकला। अब फिर हज़ारीलाल ने पार्वती से कहा कि हमारे साथ रहो और जैसे और सब खाते पहनते हैं तुम भी खाओ पहनो। पर वह तो सुस्त और चटोरी थी। भला उससे घर का काम क्यों होता और उसे कुनबे की रोटी क्यों अच्छी मालूम होती। वह साझे न हुई और अपना गहना पाता बेच बेच कर खाने उड़ाने लगी। कुछ गुण तो आता ही न था जिस्से टका कमाती वरन यहाँ तक फ़ूहड़ थी कि अपने कपड़े भी सिलाई देकर सिलाती थी। इसलिये पाँच छै बरस में सब माल और असबाब बेचकर खा गई और नाक कान से नंगी हो गई। जब कुछ खाने को पास न रहा तो अपने हिस्से का मकान भी बेच डाला और किराए के मकान में रहने लगी और जब वह रुपया भी ख़र्च हो गया और भूकी रहने लगी तो शरम को मार कर उन्हीं देवर जेठों की रोटियों पर आ पड़ी और फिर सारा जीतब व ऐसे दुःख से काटा कि कहने में नहीं आता है। अब पार्वती बहुत पछताती थी और मन में कहती थी कि जो आज मुझको किशोरी की तरह कुछ हुनर आता तो मैं देवर जेठों के हाथ की तर्फ़ क्यों देखती।।

शिक्षा

लड़को तुमको चाहिये कि इस पुस्तक के पढ़ने के पीछे उत्तम चाल सीखो - ख़र्च सदा देखभाल कर उठाओ। अनर्थक रुपया न लुटाओ क्योंकि सीधी डगर पर चलने और देखभाल कर ख़र्च उठाने से मनुष्य उमर भर प्रसन्न और निर्भय रहता है और निरर्थक धन लुटाने से पतित और तुच्छ हो जाता है। देखो मथुरादास ने अपने अच्छे चलन और ख़र्च की देखभाल से अपना जीवन कैसी अच्छी तरह से बिताया और सबके भले बने रहे और नाम पैदा किया। यह सारा विद्या का प्रभाव था। इसलिये तुमको चाहिये कि छुटपन में विद्या के सीखने में उद्योग करो। यह ऐसा पदार्थ है जो उससे काम लिया जावे तो वह उच्च पद को पहुँचाता है। योग्यता-प्रतिष्ठा संतोष-शूरवीरता-सच बोलना- दया भाव - उदारता - सुशीलता - आदि जितने अच्छे गुण हैं देता है और ईर्ष्या-द्वेष-छल-कठोरता-चोरी-दँभ-मिष-झूठ आदि जितने कुकर्म हैं मनुष्य के जी से दूर करता है इसी हेतु से जन्म सफल और परिणाम में ईश्वर से मिला

देता है जो मनुष्य अपनी डगर से न चलेगा और धन को वृथा उड़ावेगा। उसकी ऐसी ही दशा होगी जैसी कि जमुनादास की हुई किन्तु उनसे भी बुरा होगी कि जिन्होंने अंधा धुंध रुपया लुटाकर सब अपनी जायदाद मिट्टी में मिला दी और नौकरी से भी हाथ धो बैठे ओर अंत में सब माल असबाव घर का बेचकर कंगाल हो गये। हार कर अपने भाई मथुरादास के हाथ की तर्फ तकने लगे। लोगों को इनका एतबार न रहा। सारी प्रतिष्ठा ख़ाक में मिल गई और फिर सारा जीवन ऐसी विपत् से काटा कि पुस्तक पढ़ने से तुमने जाना होगा - इसलिये तुमको उनकी दशा देखकर डरना चाहिये और मथुरा दास की तरह अपने चाल चलन को संवारना चाहिये जिस्से तुम्हारा जीवन सुख चैन से कटे और परिणाम में कुशल हो - ऐ लड़कियो तुमको चाहिये कि तुम गंगा और किशोरी का-सा चाल चलन और विद्या गुण सीखो क्योंकि तुमने इस पुस्तक में पढ़ा होगा कि गंगा ने अपनी विद्या और गुण से घर का कैसा अच्छा प्रबंध किया और सासु सुसरे और अपने पति और नातेदारों को प्रसन्न रक्खा और अपनी बुद्धिमानी से कंगाल से अमीर बन गई - सब ने उसकी बड़ाई और प्रशंसा की - अपनी संतान को उचित रीति से पाला और पढ़ाया और किशोरी उसकी बहन ने विधवा और कंगाल होने पर भी केवल अपने गुण और चतुराई से घर को ऐसा चलाया कि जीते जी अपने नातेदारों किन्तु अपने बाप की भी एक कौड़ी की कनौड़ी नहीं हुई और किसी ने उससे इतनी बात तक भी नहीं कही कि तेरे मुँह में कै दाँत हैं और हज़ार रुपये लगाकर अपने लड़के का विवाह किया और दो हज़ार रुपये से उसे दूकान करा दी कि जिस्से उसकी गिन्ती रईसों और अमीरों में होने लगी और बड़े बड़े हाकिम उसकी बड़ी प्रशंसा करने लगे इसलिये जो तुम भी गंगा और किशोरी का सा चाल चलन सीखोगी तो वैसे ही तुम्हारा जीवन भी सुख से बीतेगा दुःख तुम्हारे पास को भी नहीं फटकेगा और जो कोई लड़की राधा और पार्वती का चाल चलन और हठ सीखेगी वह सदा दुःख और विपत् में फँसी रहेगी जैसे राधा अपनी मूर्खता से संतान के दुःख में फँसी रही। सदा उसका पति उससे क्रुद्ध रहा और संतान के दुःख में अँधा हो गया और पार्वती ने भी कि जिस्का चाल चलन राधा का सा था। सारी उमर दुःख में काटी - यद्यपि वह बचपन में विधवा हो गई थी पर सुसरे की जायदाद से हज़ार रुपये का माल उसको मिला पर उसने उसको अपनी मूर्खता से थोड़े ही दिनों में खो-खिंडा दिया और फिर सारी उमर दुःख भुगता औ अपने खोटे वचन से किसी की भली नहीं रही। इसलिये तुमको उन दोनों के चाल चलन पर कभी नहीं चलना चाहिये वरन् उनका हाल पढ़कर डरना चाहिये और उनके चाल चलन पर हाथ मलने चाहिये जिस्से तुम्हारा जीवन सुख से कटे और पार्वती की तरह तुमको पछताना न पड़े। लड़के लड़कियों के मा बापों को उचित है कि अपनी संतान से बचपन में ऐसा लाड़प्यार न करें कि जिस्से वह हठीले और चिड़ायँदे हो जावें और सारी उमर विपत् और दुःख में काटें जैसा कि जमुनादास और उसकी घरवाली ने निरर्थक लाड़ प्यार करके अपनी लड़कियों का स्वभाव बिगाड़ दिया। इससे वह आप और उनकी लड़कियाँ दोनों विपत् में पड़ें वरन अपने लड़के लड़कियों की शिक्षा और शासन मथुरादास और उनकी घरवाली की सी करनी चाहिये क्योंकि उसी शिक्षा के प्रभाव से उनकी दोनों लड़कियों ने सुख और भलाई के साथ इस जगत् को छोड़ा परिणाम की सामिग्री साथ ली।

अलमिति